।। श्रीरामजयम् ।।

।। श्रीधर्मसम्राट् विजयते ।।

।। श्रीनाभादासकृत श्रीभक्तमाल एवं श्रीप्रियादासकृत श्रीभक्तिरसबोधिनीटीका की संयुक्त पदानुक्रमणिका ।।

(सम्पादक - अंकुर नागपाल, दिल्ली)

(श्री)अग्रदास हरिभजन बिन	मू.४१	अगर अनुग गुन बरनते	मू.२०१	अति प्रचण्ड मारतण्ड सम तम	मू.१९३	अभू लगि जावो घर	प्रि.२९०	अहो हृषीकेश करौ मेरे	प्रि.२२७
(श्री)आसुधीर उद्योतकर	मू.९१	अगर कहैं त्रैलोक में हरि	मू.२००	अति विस्तार लियौ	प्रि.३०५	अभैराम एक रसहिं नेम	मू.११७	आँगन में नींब तापै	प्रि.१०६
(श्री)नन्ददास आनन्द निधि	मू.११०	अगस्त्य पुलस्त्य पुलह	मू.१६	अति सनमान कियौ ल्यायै	प्रि.५७७	अमल करी सब अवनि	मू.८२	आइ गयो काल मोह	प्रि.२४
(श्री)मदनमोहन सूरदास की	मू.१२६	अगिनि जरावौ लैकै	प्रि.६३४	अति ही गम्भीर मति	प्रि.२६८	अमित महागुन गोप्य सार	मू.१५६	आइ मिली आलिन में	प्रि.६३
(श्री)मोहन मिश्रित पदकमल	मू.१७४	अग्रदेव आज्ञा दई भक्तन	मू.४	अतिथि धर्म प्रतिपालि प्रगट	मू.१८५	अमूरति अरु रन्तिदेव	मू.१२	आई अपछरा छरिबे	प्रि.२८१
(श्री)रघुनाथ गुसाँईं गरुड	मू.७१	अचरज कहा यह बात	मू.७४	अननि भजन रसरीति पुष्ट	मू.१९८	अम्बरीष भक्त की जो	प्रि.३९	आई एक नटी गण	प्रि.३५२
(श्री)रसिकमुरारि उदार अति	मू.९५	अचरज दयो नयो	प्रि.११	अनन्तानन्द कबीर सुखा	मू.३६	अर्जुन और भीमसेन चलेई	प्रि.७९	आई कौन रीति वाकी	प्रि.४२४
(श्री)राधाचरण प्रधान हृदैं	मू.९०	अचरज देखि चख लगै	प्रि.१०४	अनन्य भजन दृढ करनि	मू.१३८	अर्जुन के गर्व भयो	प्रि.८८	आई जगदया लगि परयो	प्रि.१००
(श्री)राधारमन प्रसन्न सुनन	मू.४४	अचरज दोऊ नृप पास	प्रि.१५७	अनमिल बात कौन दीजियै	प्रि.१८१	अर्जुन ध्रुव अम्बरीष	मू.१५	आई दुबराई सुधि	प्रि.५५
(श्री)रामानुज की रीति प्रीति	मू.१४३	अचरज भयो तहँ एक	मू.६६	अनायास रघुपति प्रसन्न	मू.१९	अर्थ धर्म काम मोक्ष भक्ति	मू.१३१	आई फौज भारी सुधि	प्रि.६०१
(श्री)रूप सनातन भक्तिजल	मू.९३	अचरज भारी भयो	प्रि.३३४	अनुचर आज्ञा माँगि कह्यो	मू.५८	अर्थ विचित्र निमोल सबै	मू.१४०	आई रेत भूमि झूमि	प्रि.५६८
(श्री)वर्द्धमान गुरु वचन रति	मू.१४४	अचरज मानत जगत् में	मू.६२	अनुचर कौ उत्कर्ष स्याम	मू.२०१	अर्द्ध न जातैं पौन उलटि	मू.१८३	आई वह बेर लै कराही	प्रि.१३०
(श्री)वल्लभ जू के वंश में	मू.१३१	अच्युतकुल अनुराग प्रगट	मू.१२०	अनुरागी अक्रूर सदा उद्धव	मू.१५	अर्द्धचन्द्र षट्कोन मीन	मू.६	आई सुधि प्यारे की	प्रि.५४
(श्री)वल्लभ जू के वंश में	मू.१३२	अच्युतकुल जस बेर यक	मू.२१२	अन्तर प्रभु सौं प्रीति प्रगट रहै	मू.१९४	अप्यौ पद निर्वान सोक	मू.३८	आई सुनि बधू पाछैं	प्रि.१७८
(श्री)विट्ठलेश सुत सुहृद्	मू.८०	अच्युतकुल पन एकरस	मू.१५७	अन्तर शुद्ध सदाँ रहै रसिक	मू.१९५	अलग न इहि विधि रहै	मू.५७	आईं लगीं गाइवे कौं	प्रि.४४२
(श्री)सुरसुरानन्द सम्प्रदायदृढ	मू.१७२	अच्युतकुल ब्रह्मदास विश्राम	मू.१४७	अन्तरंग अनुचर हरि जू	मू.७	अलरक की कीरति में	प्रि.९३	आए नीलगिरिधाम रहे	प्रि.३१५
(श्री)हरिवंश गुसाँईं भजन	मू.९०	अच्युतकुल सेवैं सदा दासन	मू.१५१	अन्तरनिष्ठ नृपाल इक परम	मू.५७	अलि भगवान् राम सेवा	प्रि.३७६	आए भेष धारि लै	प्रि.२५५
(श्री)हरिवंश चरनबलचतुरभुज	मू.१२३	अच्युतकुल सौं दोष सुपनेहूँ	मू.१३६	अन्तरयामी नाम मेरो चेरो	प्रि.१८२	अल्ह ही के वंश	प्रि.५३७	आए सूर सागर सो	प्रि.३४६
अँग न समात सुता	प्रि.४४१	अजगर घूमि झूमि-झूमि	प्रि.१६७	अन्तरिक्ष अरु चमस	मू.१३	अल्हराम रावल कृपा आदि	मू.१३५	आगम जनाय दियौ चाहै	प्रि.५४०
अँगुरी मरोरि कही बडो	प्रि.२३७	अजर धर्म आचयौ लोक	मू.११९	अन्न जल देवे ही कौ	प्रि.६१३	अवतार विदित पूरब मही	मू.७२	आगम निगम पुरान सार	मू.१३४
अंक भरि लिये दौर	प्रि.३८०	अजामेल परसंग यह	मू.७	अन्न परचावैं दूध दही	प्रि.२४७	अवला शरीर साधन सबल ये	मू.१७०	आगम निगम पुरान सार	मू.१५९
अंकुश अम्बर कुलिश	मू.६	अजू मग चल्यो जात	प्रि.२३६	अपनौ विचारौ हियौ	प्रि.३०३	अवलोकत रहैं केलि सखी	मू.९१	आगमोक्त शिवसंहिता	मू.२७
अंग पहिराई सुखदाई	प्रि.३४३	अजू हम लायक न	प्रि.४५०	अब कै जो आवै फेर	प्रि.३६२	अशोक सद्रा आनन्द	मू.१९	आगे नृत्य करै दृग भरै	प्रि.४०४
अंगद परमानन्द दास जोगी	मू.१५१	अज्ञान ध्वांत अन्तहिं करन	मू.७८	अब न सुहाय कछू	प्रि.२८२	अश्वकमल बासुकी अजित	मू.२७	आगे पीछे बरनते जिनि	मू.२०५
अंगद बहिन लागै वाकी	प्रि.४६०	अति अनुराग घर सम्पति	प्रि.३२७	अब भक्तनि सुखदैन बहुरि	मू.१२९	अष्टकोन त्रैकोन इन्द्रधनु	मू.६	आगे सेवा पाक निसि	प्रि.५५२
अंगीकार की अवधि यह ज्यों	मू.१२६	अति अपमान कियो कियो	प्रि.१४९	अब लीला ललितादि बलित	मू.८८	अष्टकोन षटकोन औ	प्रि.१८	आगे ही विराजै कछू	प्रि.४७७
अंघ्री अम्बुज पांशु को	मू.११	अति आनन्द मन उमँगि सन्त	मू.१९६	अब लौ हूं प्रीति सुत	प्रि.३१०	अष्टपदी अभ्यास कै तेहिं	मू.४४	आगें जो निहारैं भक्तराज	प्रि.५८३
अंब अल्ह कौं नये प्रसिद्ध	मू.५४	अति उतकण्ठा देखि	प्रि.५४३	अब सोधे सब ग्रन्थ अर्थ	मू.७०	अष्टांगयोग तन त्यागियौ	मू.१८२	आचारज इक बात तोहिं	मू.५८
अक्रूर आदि ध्रुव भये	प्रि.६९	अति उदार दम्पति त्यागि	मू.६६	अबहीं जवाब दियौ	प्रि.४७४	असन वसन सनमान करत	मू.१९१	आचारज कही यों चढाओ	प्रि.१२६
अक्षर तनमय भयौ मदनमोहन	मू.१४५	अति उदार निस्तार सुजस	मू.८८	अभिलाष अधिक पूरन करन	मू.९९	असुर अजीज अनीति अगिनि	मू.१४१	आचारज को जामात बात	प्रि.११०
अक्षर मधुर और मधुर	प्रि.१५१	अति गम्भीर सुधीर मति	मू.१८८	अभिलाष उभै खैमाल का	मू.१२१	अहो पृथ्वीराज कही	प्रि.४८३	आचारज जामात की कथा	मू.३३
अक्षर मुधरताई अनुप्रास	प्रि.२	अति पछितात वह बात	प्रि.५७५	अभिलाष भक्त अंगद कौ	मू.११३	अहो रन्तिदेव नृप संत	प्रि.९४	आचारज हरिदास अतुल	मू.४८

आजु हरिबासर सो तासर प्रि.८५
आज्ञा अटल सुप्रगट सुभट मू.१९३
आज्ञा के अधीन चल्यौ प्रि.५३३
आज्ञा गुरु दई भोर प्रि.५८२
आज्ञा जोई दीजै सोई प्रि.५४८
आज्ञा तब देई प्रि.११
आज्ञा दई जाइबे की प्रि.२८८
आज्ञा पाइ अँचयो लै प्रि.३८९
आज्ञा पुनि देई यों प्रि.३४२
आज्ञा प्रभु दई जाहु प्रि.६९
आज्ञा प्रभु दई मत प्रि.१४९
आज्ञा प्रभु पाय पुनि प्रि.३५८
आज्ञा बार दोय चार प्रि.४८५
आज्ञा माँगि टोंड़े आये प्रि.२९४
आज्ञा मोकौं दई आप प्रि.४७८
आडौ बलियौ अँक महोच्छौ मू.१६६
आदि अन्त निर्वाह भक्तपद मू.१७७
आदि अन्त लौं मंगल मू.७
आधी निसि निकसी यों प्रि.५८६
आनन्दकन्द श्रीनन्द सुत मू.७६
आनि कहे आप पाये प्रि.१६०
आनि ठाढे किये काजी प्रि.२७७
आनि डारै गोनि बनजारनि प्रि.३९२
आनि परयो पाँय प्रभु प्रि.१३६
आनिकै बखान कियौ प्रि.३८५
आनिकै बैठायो पाकशाल प्रि.८१
आनिकै सुनाई भई बड़ी प्रि.५६१
आप बलदेव सदा वारुणी प्रि.३२९
आप ही विचारि सब प्रि.४५३
आपु काश्मीर सुनी प्रि.३३७
आपुहू पधारे उन बहु प्रि.२६७
आभरन नाम हरि प्रि.३
आमेर अछत कूरम कौ मू.११६
आय खुनसाय कही प्रि.३७
आय गई आश्रम में प्रि.३६
आय गये साधु सो प्रि.३७०
आय दरसन कियौ इष्ट प्रि.५७९
आय पयौ पांय पांय प्रि.४२०
आय पाँय लिये तुम प्रि.५१७
आय वहै करी परी ज्ञाति प्रि.३१३
आय समुझावैं बहु जुगति प्रि.४६०
आय सुख पाय पूछ्यौ प्रि.४५०
आयके सुनायौ सुख प्रि.३४६
आयकै उठाय दई देखी प्रि.५२९
आयकै ननन्द कहै गहै प्रि.४७५
आयकै प्रसाद पावै फेरि प्रि.२३०
आयकै विचार कियौ जानी प्रि.२२१
आयकै सुनाई सुधि-बुधि प्रि.४५४
आयुध-छत तन अनुग के मू.५३
आये आगे लैन आप प्रि.२८८
आये आज्ञा पाय धाम प्रि.२८४
आये आधी दूर सुधि प्रि.६२९
आये आपु गोद शीश प्रि.३८
आये ईश जानि दुखमानि प्रि.११५
आये और गाँव प्रि.२९०
आये गुरु घर देखि प्रि.१९८
आये गुरु घर सुनि प्रि.२२३
आये गृह त्यागि वृन्दावन प्रि.३६८
आये गृह सन्त तिन्हें प्रि.६२५
आये घर जीत साधु प्रि.२७९
आये घर त्यागि राग प्रि.३६५
आये घर माँझ तऊ प्रि.१८६
आये घर माँझ देखि प्रि.२७४
आये घर ल्याये पूछैं प्रि.२३४
आये घर संत पूछैं प्रि.४०५
आये घर सन्त तिया करति प्रि.५७२
आये चार चोबदार चलौ प्रि.४४३
आये चोबदार कहैं चलौ प्रि.५९६
आये जहां जाति पांति प्रि.३५१
आये देखि नाभाजू ने प्रि.१२३
आये देखि पारषद गयो प्रि.११३
आये दोऊ तिया पति प्रि.४०२
आये दोऊ बीनिबेको देखी प्रि.४०३
आये दौर पाँव लपटाय प्रि.४६९
आये नर चारि पांच प्रि.४०७
आये निज गाँव नाम प्रि.५०६
आये निज ग्राम वह प्रि.५७
आये निसि घर हरि प्रि.५९०
आये निसि चोर चोरी प्रि.५१३
आये निसि भये स्याम प्रि.४९८
आये नृपराजनि को देखि प्रि.७९
आये पहुँचाय दूर नैंन प्रि.४८२
आये पुर सन्त आइ प्रि.२०९
आये पुर साधु सीधो प्रि.२८२
आये प्रभु आप द्रव्य प्रि.२७३
आये प्रभु टहलुवा रूप प्रि.१८१
आये फिरि श्याम मास प्रि.२६३
आये बद्रीनाथ जू तें प्रि.६१८
आये बनिजारे लैन देख प्रि.११७
आये बहु गुनीजन नृत्य प्रि.५०७
आये बहु सन्त औ प्रि.४८४
आये बहु सन्त प्रीति प्रि.५६७
आये ब्रजवासी पैंठ वृषभ प्रि.२४६
आये मधुपुरी राजा राम प्रि.४९०
आये यों अनुज पास प्रि.३६३
आये यों छठीकरा में प्रि.३५०
आये रघुनाथ साथ लछिमन प्रि.५१०
आये राम प्यारे सब प्रि.२५४
आये वामदेव पाछैं पूछैं प्रि.१३३
आये वाही ठौर भौंर प्रि.२०४
आये वाही भाँति सभा प्रि.४४४
आये वृन्दावन मन माधुरी प्रि.५०२
आये वेई ठग माला प्रि.१५४
आये सब भृत्य भए प्रि.३३९
आये सब साधु सुनि प्रि.२८०
आये सारंगपानि शोकसागर मू.५५
आये सो खजानौ लैन प्रि.५००
आये हरि घर देखि प्रि.७३
आये हरिप्यारे चारो खूँट प्रि.५८१
आये हरिराम जू पै प्रि.३५५
आयो एक जन धाय प्रि.१०५
आयो कोऊ काल नरपति प्रि.३४०
आयो घर जानि कियो प्रि.६२
आयो चढि रंग बाँचि प्रि.५५२
आयो ढिंग पति बोलि प्रि.२०१
आयो तहाँ राजा एक प्रि.१५३
आयो न सरूप फेरि प्रि.२४१
आयो निशि मारिबेको प्रि.११८
आयो पिता नीच सुनि प्रि.६४
आयो बनिजारौ मोल प्रि.२९६
आयो भोर राना सेतबार प्रि.२२९
आयो रोष भारी तब प्रि.२०२
आयो वही दिन कर प्रि.४०७
आयो वाको पति द्वार प्रि.१७१
आयौ अन्तकाल जानि प्रि.६२९
आयौ एक चोर घर प्रि.५२९
आयौ एक दुष्ट पोट प्रि.६१८
आयौ कोऊ काल धन प्रि.५७६
आयौ कोऊ ताही समैं प्रि.६१६
आयौ कोऊ शिष्य होन प्रि.५१९
आयौ कोऊ संग ताही प्रि.५८७
आयौ गुरु गेह यों प्रि.५६४
आयौ निज पुर ढिंग प्रि.५५४
आयौ पति गौनो लैन प्रि.५८४
आयौ प्रभु देखिवे कौं प्रि.५०४
आयौ फिरि विप्र नेह प्रि.३०७
आयौ भेषधारी कोऊ प्रि.५५९
आयौ भोर भूप हाथ प्रि.४८१
आयौ मग गाँव भिक्षा प्रि.३९६
आयौ यों विचार अनुसार प्रि.४१३
आयौ राजसभा बहु प्रि.४७०
आयौ वन कोऊ भूप प्रि.५३५
आयौ वाही ठौर चलो प्रि.३०२
आयौ वाही राजा पास प्रि.४६८
आयौ वृन्दावन वनवासी प्रि.२४०
आयौ साधु विप्रधाम प्रि.३०६
आरज कौ उपदेश सुतौ मू.१२०
आरज गुन तन अमित भक्ति मू.१३३
आरत हरिगुण शील सम मू.१६५
आरूढ दसा ह्वै जगत् पर मू.६०
आवत अनन्त सन्त औसर प्रि.४०६
आवत अनेक साधु निपट प्रि.२१९
आवत अनेक साधु भावत प्रि.१८३
आवत कमाय जल प्याये प्रि.४२९
आवत न ढिग औ प्रि.२७८
आवत महोच्छौ मध्य प्रि.३९२
आवत मिलाप होय यही प्रि.३२४
आवत सुने हैं वन प्रि.३७
आवत ही कही मोहि प्रि.७२
आवत ही मग माँझ प्रि.५७९
आवत ही राजा देखि प्रि.४६
आवत ही लोटि गयो प्रि.२४९
आवत हो भोग महासुन्दर प्रि.४१४
आवन न पायों वाही प्रि.३१०
आवहिं दास अनेक उठि सु मू.१५३
आवै एक प्रेत मो प्रि.१९४
आवै कभू प्रेम हेम प्रि.३३१
आवै जौ प्रतीति कहौ प्रि.५१२
आवैं जब सन्त सुख प्रि.२९२
आवैं दरसनी लोग जुतनि प्रि.६१८
आवैं बहु सन्त सुख प्रि.४३४
आवैं बहु सन्त सेवा प्रि.४१७
आवैं हरिदास तिन्हैं देत प्रि.३८४
आवैं हरिप्यारे तिन्हें प्रि.५४६
आवैं हरिप्यारे साधुसेवा प्रि.५४७
आवो जिनि ध्यान करौ प्रि.१६३
आशय अगाध दोऊ भक्त प्रि.२१२
आशय सो गँभीर संतधीर प्रि.१२६
आशा पास उदारधी मू.१८
आशै अगाध दुहुँ भक्त मू.५१
आस पास वा बगर के जहँ मू.२१
आसकरन पूरन नृपति भीषम मू.१०२
आसकरन रिषिराज रूप मू.१५८
आस-पास कृषिकार खेत मू.६२
आसशय अधिक उदार रसन मू.१८६
आसाधर द्यौराजनीर सधना मू.९६
आस्य सो वदन नाम प्रि.१०७
इंदिरा पद्धति उदारधी सभा मू.३२
इक अक्षर उद्धरैं ब्रह्म मू.१२९
इच्छा भगवान् मुख्य गौन प्रि.२१९
इच्छा सो सफल श्याम प्रि.४००
इतनी जतावनी में भक्ति प्रि.६१०
इतनी विचारि भूख प्रि.४३०
इतने ही माँझ सुनी प्रि.३७
इतौ अपमान पानि प्रि.६०५

इन मंजन इस पान हृदय मू.३४
इनकी कृपा और पुनि मू.७
इनके पद बंदन किये मू.१
इनहीं के दास-दास प्रि.६३१
इनहीं को रूपधरि प्रि.२८०
इनहूं निहारि उठि मारि प्रि.४१३
इन्द्र औ अगिन गये प्रि.८६
इन्द्रनीलमनि रूप प्रगट प्रि.५४५
इन्हैं अब जान देवो प्रि.११२
इला पत्र मुख अनन्त अनन्त मू.२७
इलावर्त्त अधीस संकर्षन मू.२५
इष्ट को स्वरूप प्रि.२१
इहाँ उदर बाढै विथा औ मू.२०९
ईशता बखान करौ प्रि.३३१
ईश्वर अखैराज रायमल मू.११७
ईश्वरांश अवतार महि मू.४२
उअम्रि वरष पाँच प्रि.१२
उक्ति चोज अनुप्रास वरन मू.७३
उग्र तेज ऊदार सुघर मू.८५
उज्ज्वल वसन तन एकले प्रि.५८२
उठत सँवारे कहैं प्रि.३१
उठि चिक डारि तब प्रि.६०३
उठि बहुमान कियो दियों प्रि.१७६
उठे आप धोये पाँव प्रि.६२४
उठे जब मायने जनाय प्रि.३५०
उठ्यो चन्द्रहास जिहि पास प्रि.६४
उत श्रृंखल अज्ञान जिते मू.४२
उतनोई करैं जामैं तन प्रि.२७०
उतरिकै आय रोय पाँय प्रि.५८८
उत्कर्ष तिलक अरु दाम कौ मू.९२
उत्कर्ष सुनत सन्तनि कौं मू.२०२
उत्कल देश उडीसा नगर मू.७१
उत्तम भो लगाय मोर मरकट मू.९१
उत्सव में सुत दान कर्म मू.८४
उदधि सदा अक्षोभ सहज मू.१३२
उदासीनता अवधि कनक मू.१८५
उदै अस्त परवत गहिर मधि मू.१८३
उद्धव रघुनाथी चतुरोनगन मू.१४७
उद्धव रामरेनु परसराम गंगा मू.१४७
उनकी तौ बात बनि प्रि.१८६
उनकी भक्ति भजन को मू.२१२
उनको हजार सोहैं हमको प्रि.१४५
उनिकौं लै मान कियो प्रि.२७३
उपजत अन्न गांव आवै प्रि.३८८
उपजीवी इन नाम के मू.१४
उपजे बनिक कुल सेवें प्रि.१८०
उपट्यो प्रगट तन मन प्रि.६००
उपदेशे नृपसिंह रहत नित मू.७८
उपमा और न जगत् में मू.१२८
उभै सुवा सारौ कही प्रि.४६९
उर रंगभवन में राधिका प्रि.६३०
उरग अष्टकुल द्वारपाल मू.२७
उलटि राव भयो शिष्य मू.६३
उल्का सुभट सुषेन दरीमुख मू.२०
ऊँचे तें भयौ पात मू.११२
ऊपर किवार लगे परयो प्रि.१६७
ऊपर महंत कही अजू प्रि.३२३
ऊसर तें सर कियौ मू.१०८
ऋषिराज सोचि कह्यो नारि मू.५७
ए सात प्रगट विभु भजन मू.८०
एक एक बात में समात प्रि.३५८
एक ओर बैठ्यौ मीर प्रि.५६२
एक कहै डारौ मार प्रि.१५३
एक दिन गई ही प्रि.१८४
एक नृपसुता सुनि प्रि.४३
एक पै तमाचो दियौ प्रि.४२१
एक भूप भागौत की कथा मू.५६
एक मोको दीजै दान प्रि.९२
एक समै अध्वा चलत मू.६५
एक समै संकष्ट लेय मू.११३
एक है उपाय हाथ प्रि.२५१
एकन कें यह रीति नेम मू.९२
एकने रुपैया लिये प्रि.३७३
एकादशी व्रत की सचाई प्रि.८५
एतौ ब्रजवासी सब क्षीर प्रि.५६६
एतौ रूप सागर में प्रि.४३४
ऐंचि लियौ एक तामें प्रि.२२९
ऐंसे भूप नारि पति प्रि.२११
ऐतौ घर आये वे तो प्रि.४६३
ऐपै तजि देवो क्रियो देखि प्रि.१२०
ऐपै तनु नूनताई प्रि.३५
ऐसी करी सेवा जासों प्रि.२१३
ऐसी चाह होय मेरे प्रि.५२८
ऐसी भक्ति होइ जोपै प्रि.८७
ऐसे आय परीं गनी प्रि.२९४
ऐसे कुल उत्पन्न भयौ मू.१०८
ऐसे दिन तीन आज्ञा प्रि.५२१
ऐसे नरनारी जिते तिनही मू.१०
ऐसे प्रभु भाव पगे प्रि.२१
ऐसे प्रभु लीन नहीं काल प्रि.१२२
ऐसे बार दोय चारि प्रि.२४६
ऐसे में अकाल पयौ प्रि.४२२
ऐसे ये उदार राह प्रि.४९०
ऐसे लोक अनेक ऐंचि मू.१७३
ऐसे शिष्य किये माला प्रि.४९३
ऐसे ही कटायो बार तीनि प्रि.१२२
ऐसे ही करत मास तेरह प्रि.१८३
ऐसे ही करत वृन्दावन प्रि.१७४
ऐसे ही कुलिश प्रि.१५
ऐसे ही बरस एक प्रि.२२५
ऐसे ही बहुत दाम प्रि.४२८
ऐसे ही बहुत दिन प्रि.३५
ऐसे हैं दयाल दुःख देत प्रि.३२०
ऐसै पुत्र आदि आये साँचे प्रि.१०५
ऐसैं दिन बीते दोय प्रि.१३२
ऐसो हरिदासपुर आस पास प्रि.७७
ऐसौ एक आप कहि प्रि.१६०
ऐसौ तुम कहौ जामें प्रि.७८
ओड़छै कौ भूप भक्तरूप प्रि.४८८
ओत-प्रोत अनुराग प्रीति मू.२०१
औचकहीं घर माँझ साँझ प्रि.१३८
और एक न्यारी रीति प्रि.३३१
और एक भाई तानै प्रि.२२५
और और ठौर फिरि प्रि.२३८
और दिन न्हान गये प्रि.२९७
और भूप कोउ छ्वै सकै मू.११९
और युगन तें कमलनयन मू.५५
और सब सन्तनि प्रि.४२८
औरौ अनुग उदार खेम खीची मू.१५०
औरौ शिष्य प्रशिष्य एक मू.३६
औली परमानन्द कै ध्वजा मू.१६९
औषधी पिसाये अंग अंगनि प्रि.२१७
कछुक उपाय कीजै प्रि.५४४
कटि गई एड़ी एपै प्रि.६०२
कट्यो कर चले हरिरंग प्रि.३९७
कठिन काल कलियुग्ग में मू.१६०
कठिन मोह कौ फन्द तरकि मू.१८२
कण्ठी धरि आवै कोय प्रि.४८८
कता कीर्तन प्रीति सन्तसेवा मू.१७५
कथा ऐसी कहैं जामें प्रि.५९६
कथा कीरतन नेम रसन मू.१३७
कथा कीरतन प्रीति भीर मू.१४२
कथा कीरतन मगन सदा मू.१९७
कथा कीर्त्तन नेम मिलैं मू.१६८
कपट कुचाल मायाबल प्रि.१६
कपट-धर्म रचि जैन-द्रव्यहित मू.५१
कबीर कानि राखी नहीं मू.६०
कबीर कृपा तें परमतत्त्व मू.६८
कबीर रैदास आदि प्रि.२८५
कमधुज कुटकै हुवौ चौक मू.१४१
कमध्रुज के कपि चारु चिता मू.५२
कमला गरुड जाम्बवान प्रि.२६
कमला गरुड सुनन्द आदि मू.९
कमलाकर भट्ट जगत् में मू.८६
करकोटक तक्षक सुभट मू.२७
करजोरे इक पाँय मुदित मू.१५५
करणामृत सुकवित्त उक्ति मू.४६
करत उपाय सन्त टरत प्रि.५७०
करत करत अनुराग बढि प्रि.१९८
करत टहल प्रभु वेगि प्रि.१२७
करत प्रनाम राजा बोली प्रि.५५७
करत रसोई घोरि गरल प्रि.४६०
करत रसोई जोई राखी प्रि.६१५
करत विचार वारि धार प्रि.१६६
करत विचार शोच सागर प्रि.११६
करत सिंगार छबि सागर प्रि.५४५
करत हैं सोच सब प्रि.३७
करति सिंगार फिर आपु प्रि.४७
करतैं दौना भयो स्याम मू.५०
करन सगाई आयो पायो प्रि.४५०
करनामृत ग्रन्थ हृदै ग्रन्थि प्रि.१७५
करमचन्द कश्यप सदन बहुरि मू.७८
करमशील सुरतान भगवान् मू.११७
करमा सुनाम एक खिचरी प्रि.१९७
करमानन्द अरु कोल्ह अल्ह मू.१३९
करमानन्द चारण की प्रि.५३१
करयो ऐसो राज सब प्रि.६८
करयो हठ भारी मिलि प्रि.१४२
करि अभिमान दान देन प्रि.८७
करि कैं सिंगार सीता प्रि.२९८
करि गोठ कुण्ड जाय प्रि.२२५
करि जोगिन सौं वाद वसन मू.१९०
करि दई संग भरी प्रि.२०१
करि दिगबिजै सब प्रि.३३३
करि नित्त नेम चल्यो प्रि.३०९
करि परिहास काहू प्रि.२३
करि समाधान निज ग्राम प्रि.१६२
करिकै अलाप चारी प्रि.४९
करिकै परीक्षा दई प्रि.२९६
करिकै प्रसाद दियौ लियौ प्रि.६१६
करिकै रसोई सोई लै प्रि.३५९
करिकै विचारि औ प्रि.३१८
करिकै समाज साधु मध्य प्रि.१२२
करिकै सिंगार चारु आप प्रि.३८१
करिकै सिंगार सीता प्रि.३०३
करिकैं रसोई द्विज प्रि.२६७
करी अन्नरासि आगे प्रि.२९३
करी ऐसी रीति डारे प्रि.६४
करी देवी शिष्य सनि प्रि.३३९
करी लै निदास देस प्रि.२१८
करी लै परीच्छा भाट प्रि.४६६
करी लै रसोई सोई प्रि.२९१
करी वही बात मूसि प्रि.२०२
करी वही रीति लोग प्रि.५६३
करी वाही भाँति आयौ प्रि.२४३

करी साधुसेवा रीति प्रि.४८६
करी साष्टांग न्यारी प्रि.२८५
करी सो ज्यौंनार तामें प्रि.४५२
करुणानिधान कही सब प्रि.१०७
करुणानिधान कोऊ सुने प्रि.६००
करुणासिन्धु कृतज्ञ भये मू.७२
करुना छाया भक्तिफल ए मू.९७
करुना वीर सिंगार आदि मू.१३०
करेऊ उपाय पात पला प्रि.१४१
करै घरी दस तामैं प्रि.२३१
करै द्विज द्वेष तासों प्रि.२४८
करै नित चोरी अहो प्रि.३२
करै हरिसेवा भरि रंग प्रि.५५६
करैं गुरु उत्सव लै प्रि.३८४
करैं जाकौं शिष्य सन्तसेवा प्रि.५७५
करैं तिरस्कार कही सकौगे प्रि.५०९
करैं यही बात हमैं प्रि.३१४
करैं रखवारी सुख पावत प्रि.६१८
करैं रखवारी सुत नाती प्रि.६२५
करैं विप्र सेवा तिन्हें प्रि.६०३
करैं वेश्या कर्म अब प्रि.२९३
करैं साधुसेवा जामें प्रि.६१५
करैं साधुसेवा बहु पाक प्रि.४२२
करैं सेवा पूजा और प्रि.३५२
करैं हरि भली प्रभु प्रि.२३१
करो अंगीकार सीधो प्रि.२५९
करो समाधान सन्त मैं प्रि.२३६
करो सिन्धु पार प्रि.२९
करौ जू रसोई कौन प्रि.३३८
करौ यह राज जू प्रि.९५
करौ साधुसेवा धरौ भाव प्रि.५७१
करौ हरि साधु सेवा प्रि.१५४
करौ हरिसेवा भरि भाव प्रि.५४४
कर्दम अत्रि रिचीक गर्ग मू.१६
कर्मठ ज्ञानी ऐंचि अर्थ मू.४५
कर्मा धर्मानन्द अनुज मू.२१
कयौ आय दरसन बिनै प्रि.५५८
कयौ उनमान भक्ति प्रि.४६८
कलश सुधा को प्रि.१७
कला लखा कृतगढौ मानमती मू.१०४
कलि कुटिल जीव निस्तार मू.१२९
कलि जीव जञ्जाली कारनै मू.४७
कलि विशेष परचौ प्रगट मू.२०२
कलिकाल कठिन जग जीतियो मू.१३५
कलिजुग जुवतीजन भक्तराज मू.१०४
कलिजुग भक्ति करीं कमान मू.११९
कलियुग कलुष न लग्यौ दास मू.१९५
कलियुग धर्मपालक प्रगट मू.४२
कवि हरि करभाजन भक्ति मू.१३
कविजन करत विचार बडौ मू.२००
कवित नोख निर्दोष नाथ मू.८१
कवित सूर सौं मिलत भेद मू.१२५
कविता प्रबन्ध मध्य रहै प्रि.३३५
कहत कुम्हार जग कुल प्रि.५६७
कहत तो कही गई प्रि.२२७
कहत बैराग गये पागि प्रि.३५७
कहत समर्थ गयो प्रि.१०
कहत-कहत और सुनत प्रि.३२९
कहनी रहनी एक एक प्रभुपद मू.१७२
कहा करौं अहो मोपै प्रि.३१९
कहा नाम कहाँ ठांम प्रि.७७
कहा परिहास करो ढरो प्रि.१४०
कहा भयो कर छुटे बदौं मू.४६
कहा लौं बखान करौं प्रि.३८१
कहाँ लौं बखानौं भरै प्रि.३६१
कहां लौं प्रताप कहौं प्रि.३२८
कहि कै पठाई वासों प्रि.३५३
कहि रह्यो द्वारपाल नेकु प्रि.३२५
कहिकै पठाई कहौ कीजियै प्रि.६०२
कही अजू जानौ तुम प्रि.४५३
कही अब पागो मोसों प्रि.३९६
कही एक घास धनरासि प्रि.४५४
कही जगन्नाथदेव लै प्रसाद प्रि.१९५
कही जावो वाही ठौर प्रि.१८९
कही जिती बात आदि प्रि.६८
कही जिती बात सुनि प्रि.१५७
कही जू पधारो पाँव प्रि.१७१
कही जू बनावौ ढिंग प्रि.५४६
कही जू विराजौ गाजौ प्रि.४४५
कही डारि देवौ कै प्रि.४६२
कही तुम कटी नाक प्रि.५८९
कही तुम भली तेरी प्रि.५९७
कही दास साधु सेवा प्रि.३७४
कही देवै विप्र सुता प्रि.१४४
कही नाभा स्वामी आप प्रि.४१५
कही निसि सुपने मैं प्रि.३९४
कही नृप भलैं चौकी प्रि.१९४
कही पुनि आप मैं प्रि.३१७
कही पूवा पावैं आप प्रि.४९८
कही बार-बार तुम प्रि.४७३
कही बोल कियौ तोल प्रि.५६७
कही ब्याली रूप बेनी प्रि.३६३
कही भक्तराज तुम कृपा प्रि.११४
कही भक्तिगन्ध दूरि प्रि.४४४
कही भरि ल्यावो जल प्रि.५७२
कही भली बात सब प्रि.५३
कही मैं तो न्यून प्रि.५०३
कही युग सुई ल्यावो प्रि.१७२
कही राजा रानी सों प्रि.२७६
कही वही साधु सों जु प्रि.१९७
कही विप्र जाय प्रि.४५
कही शुकदेव जू सों प्रि.९७
कही श्रीगुसाईंजी कौं प्रि.४११
कही सब बात स्याम प्रि.५३६
कही सब रीति सुनि प्रि.८१
कही समझाय सुनि निपट प्रि.४३९
कही समुझाइ वोई प्रि.११
कही हरे बात मेरे प्रि.२१०
कहूँ जात आवत न प्रि.५९०
कहूँ है सनेह तेरो प्रि.५१९
कहै अहो नाथ सब प्रि.१३८
कहै देश भूमि में प्रि.६१
कहै नृप साँचो ह्वैकै प्रि.४९५
कहै या जनम मैं न प्रि.४९४
कहै सोई करैं अब पाँय प्रि.२०३
कहै सोई करैं दृग प्रि.२०९
कहैं जन भक्त कहा प्रि.१८६
कहैं तुम कौन वारमुखी प्रि.२९३
कहैं मोकों भक्त क्रिया प्रि.२२४
कहैं मोसों रांका ऐपै प्रि.४०२
कहो कहा जेवों कछू प्रि.८०
कहो तुम जाय रानी बैठीं प्रि.४३
कहौ अब कीजै जोई प्रि.४५८
कहौ को उपाय स्वर्ग प्रि.८३
कहौ तुम जाय ईश प्रि.५९०
कह्यो जोई कियो साँचो प्रि.१०२
कह्यो तेरो द्वेषी याहि प्रि.६७
कह्यो नव मन्दिर में प्रि.४५
कह्यो नृपसुतासों जु प्रि.४४
कह्यो बहु भाँति ऐपै प्रि.१६२
कह्यो सुत कहाँ अजू प्रि.२२३
कह्यौ आनि अभूं जावौ प्रि.३९०
कह्यौ कुवां गिरौ चले प्रि.२८३
कह्यौ जू चरित्र बड़े प्रि.३५४
कह्यौ फेरो तन वन प्रि.६२९
कह्यौ रिस भरि धूरि प्रि.४१६
कह्यौ स्वामी नाम सुन्यौ प्रि.४९६
कह्यौ हाँ जू मान दई प्रि.५८३
कागद लै आई देखि प्रि.४४०
कागद लै कोरो कयौ प्रि.३०४
कागद लै डायौ गोद प्रि.४४९
काछ वाच निकलंक मनौ मू.११६
काजी अजित अनेक देखि मू.७५
काटि दियो सीस तन प्रि.६०६
काटि लियो शीश ईश प्रि.२१५
काटि लेवौ शीश ईश प्रि.२१४
काटिकै अँगूठा डारौ प्रि.४५१
काटिबो खडग जल बोरिबो प्रि.९९
काटै हाथ कौन मेरो प्रि.१९४
काढि तरवार तिया प्रि.५२७
काढिकै दिखाई मानौं प्रि.२२६
कात्यायनि सांखल्य मू.१८
कात्यायनी के प्रेम की बात मू.१२७
कान दैकै सुनो अब प्रि.१३७
कान में सुनायौ नाम प्रि.३९१
काना कानी भई द्विज प्रि.३१३
कानाकानी भई नृप प्रि.४६०
कान्ह भगवान् ही की प्रि.५९७
कान्हरदास सन्तनि कृपा हरि मू.१७१
कान्हा हो हलालखोर प्रि.५२०
काम क्रोध मद मोह लोभ की मू.१३५
काम क्रोध मद लोभ मोह मू.१९७
काम क्रोध लोभ मद प्रि.६८
कामरी पन्हैयाँ सब नई प्रि.१८२
कामरीन फारि मधि प्रि.२८६
कामहू निशाचर के प्रि.१७
कायथ त्रिपुरदास भक्ति प्रि.३४०
कायथकुल उद्धार भक्ति दृढ मू.१६१
काल बृथा नहिं जाय निरन्तर मू.१७५
कालिन्दी के तीर ठाढी प्रि.५९१
कालुख सांगानेर भलौ भगवान् मू.१४९
कावापति सींवा सुत प्रि.५४१
काव्य की बडाई प्रि.२
काशी जाय वृन्दावन प्रि.५१७
काशीबासी साहु भयो प्रि.३११
काशीश्वर अवधूत कृष्ण मू.९६
काश्मीरि की छाप पाप मू.७५
काहू कहि दियौ जाय प्रि.४२५
काहू कही कृष्ण अवतारी प्रि.५१८
काहू कही भट्ट श्रीगदाधर प्रि.५२४
काहू कान कही सुत प्रि.६७
काहू के आराध्य मच्छ मू.९२
काहू के बल जोग जज्ञ मू.२१४
काहू कौं बिडारैं झिरकारैं प्रि.५९७
काहू ठौर जाय गाड़ि प्रि.५३१
काहू दास दासी के न प्रि.३४१
काहू ने सुनाय दई प्रि.५२१
काहू पै न होय दियो प्रि.२८६
काहू भाँति छोडो नृप प्रि.९०
काहू सीखि लियौ साधु प्रि.४९९
काहू सौं न कहौ यह प्रि.१८४
काहे कौ मँगाये पच्छी प्रि.२१७
किंकर कुण्डा कृष्णदास खेम मू.१४७
किंपुरुष राम कपि भरत मू.२५
कितौ समुझावै ल्यावौ प्रि.६०६

किन्दुबिल्व ग्राम तामें प्रि.१४४
किये जा बिछौना तीनि प्रि.३४९
किये नाना ग्रन्थ ह्रदै प्रि.३७४
किये परशंस मानो हंस प्रि.११४
किये लै उपाय रही प्रि.३५०
किये शिष्य कृपा करी प्रि.२८४
किये सब भक्त हरि साधु प्रि.२०४
किये हूँ उपाय कोटि प्रि.४०९
कियो अपराध हम साधू प्रि.१७३
कियो बहुमान खान प्रि.२६२
कियो मद पान सो प्रि.२३
कियो यों विचार ऊँचे प्रि.५६२
कियो रूप ब्राह्मन कों प्रि.१४२
कियो सो महोच्छो ज्ञाति प्रि.१११
कियो हो जो द्वार प्रि.२१४
कियोई बनाय सब प्रि.२५२
कियौ उपदेश नृप ह्रदै प्रि.३०२
कियौ तहाँ वास प्रभुसेवा प्रि.५०८
कियौ नृत्य भारी जो प्रि.३५४
कियौ प्रतिपाल तिया प्रि.५७५
कियौ मने लाख बेर प्रि.५९१
कियौ लैं संकेत वाही प्रि.५१०
कियौ विप्र तन त्याग प्रि.५१४
किील्ह अगर केवल चरण मू.३९
कीजिये कवित्त बंद प्रि.१
कीजिये जु कछु अंगीकार प्रि.१३९
कीजिये परीक्षा उर आनी प्रि.९७
कीजिये रसोई जोई सिद्ध प्रि.३२३
कीजिये विचार अधिकार प्रि.१४५
कीजै कोटि गुनी प्रीति प्रि.११०
कीजै पुण्य दान बहुँ प्रि.४९१
कीजै वाकौ काज कही प्रि.४२७
कीनी घर चोरी तऊ प्रि.६२८
कीनी ठौर न्यारी विप्र प्रि.४३४
कीनी भक्तमाल सुरसाल प्रि.६३२
कीनी वही बात माला प्रि.२६९
कीनी वही रीति दृगधारा प्रि.२१०
कीने हरिदास मैं तौ प्रि.१८६
कीन्हो वाही भाँति अहो प्रि.९१
कीरतन करत कर सुपनेहुँ मू.१४४
कीरति अभंग देखि भिक्षा प्रि.३२०
कीरति कीनी भीम सुत सुनि मू.१५४
कीरतिदा वृषभानु कुँअरि मू.२२
कील्ह औ अगर प्रि.१२
कील्ह कृपा कीरति विशद् मू.१५८
कील्ह कृपा बल भजन के मू.१८२
कुंजकेलि दम्पत्ति तहाँ की मू.९०
कुंजविहारी केलि सदा मू.१९८
कुन्ती करतूति ऐसी करै प्रि.७०
कुरु बराह भूभृत्य वर्ष मू.२५
कुरुतारक शिष्य प्रथम मू.३१
कुवां में खिसिल देह प्रि.३४७
कुश पवित्र पुनि क्रौंच कौन मू.२४
कूबाजी निहारि जानी प्रि.५७२
कृपणपाल करुणा समुद्र मू.३१
कृष्ण कलस सौं नेम जगत मू.१४४
कृष्ण कृपा कोपर प्रगट मू.४६
कृष्ण केलि सुखसिन्धु अघट मू.१६२
कृष्ण दाम बाँधे सुने तिहि मू.४९
कृष्ण भक्ति को थम्भ ब्रह्मकुल मू.१९१
कृष्ण रुक्मिनी केलि रुचिर मू.१२४
कृष्ण विरह कुन्ती शरीर त्यों मू.१२८
कृष्णकृपा कहि बेलि फलित मू.४७
कृष्णचैतन्यनाम जगत प्रि.३३२
कृष्णजीवन भगवान् जन मू.१४६
कृष्णदास(कृपाकरि)भक्तिदत्त मू.४१
कृष्णदास कलि जीति न्यौति मू.१८५
कृष्णदास पण्डित उभै मू.९४
कृष्णदास ये सुनार प्रि.६११
कृष्णवेना तीर एक द्विज प्रि.१६५
केतिक हजार लै बजार प्रि.२३५
केवलराम कलियुग्ग के पतित मू.१७३
केशनि कुटिलताई ऐसे प्रि.१४
केशवभट नरमुकुटमणि जिनकी मू.७५
केसौ पुनि हरिनाथ भीम मू.१०१
कैद करि साथ लिये दिल्ली प्रि.५९३
कैसे करि ल्यावैं वैतौ प्रि.२१६
कैसे चढौं पालकी में प्रि.४२६
कैसे ये प्रवीन ईश प्रि.२०
कैसो अपकार करै तऊ प्रि.१५८
कोउ कह अवनी बडी जगत मू.२००
कोउ दिन बीते नृप प्रि.६१
कोउ मालाधारी मृतक मू.३३
कोऊ कहैं द्वेष कोऊ प्रि.१९२
कोऊ जाय द्वार ताहिं प्रि.२७४
कोऊ दिन रहे नाना प्रि.३३९
कोऊ प्रभु जन आय प्रि.३४१
कोऊ बड़ौ नर देखि प्रि.६१९
कोऊ भेषधारी सो व्योपारी प्रि.१२०
कोऊ सिंह व्याघ्र अजू प्रि.५८८
कोक काव्य नव रस सरस मू.४४
कोटि कोटि अजामिल प्रि.३३२
कोटि ग्रन्थ को अर्थ तेरह मू.४७
कोटिक उपाय करै प्रि.५४५
कोटि-कोटि रसना प्रि.४७०
कोठरी सँवारि आगे प्रि.४४०
कोढी भयो राजा किये प्रि.२१६
कोप भरि राजा गयौ प्रि.५५१
कोमल ह्रदै किशोर जगत मू.१५०
कोल्ह अल्ह भाई दोऊ प्रि.५३२
कोल्ह नैं सुनाये सब प्रि.५३३
कोशलेश पदकमल अननि मू.१३०
कौंधनी ध्यान उर में बस्यौ मू.१८९
कौन वह बेर जेहि प्रि.१३०
कौन वह विथा ताकौ प्रि.२०२
कौनसो तिलोक अरे दूसरो प्रि.४०८
कौषारव कुन्ती बधू पट मू.९
कौषारव नाम सो बखान प्रि.६९
क्यारे कलस औली ध्वजा मू.१६६
क्यों जू उठि जाऊँ प्रि.२७३
क्यों रे तूं जुलाहे धन प्रि.२७२
क्रम सौं निहारि कही प्रि.२२६
क्रिया सब कूप करै प्रि.११५
क्रोध भरि झारे आय प्रि.३३७
क्वाहब श्रीरँग सुमति सदानन्द मू.१७८
क्षमा शील गम्भीर सर्व लच्छन मू.१९१
खरतर खेम उदार ध्यान केसौ मू.१५१
खरिया खुरपा रीति ताहि मू.१७५
खरी भक्ति हरिषांपुरे गुरुप्रताप मू.१६४
खातीको बुलाय कही प्रि.३५१
खाय सो खबावो सुख प्रि.१८३
खायौ विष ज्यायौ प्रि.२८७
खिरकी जु मन्दिर के प्रि.२४२
खीचनि केसी धना गोमती मू.१७०
खुलि गई आँखैं अभिलाखैं प्रि.१६९
खुलि गईं आँखैं अभिलाखैं प्रि.१८९
खुलि गईं आँखैं भाखैं प्रि.४२३
खुलि गये नैन ज्यौं प्रि.१७५
खेचर नर की शिष्य मू.७७
खेत की तौ बात प्रि.३०६
खेत कौ कटावौ औ प्रि.५६३
खेत पर जाय वाही प्रि.२४८
खेम श्रीरंग नन्द विष्णु मू.१००
खेमालरतन तन त्याग प्रि.४९१
खेमालरतन राठौर की सुफल मू.१२२
खेमालरतन राठौर के अटल मू.११८
खेलत खिलौना रीति प्रीति प्रि.१२९
खेलत में जाय मिले प्रि.५९२
खेलत हो लाल संग प्रि.४१०
खेलति सहेलिन सों आइ प्रि.६३
खेलै भूप चौपरि कों प्रि.१९३
खैंचि लई गाँठि मूठि प्रि.५६
खोजीजू के गुरु हरि प्रि.३९९
खोलि डारी कटिपट भवन प्रि.२०६
खोलिकै दिखायो नृप प्रि.६०६
खोलिकै निसंग कहौ प्रि.२५१
खोलिकै लपेटा मध्य प्रि.४६८
खोलैं जो किवार थार प्रि.३१७
गंगा कौ सरूप कहौ प्रि.३३४
गंगा गौरी कवरि उबीठा मू.१०४
गंडकीकौ सुत बिन जाने प्रि.३९४
गई आस टूटि तन प्रि.२०५
गई घर झाली पुनि प्रि.२६७
गई पै पास स्वास प्रि.१७२
गई वाही गाँव जहाँ प्रि.२००
गए संग साधुनि लै प्रि.३४९
गढागढ पुर नाम माधौ प्रि.४५६
गदाधर भट्ट जू की प्रि.५२६
गद्गद गिरा गुदार स्याम मू.७४
गम्भीरे अर्जुन जनार्दन गोविन्द मू.१०५
गये उठि कुंज सुधि प्रि.३६८
गये उठि पाछे बोलि प्रि.२९७
गये उठि पाछे भक्त प्रि.३२४
गये कुंवा खोदिवे कौं प्रि.५६८
गये ग्राम बूझी घर हरि प्रि.३६२
गये घर माँझ वाके प्रि.५०३
गये चलि मन्दिर लौं प्रि.४८
गये जन दोय चार प्रि.२७२
गये जब द्वार उठी प्रि.३०३
गये जहाँ हंस संत प्रि.२१७
गये ढिंग गाँव की प्रि.२४१
गये दुर्वासा ऋषि वन प्रि.७१
गये द्वार द्वारपाल बोले प्रि.५२१
गये नर पत्र दियौ प्रि.५५३
गये नीलाचल जगन्नाथ जू प्रि.१०८
गये पुर पास बाग प्रि.६२
गये बैठे आयौ जन प्रि.३५५
गये ब्रज देखिबे का प्रि.३२६
गये वन मध्य ठग प्रि.२५४
गये वाके घर वह प्रि.३२३
गये वाके प्रान रोय प्रि.२०९
गये वाही ठौर शिरमौर प्रि.२२३
गये सब त्यागि प्रभुसेवा प्रि.५०५
गये हे बहिरभूमि तहां प्रि.४१३
गये हे बुलाये आप प्रि.२९८
गयो जा लिवाय ल्याय प्रि.१५९
गयो तहाँ साधु मानि प्रि.१९६
गयो मेरो सन्त रीति प्रि.१९७
गयो लै महल माँझ प्रि.१५५
गयौ अभिमान आनि मंदिर प्रि.११३
गयौ गयौ भूलि फूलि प्रि.४६६
गयौ गुरु पास तुम प्रि.३११
गयौ गृह त्यागि हरि प्रि.५३७
गयौ जाय देख्यौ उर प्रि.४६३
गयौ जो सगाई करि प्रि.४५४

गयौ ढिंग मन्दिर के प्रि.४४६
गयौ हो विदेश तहाँ प्रि.५३८
गरल पठायौ सो तौ प्रि.४७६
गरुड को आज्ञा दई प्रि.१०९
गरुड नारदी भविष्य मू.१७
गर्भ ते निकसि चले प्रि.९८
गलते प्रगट साधुसेवा प्रि.१३
गलतें गलित अमित गुण मू.१८५
गहने धयौ हो राग प्रि.४४९
गहि लीयो कर जिनि प्रि.१३२
गही प्रतिकूलताई जौ प्रि.२५
गह्यो कर रानी सुखसानी प्रि.५६
गाँठि में मुहर मग प्रि.१५२
गाँव पहिरायो छबि प्रि.४४१
गाँव में न जात लोग प्रि.६१४
गाँव हुसंगाबाद अटल ऊधौ मू.१६९
गांगेय मृत्यु गंज्यो नहीं त्यों मू.४०
गाए पांच सात सुनि प्रि.३४६
गागरौन गढ बढ पीपा प्रि.२८२
गाठैं पगदासी कहूँ प्रि.२६१
गाड्यौ एक ठूंठ द्वार प्रि.३१२
गान कला गन्धर्व स्याम मू.९१
गान काव्य गुणराशि सुहृद् मू.१२६
गायो भक्त इष्ट अति प्रि.३७२
गायौ भक्ति प्रताप सबहिं मू.१२३
गायौ रघुनाथ जू कौ प्रि.५०७
गावत बजावत लै नीर प्रि.११०
गिरा गंग उनहारि काव्य मू.४८
गिरा गदित लीला मधुर मू.१०९
गिरिधर ग्वाल साधुसेवा प्रि.६२३
गिरिधरन ग्वाल गोपाल कौं मू.१९४
गिरिधरन रीझि कृष्णदास मू.८१
गिरिराजधरन की छाप गिरा मू.१२४
गिरी जो जलेबी थार प्रि.११९
गिरे मुरझाइ दया आइ प्रि.६०
गियी भूमि मुरछा ह्वै प्रि.२२९
गुंजामाली चित उत्तम मू.१०३
गुण असंख्य निर्मौल सन्त मू.६१
गुण पै अपार प्रि.७
गुन सो अनूप कहि कैसे प्रि.३६६
गुन ही को लेत जीव प्रि.३७५
गुनगन विशद् गोपाल के एते मू.१४६
गुननिकर गदाधर्भट्ट अति मू.१३८
गुननिधि जस गोपाल देइ मू.१०१
गुरु उपदेशि मन्त्र कह्यो प्रि.१०७
गुरु की गिरा विश्वास मू.५८
गुरु को वियोग हिये प्रि.३४
गुरु गंगा में प्रविशि मू.३४
गुरु गदित वचन शिष सत्य मू.५८
गुरु गमन कियो परदेश मू.३४
गुरु गुरुताई की प्रि.९
गुरु धर्म निकष निर्वह्यौ विश्व मू.१३५
गुरु भरमावैं नीति कहि प्रि.१०२
गुरु शिष्य की कीर्ति में मू.२०६
गुरुवत्तन गिरिराज भलप्पन सब मू.१३२
गुसाईं भूगर्भ वृन्दावन प्रि.३८३
गुसाईं श्रीसनातनजू प्रि.३८१
गूजरी को धन दियौ प्रि.३०४
गेह ही में शंख चक्र प्रि.५७१
गेहूँ कोठी डारि मुंह प्रि.४२३
गोकुल के देखिबे कौं प्रि.१८८
गोकुल के नाथ जू प्रि.५२०
गोकुल गुरुजन प्रीति प्रीति घन मू.१९९
गोद में उठाइ लियो प्रि.१००
गोप नारि अनुसारि गिरा मू.१२७
गोपद सो ह्वैहैं प्रि.१६
गोपाली जनपोषकौं जगत मू.१९५
गोपिन के अनुराग प्रि.३३०
गोपी ग्वाल पितु मातु नाम मू.१६१
गोपीनाथ पद राग भोग मू.१२५
गोपुर ह्वै आरूढ उच्च स्वर मू.३१
गोप्य केलि रघुनाथ की (श्री) मू.१३०
गोप्य स्थल मथुरा मण्डल मू.८७
गोबर्धन तीर कही आगे प्रि.३४७
गोमती कौ सागर सौं प्रि.५७१
गोमा परमानन्द प्रधान द्वारका मू.१४९
गोवर्द्धननाथ जू कें हाथ प्रि.६३१
गोवर्धन नाथ साथ खेलैं प्रि.४१०
गोवर्धन राधाकुण्ड ह्वैकै प्रि.५६५
गोविन्द अनुज जाके प्रि.६१०
गोविन्द गंगा रामलाल मू.१०२
गोविन्द भक्ति गद रोग गति मू.१३७
गोविन्दचन्द गुन ग्रथन को मू.१६१
गोसू रामदास नारद स्याम मू.१४६
गौड देशवासी उभै विप्र प्रि.२३८
गौडदेश पाखण्ड मेटि कियौ मू.७२
गौडदेश बंगाल हुते सबही मू.८९
गौड़वाने देश भक्ति प्रि.४९३
गौतमी तन्त्र उर ध्यान धरि मू.१६१
गौर स्याम सौं प्रीति प्रीति मू.१९९
ग्रामसो जबत कयौ कयौ प्रि.३८८
ग्रीवा की द्युरनि कर प्रि.४३२
ग्वाल गाय ब्रज गाँव पृथक् मू.१६२
ग्वालियर वास सदा रास प्रि.५९२
घट बढ जानि अपराध प्रि.६३१
घट भरि धयौ सीस प्रि.५९५
घटती न मेरी आप प्रि.५०६
घण्टा लै बजावैं नीके प्रि.१२९
घमण्डी युगलकिशोर भृत्य मू.९४
घर आये हरिदास तिनहिं मू.६२
घर झर लकरी नाहिं शक्ति मू.६७
घर में तौ नाहीं मण्डी प्रि.२७३
घर ही विराजे आप प्रि.२४५
घर-घर जाय कहैं प्रि.६००
घरतें निकसि चले वन प्रि.२१२
घरहूँ को आये सुत सुखी प्रि.३२६
घरी दस मन्दिर में प्रि.६०१
घिरि आये लोग जिन्हें प्रि.२९३
घूम्यौ कह्यौ कान धरौ प्रि.४८३
घृत-सहित भैंस चौगुनी मू.५२
घोष निवासिन की कृपा मू.२२
चँदवा बुझाय दियौ तेली प्रि.३०५
चक्र दुख मानिलै प्रि.३९
चटथावल गाँव बाग प्रि.३३८
चढि आये प्रभु पास प्रि.३९७
चढी फौज संग चढ्यौ प्रि.४५९
चढी मुख बोलै हौं प्रि.३३९
चढ्यो हो जहाज प्रि.१०
चण्ड प्रचण्ड विनीत मू.८
चतुर महंत दिग्गज चतुर मू.३२
चतुरदास जग अभय छाप मू.१५८
चतुरभुज चरित्र विष्णुदास मू.१०३
चतुर्थ तहाँ अभिनन्द नन्द मू.२१
चतुर्भुज नृपति की भक्ति मू.११४
चतुर्भुज रूप प्रभु प्रि.२८१
चतुर्भुज षटभुज रूप प्रि.३३१
चन्दन लगाय आनि प्रि.५४९
चन्द्रहास अग्रज सुहृद् परम मू.११०
चन्द्रहास चित्रकेतु ग्राह मू.९
चन्द्रहास जू सों भाष्यौ प्रि.६५
चन्द्रोदय हरिभक्ति नरसिंहारन मू.१८१
चरण चिह्न रघुवीर के मू.६
चरण धोय दण्डौत विविध मू.१९६
चरण धोय दण्डौत सदन में मू.१५३
चरण प्रछाल संत प्रि.१३
चरण शरण चारण भगत मू.१३९
चरन पकरि गिरि जावो प्रि.४३५
चरित अपार उभै भाई प्रि.३६३
चरित अपार कछु मति प्रि.४२८
चरित अपार भाव भक्ति प्रि.३७४
चलत चलत बात नृपति प्रि.३००
चलत चलत वामदेवजू के प्रि.१२८
चलत जहाज परि अटकि प्रि.२८
चलिवे न देत सुख प्रि.४६९
चली उठि हाथ गह्यौ प्रि.५४७
चली यै सिंगार करि प्रि.१७२
चली लै लिवाय चेरी प्रि.२१०
चले अकरूर मधुपुरी ते प्रि.१०१
चले अचरज मानि देखि प्रि.४५५
चले अनखाय गहि पाँय प्रि.९१
चले अनखाय पाँय गहि प्रि.८९
चले ई अधर पग धरै प्रि.११६
चले उठि धाये नीठ प्रि.४१२
चले और गांव जहाँ प्रि.३२३
चले गाड़ी टूटी-सी प्रि.४३९
चले चढि-बढि कियौ प्रि.४२६
चले जात अल्ह मग प्रि.२४९
चले जात मग उभै प्रि.२२
चले जात मग ठग प्रि.२३४
चले ठौर मारिवे कौं प्रि.४९५
चले तब संग गये प्रि.५९६
चले तहाँ धाइ भूप प्रि.१९५
चले द्वारावति छाप ल्यावैं प्रि.५७१
चले नीलाचल हीरा जाय प्रि.४६२
चले पहुँचायबे को प्रि.२८९
चले पीपा बोध दैन प्रि.३००
चले प्रभु गाँव जिनि तजो प्रि.११५
चले भौन माँझ मन प्रि.१७१
चले मग जात ज प्रि.२५०
चले मग दूसरे सु प्रि.२९०
चले लागि संग अब प्रि.२५४
चले लै गहाय कर छाया प्रि.१७४
चले लैके न्हान संग गंग प्रि.११६
चले वाही ठौर स्वर प्रि.५६८
चले वृन्दावन मन कहै प्रि.१७०
चले वृन्दावन मन लग प्रि.३२२
चले श्री आचारज पै प्रि.११२
चले संग वाके त्यागि प्रि.५२२
चले सावधान राधावल्लभ प्रि.५७८
चले सुख पाय दृग प्रि.१७३
चले सुखपाय दासी आगे प्रि.२१०
चले ही बनत चले प्रि.२७६
चलेई लिबायवे कौं प्रि.५०५
चलो आगे देखौ कोऊ प्रि.१०५
चलो जिन टारौ तिया प्रि.४२०
चलो देखौं अहो यह प्रि.१६८
चलो लै दिखाऊँ तब प्रि.४०१
चलौ गृह वास करौ प्रि.५८८
चलौ जू प्रसाद लीजै प्रि.६२४
चल्यो एक काशी जहाँ प्रि.३१३
चल्यो ततकाल देखि गिरयो प्रि.६७
चल्यो द्विज तहाँ जहाँ प्रि.१४५
चल्यो प्रभु पास लै प्रि.१३१
चल्योई करन पूजा देशपति प्रि.६६
चल्यौ अनखाइ समझाइ प्रि.१४६

चल्यौ चढि साँड़िनी पै प्रि.५४०
चल्यौ दौरि राजा जहाँ प्रि.२४९
चहल पहल धन भयौ प्रि.४०८
चहुँदिसि डायौ नीर प्रि.५८१
चहूँ दिसि परी हई प्रि.३९३
चातुरी अवधि नेकु आतुरी प्रि.१८७
चारि जुगन में भगत जे मू.२०७
चारि बरन आश्रम सबही मू.३५
चारि वरन आश्रम रंक राजा मू.१५२
चारिहू बरन की जु प्रि.१८२
चारो ओर दौरे नर प्रि.५८६
चारौ युग चतुर्भुज सदा मू.५२
चारौं तुम जावो टरि प्रि.४४४
चालक की चरचरी चहुँदिसि मू.१२४
चालिस औ आठ दिन प्रि.९४
चाहत महोच्छौ कियौ प्रि.५८१
चाहत मुखारविन्द अति प्रि.२९
चाहै कछु वारौं परे प्रि.५६२
चाहै याहि टारौ यह प्रि.४३३
चाहैं एक राम जाकौं प्रि.२७९
चाहो सोई करौं ह्वै प्रि.२९५
चाहौ हरिभक्ति तौ प्रि.४४२
चिउडा छिपाये काँख प्रि.५६
चित्र लिखित सौं रह्यौ त्रिभंग मू.१४५
चित्रकेतु प्रेमकेतु भागवत प्रि.६९
चित्रमुख किये लै प्रि.४५२
चित्सुख टीकाकार भक्ति मू.१८१
चिन्ता जिनि करौ जाय प्रि.४३९
चिन्ता जिनि करौ हिये प्रि.३८९
चिन्ता जिनि कीजै तीनों प्रि.४८२
चिन्तामणि सँग पायकै मू.४६
चिन्तामनि सुनी वन माँझ प्रि.१७६
चीरा जरकसी सीस प्रि.३६८
चेता ग्वाल गोपाल शंकर मू.१७८
चोपनि के ढेर लागि प्रि.१३०
चोर चहैं चोरी करैं प्रि.२९४
चोरी गये बैल ताकी प्रि.२४६
चोरी त्यागी दई अति प्रि.२४७
चौदह बरष पीछे आये प्रि.९६
चौबीस प्रथम हरि बपु मू.२८
चौबीस रूप लीला रुचिर मू.५
चौमुख चौरा चण्ड जगत मू.१३९
चौरासी रूपक चतुर बरनत मू.१३९
छठेई मिलान बन मैं प्रि.२८९
छपन भोग तैं पहिल मू.५०
छाक नित आवै नीकै प्रि.३०७
छाडो उपहास अब करो प्रि.११४
छाती खोलि रोये संत प्रि.२०७
छाती सों लगायौ प्रेमसागर प्रि.४०९
छापे दिये स्वामी हरिदास प्रि.३७३
छिनु में सभीत प्रि.१६
छिप्र छुडहरी गही पानि मू.६३
छीतम द्वारकादास माधव मू.१००
छीति स्वामि जसवन्त गदाधर मू.१४६
छीपा वामदेव हरिदेवजू प्रि.१२७
छुयो गयो नेकु कहूँ प्रि.३४
छूट्यो तन वन राम प्रि.२३०
छोंकर के वृक्ष पर बटुवा प्रि.१८८
छोड़ि दई रीति तब प्रि.३९२
छोड़िकै कहार भाजि गये प्रि.३९०
जंगली देश के लोग सब मू.१३७
जंगी प्रसिद्ध प्रयाग विनोदी मू.१५०
जग कीरति मंगल उदै मू.२०८
जग दुरगन्ध कोऊ ऐसी प्रि.५८६
जग प्रपंच ते दूरि अजा मू.१२७
जग मंगल आधार भक्ति मू.३६
जगता कौ पन मन प्रि.६२१
जगत् विदित नरसी भगत मू.१०८
जगन्नाथ इष्ट वैराग्य सींव मू.७०
जगन्नाथ के द्वार दँडौतनि मू.१०७
जगन्नाथ कौ दास निपुन अति मू.१८९
जगन्नाथ छेत्र माँझ बैठे प्रि.१७७
जगन्नाथ पद प्रीति निरन्तर मू.७१
जगन्नाथ रथ आगे नृत्य प्रि.४०९
जगन्नाथदेव आगे पालकी प्रि.३९७
जगन्नाथदेव आपु भोजन प्रि.१९६
जगन्नाथदेव जू आज्ञा प्रि.४६३
जगन्नाथदेवजू की आज्ञा प्रि.१४५
जतीरामरावल्लि श्यामखोजी मू.९७
जन मन हरि लाल प्रि.६३०
जनकौं बुलाय समुझाय प्रि.२६५
जनम करम गुन रूप मू.७३
जनम करम भागवत धरम मू.२८
जन्म कर्म लीला जुगति मू.१२५
जन्म पुनि जन्म को प्रि.७४
जप तप तीरथ नाम नाम मू.६८
जब ही हरित देखैं प्रि.३१२
जब-जब आवैं बान प्रि.५१३
जमुना कोली रामा मृगा मू.१०४
जमुना चढत काट करत प्रि.३८०
जमुना लौं आयौ अचरज प्रि.५९५
जम्बु और पलच्छ सालमलि मू.२४
जय जय मीन बराह मू.५
जयदेव कवि नृप चक्कवै मू.४४
जयन्त धारा रूपा अनुभई मू.१०५
जयन्ती नन्दन जगत् के मू.१३
जल अन्हवाय सूखे पट प्रि.१६७
जल चढि आयो नाव प्रि.१२५
जल तैं निकासि बहु प्रि.१३५
जल दै पठायौ भलीभांति प्रि.४४०
जल सो रुधिर भयो प्रि.३४
जव हेतु सुनो प्रि.१६
जस वितान जग तन्यौ सन्त मू.१७२
जसवन्त भक्ति जयमाल की मू.१५५
जसुमति सुत सोई प्रि.३३०
जसू नाम स्वामी गंगा प्रि.२४६
जसूस्वामि के वृषभ चोरि मू.५४
जहाँ जा छिपावैं पात्र प्रि.५६६
जा दिन प्रगट भयौ प्रि.५०२
जाइ गहि पाँय रह्यौ प्रि.४५५
जाऊँ एक गाँव फिरि प्रि.१२९
जाओ निहशंक वे प्रसाद प्रि.११२
जाके तुलसी हैं ऐसे प्रि.१४०
जाके यह होय सोई प्रि.२५७
जाके संग रंग भींजि प्रि.४७७
जाके सिर कर धरयो प्रि.११९
जाके सिर कर धयी तासु मू.३८
जाके हम चाकर हैं प्रि.२३०
जाके हो अभाव मत प्रि.६२३
जाको जो स्वरूप प्रि.७
जाकौ कोऊ खाय ताकी प्रि.३०७
जागरन एकादशी करे प्रि.२४२
जागरन माँझ हरि भक्तन प्रि.१४३
जागि परे दोऊ अरबरे प्रि.६०९
जागिकै निहारे ठौर और प्रि.१०९
जाडा चाचागुरू सवाई मू.९७
जाडा हरन जग जाडता मू.१२४
जाति को सोनार पर प्रि.११८
जाति कौ चमार करै प्रि.५०३
जानकी जीवन चरण शरण मू.१६३
जानकी जीवन सुजस रहत मू.१३०
जानकी हरण कियो प्रि.३८
जानकीरवन दोऊ दर्शन प्रि.१९१
जानहारौ होई सोई प्रि.६२९
जानि गई भक्तबधू चाहति प्रि.१६१
जानि गई रीति प्रीति प्रि.२९२
जानि गयौ आप कछु प्रि.५६०
जानि जगत् हित सब गुननि मू.१९२
जानि लई बात खोलि प्रि.१५२
जानि लई बात निधि प्रि.१७७
जानि सुखमानि हरि प्रि.८
जानिकै आवेश तन शिष्यन्नैं प्रि.१२५
जानिकै छिपाई बात माता प्रि.२३३
जानिकै प्रभाव पाँव लीने प्रि.६१९
जानिकै प्रवीन उठै प्रि.५०७
जानिकै सुजान कही लै प्रि.३६७
जानिवे कौं पन पृथीपति प्रि.६२०
जानी इन कोऊ नाहिं प्रि.२३४
जानी जब भई तिया प्रि.१४७
जानी बहकाये प्रभु दाम प्रि.४३६
जानी भक्ति रीति घर प्रि.२८५
जानी भट्ट संग सौं प्रि.५२५
जानी भोर गौनो होत प्रि.५८५
जानी यहै बात पहुँचाये प्रि.५९५
जानी यों जुबति जाति प्रि.४०२
जानीऊँ न जाति जाति प्रि.२०७
जाने ग्वालबाल एक प्रि.४४७
जाने सुता भाग ऐसे प्रि.४५१
जानों निजमति ऐपै प्रि.१
जानौ कृष्णदास ब्रह्मचारी प्रि.३८१
जान्यो जब नाँव ठाँव प्रि.१५८
जाबालि यमदग्नि मायादर्श मू.१६
जाय तौ बिलाय गयो प्रि.३०१
जाय पहिचानि संग चले प्रि.५०९
जाय लग्यो टापू ताहि प्रि.२८
जाय लपटायौ पाँय भाव प्रि.५२२
जाय वही कही लही प्रि.५२१
जायँ जा महोच्छौ में प्रि.५८०
जायके निशंक यह प्रि.४४
जायकै निहारे तन मन प्रि.४२६
जायकै पुकायौ साधु प्रि.३५५
जायकै भवन सीता प्रि.३०८
जायकै सिखायौ बादशाह प्रि.५९६
जायकै सुनाई दास प्रि.३८७
जायकै सुनाई भई अति प्रि.४७६
जावो एकबार वह वदन प्रि.५३
जावो बालमीक घर बडो प्रि.७८
जावौ यहै ध्यान करौ प्रि.४३३
जासु सुजस ससि ऊदै मू.७६
जासु सुजस सहज ही कुटिल मू.१९३
जाही भाँति होहु ताही प्रि.३८८
जाहीं रूप मांझ प्रि.१४
जितनौ निकासैं ताते प्रि.५७७
जिती द्विज जात दुख प्रि.४३४
जिते अवतार सुखसागर प्रि.१४
जिते गुनी जन तिनै प्रि.३५३
जिते प्रतिकूल मैं तो प्रि.२६५
जिते मेरे साधु कभूँ प्रि.७८
जिते व्रत दान और स्नान प्रि.१४१
जिते सभाजन कही चाखौ प्रि.३८५
जिते साधु संग तिन्हें प्रि.७३
जितौ गौड़ देश भक्ति प्रि.३३२
जिनके न अश्रुपात प्रि.४
जिनही के हरि नित प्रि.७३
जिन्हें जग गाय किहूँ सकै प्रि.७४

जिमींदार सुता ताके भये प्रि.१९९
जीवको न बध करैं प्रि.३९४
जीवत जस पुनि परमपद मू.१६४
जीवन अवधि रहै निपट प्रि.५४०
जुग जेवा कीकी कमला मू.१०४
जुगल नाम सौं नेम जपत मू.९१
जुगलकिशोर गावैं नैननि प्रि.५४७
जूठनि लै डारौं सदा प्रि.८०
जूनागढ वास पिता प्रि.४२९
जे बसे बसत मथुरा मण्डल मू.१०३
जे वे रहे दूषि कही प्रि.४३५
जेंवत देखे सबनि जात काहू मू.३३
जेंवत न बोधि हारी प्रि.४६१
जेतिक प्रकार सब व्यंजन प्रि.८१
जेतिक वे सोती मोती प्रि.१३७
जेतिक हरि अवतार सबै मू.८६
जेबरी लै फाँसि दियो प्रि.२१४
जेवा हरिषां जोइसिनि मू.१७०
जै-जै धुनि भई व्यापि प्रि.५४०
जैतारन गोपाल के केवल मू.१४९
जैदेव राघौ विदुर दयाल मू.१४७
जैमल के जुधि माँहि अश्व मू.५२
जैसी कीन्ही सेवा बहु प्रि.२८५
जैसी तुम जानो तैसी प्रि.५१२
जैसे रंग भोजि रही प्रि.४९
जैसो मन मेरे हाड प्रि.१६८
जोई आवै द्वार ताहि प्रि.२९५
जोग जग्य व्रत दान भजन मू.६०
जोग जुगति विश्वास तहाँ मू.१८३
जोगानन्द उजागर वंश करि मू.१३६
जोग्यताई सीवाँ प्रभु प्रि.६२६
जोपै अन्धकार ही मैं प्रि.५९४
जोपै कहौ भक्त नाहीं प्रि.७६
जोपै तन त्याग करौं प्रि.२१५
जोपै नहीं देत मेरौ प्रि.४३१
जोपै प्रेम लक्षना की प्रि.६३२
जोपै बुधिवन्त रसवन्तरूप प्रि.१९
जोपै यापै कृपा करी प्रि.२८७
जोपै लै पिछान कहूँ प्रि.१५३
जोबनेर गोपाल के भक्त मू.१०६
जोबनेर बास सो गोपाल प्रि.४२०
जोरावर भक्त सों बसाइ प्रि.१०९
जौं हरि प्राप्ति की आस है मू.२१०
जौलौं रहैं दूर प्रि.४
ज्ञान स्मारत पच्छ कौं मू.८७
ज्यों चन्दन कौ पवन नीम्ब मू.१३७
ज्यों-ज्यों बल करैं प्रि.१७४
ज्यौं जोगेश्वर मध्य मनो मू.७७
ज्यौं पारौ दै पुटहिं सबनि मू.१५९
ज्यौं साखा द्रुम चन्द जगत मू.१७१
झनक मनक जाइ जोरि प्रि.१७२
झारिकै पतौबा गये बाहिर प्रि.१२३
झीथड़ै ढिंग ही में प्रि.५६३
झूठे सम्बन्धहू तैं नाम प्रि.२२८
झूठे ही उसांस भरि प्रि.३८७
टहल छुटाई औ सिरहाने प्रि.५४३
टहल बनाय करी नृप प्रि.३०९
टहल लगाय दई नई प्रि.५६४
टहलुवा न कोई साधु प्रि.१८०
टारी बार दोय चारि प्रि.४१८
टीका अरु मूल नाम भूल प्रि.६३२
टीका को चमत्कार प्रि.४
टोडर दिवान कह्यौ धन प्रि.५०१
टोडे भजन निधान रामचन्द्र मू.११७
ठाकुर विराजैं तहाँ खेलैं प्रि.४१६
ठाढे मण्डा मांझ पट प्रि.२७०
ठाढौ कर जोरि विनै प्रि.५९३
ठाढौ हाथ जोरि मति प्रि.५०६
ठौर ठौर रासकै विलास प्रि.३५६
ठौर-ठौर पकवान होत प्रि.४५२
ठौर-ठौर हरिकथा ह्रदै अति मू.१५३
डग मग पांव धरै प्रि.३०१
डरपत हियो ड्योढी प्रि.५४
डरे द्विज भारी महाप्रभु प्रि.३३३
डरे शिव अज आदि प्रि.१००
डयौ वह शाह मति प्रि.६१७
डारि दियो पीत पट प्रि.५१
डारी एक छानि कियो प्रि.२६१
डारे सब बेंचि पागपेच प्रि.४५९
डारौं याहि मार याको प्रि.५९
डोठि हू न सोहीं प्रि.३३
डोलत फिरत आय प्रि.४२९
डोला पधराय दृग-दृग प्रि.४७२
डोलैं जगन्नाथ पाछें काछें प्रि.१५०
डोलैं धाम-धाम स्याम प्रि.५६६
ढिंग जो खवासिनि सौं प्रि.५४२
ढूंढत परसराम पिता प्रि.५८७
ढूंढत फिरत बन बन प्रि.३८०
ढूंढि फिरि हारे भूख प्रि.४३६
तऊ दुराराध्य कोऊ प्रि.८
तऊ दृढ कीनी फिरि प्रि.१०८
तऊ न प्रसन्न होत प्रि.२९
तजिकै शरीर काहू नृप में प्रि.१२४
तजी लोकलाज हिये वाही प्रि.१६५
तजे उन प्रान पाये वेगि प्रि.८५
तज्यो जल अन्न अब प्रि.२०३
तत्वदरसी तमहरन शील करुना मू.१७३
तत्वा जीवा दक्षिण देश मू.६९
तत्वा जीवा भाई उभै प्रि.३१२
तन त्याग बेर नहीं प्रि.३९९
तन मन धन परिवार मू.९५
तब तो पठायो प्रहलाद प्रि.१००
तब तौ खिसाने भये प्रि.२४५
तब तौ प्रगट श्याम प्रि.४०३
तब तौ प्रसन्न नृप पाँव प्रि.१२६
तब तौ लजानौ हिये प्रि.८०
तब दई सुता लई प्रि.३१४
तब न प्रमान करी प्रि.३७२
तब फिरि आयकै प्रि.२१
तब समझायौ सन्त प्रि.३७४
तबतौ खिसानी भई प्रि.४७४
तबतौ प्रसन्न भयौ अन्न प्रि.६१७
तबतौ बुलाये समुझाये प्रि.६०७
तबतौ विचारी अहो मोड़ा प्रि.५५१
तस्य राघवाननद भये भक्तन मू.३५
तहाँ जाय देवता कौ प्रि.४९३
तहाँ वनिजारौ आय संपति प्रि.५२२
तहां एक ठौर साधु भोजन प्रि.३८६
ता रस में नित मगन असद् मू.१६२
ताकी दारु सीढी करि प्रि.४८७
ताकी नारी प्यारी प्रभु प्रि.४५७
ताको अनुभाव शुभ शंख प्रि.७५
ताको तो प्रमान भगवान् प्रि.१६४
ताको सुत विट्ठल सुदास प्रि.३४८
तात मात डर खेत थोथ मू.६२
ताते तजि दियौ गेह प्रि.३१५
तातें देवौ त्यागि मन प्रि.५८५
तादृश ह्वै तिहिं काल मू.६३
तान मान सुर ताल सुलय मू.१८०
तामें गई सेवा इन बडोई प्रि.१९९
तामैं एककण्ठ करि प्रि.३३४
ताय तोलि पूरौ निकष ज्यौं मू.१६८
ताल मृदंगी वृक्ष रीझि मू.१२७
तासौं दसगुनी लीजै प्रि.६०५
ताहि सुनि-सुनि कोटि प्रि.६१२
ताही के प्रताप आप प्रि.१३४
ताही ठौर बैठ्यो मानो प्रि.३०
ताही द्वार सेवा विसतार प्रि.३६५
ताही समय नाभाजू प्रि.१
ताही समैं फैलि गये प्रि.५१६
तितनेई गुरुदेव पधति मू.३१
तिन चरण धूरि मो मू.१२
तिन तैसें परतच्छ भूमि मू.६५
तिन पर स्वामी खिजे वमन मू.६५
तिनके दरशन काज गये मू.२६
तिनके नरहरि उदित मुदित मू.३७
तिनके रामानन्द प्रगट विश्व मू.३५
तिया रंग भीनी संग प्रि.५७
तिया रहै गर्भवती सती प्रि.३५१
तिया सकुचाय कर प्रि.५२
तिया सुनि कहै कृष्णरूप प्रि.५४
तिया सौं सनेह बिन प्रि.५०८
तिया हरि भक्त कहै प्रि.२५६
तिया हू न भेद जानै प्रि.४८७
तियासुत मात मग देखैं प्रि.२७१
तिरलोक पुखरदी बिज्जुली मू.९८
तिलक दाम अनुराग सबनि मू.१३६
तिलक दाम आधीन सुवर मू.१५७
तिलक दाम की सकुच मू.५१
तिलक दाम धरि कोइ ताहि मू.५६
तिलक दाम नवधारतन कृष्ण मू.१७३
तिलक दाम पर काम कौं मू.१७९
तिलक दाम सौं प्रीति मू.८४
तिलक दाम सौं प्रीति ह्रदै मू.१६५
तीनि कांड एकत्व सानि मू.४५
तीरथ करत साधु आये प्रि.४३५
तीसरी जु ठौर स्याम प्रि.३७३
तुमको जु नांव धरैं प्रि.६०९
तुम्हरो भवन और सकै प्रि.१३८
तुरक अजीज नाम धाम प्रि.५४१
तूंवर कुलदीपक सन्तसेवा नित मू.१७९
ते किये नारायण प्रगट मू.८७
तेज पुञ्ज बल भजन महामुनि मू.३८
तेरी उभै सुता ब्याह प्रि.३६५
तेरे जे मनोरथ हैं पूरन प्रि.१२७
तेरेई नगर माँझ निशि प्रि.७७
तेरेई वियोग अन्न-जल प्रि.५३६
तेरो छोटो भाई मेरो प्रि.५३५
तेली कों जिवायो भैंस प्रि.३०४
तेहिं मारग बल्लभ विदित मू.४८
तैसेई देइये श्याम वरष दिन मू.५४
तैसोइ पूत सपूत नूत फल मू.१७२
तोरि ताके टूक किये प्रि.३९९
तोही को दिखाई दई प्रि.२३२
त्रिधा भाँति अति अनन्य मू.१२२
त्रिभुवन छीनि लिये दिये प्रि.८७
त्रिविध ताप मोचन सबै मू.१५०
त्रेता काव्य निबन्ध करी मू.१२९
थानेश्वरी जगन्नाथ लोकनाथ मू.९४
थार में प्रसाद दियौ प्रि.५१२
दई कर पाती बात प्रि.६४
दई जाँघ काटि डारि प्रि.६१३
दई दास की दादि हुण्डी मू.१०७
दई प्रभु सैन जिनि आवो प्रि.१०३
दई बेटी ब्याहि कहि प्रि.२२२

दई मंगवाय वस्तु राखियो प्रि.४१९
दई लिखि चीठी जाओ प्रि.६२
दई लिखि हारि काशी प्रि.३२१
दई लै कै छाप पाप प्रि.२८९
दई लै जिवाय गाय प्रि.१३४
दई लै दिकाय देह प्रि.२२०
दई लै मसाल हाथ प्रि.४३३
दई लौंडी संग लोभ प्रि.५२६
दई सेवा वाहि और प्रि.४१६
दई सो लुटाय जानी प्रि.५१३
दक्षिण में रंगनाथ नाम प्रि.२१२
दच्छनि दिसि विष्णुदास गाँव मू.१५७
दधिमुख द्विविद मयन्द मू.२०
दधीचि पाछैं दूसरि करी मू.१८५
दम्पति सहज सनेह प्रीति मू.१९८
दयादृष्टि बसि आगरैं कथा मू.१६७
दयौ पै न याहि दयौ प्रि.५३४
दरसन आयो राना रूप प्रि.२२७
दरसन आवैं लोग नाना प्रि.२६४
दरसन करि हिये भक्ति प्रि.२९७
दरसन काज महाराज मान प्रि.१२३
दरसन दूर राज प्रि.५४४
दरसन परम पुनीत सभा मू.१३१
दरसन पुनीत आशय उदार मू.१३३
दरसन भयौ जाय पाँय प्रि.५६९
दलहा पद्म मनोरथ राँका मू.९७
दश आठ स्मृति जिन मू.१८
दशधा मत्त मराल सदा मू.१६५
दशधा सम्पति सन्त बल मू.११८
दशम श्लोक सुनि प्रि.९८
दशरथ वत मान कियो प्रि.३८
दसधारस आक्रान्ति महत मू.७२
दसरथ सुत जानौं सुन्दर प्रि.५१८
दातुन के करिवे को प्रि.६०८
दान केलि दीपक प्रचुर अति मू.१६१
दामोदर साँपिले गदा ईश्वर मू.१०५
दारुण वियोग अकुलात प्रि.९५
दारुमई तरवार सारमय रची मू.५२
दास प्रयाग लोहंग गुपाल मू.१००
दासकों जु डारी चोट प्रि.२४४
दासत्व अनन्य उदारता मू.१२०
दासनि के दासत्व कौ चौकस मू.१६९
दासनिको दास अभिमान प्रि.७६
दाह कृत्य जों बन्धु न्यौति मू.३३
दाहिमा वंश दिनकर उदय मू.३८
दिन दिन प्रति रूख प्रि.१४४
दिन दिन बढ्यो कछू प्रि.१२८
दिन हो दिवारी कौ प्रि.२३३
दिनकरसुत हरिराज मू.२०
दिये पट भूषण लै प्रि.३५२
दिये वे विडारि धयौ प्रि.४१६
दियो चरणामृत लै कियो प्रि.११८
दियो छोड़ि तानौ बानौ प्रि.२७२
दियो वास आश्रम में प्रि.३३
दियो सरबसु करि अति प्रि.१०२
दियो सिलाटूक लैके नाम प्रि.१९८
दियो सुत विष रानी प्रि.२०६
दियो सैन भोग आप प्रि.३१६
दियो सौंपि भार तब प्रि.२१३
दियो हाप भारी बात प्रि.२५९
दियौ कर दाहिनो में प्रि.६०५
दियौ गृह त्यागि हरिसेवा प्रि.५३१
दियौ दरसन आय साँच प्रि.६१३
दियौ पट आधौ फारि प्रि.२९२
दियौ पत्र हाथ लियो प्रि.५२४
दियौ लै बताय घर प्रि.४३५
दियौ लै भंडारी कर प्रि.३४२
दियौ लै भण्डार खोलि प्रि.४६७
दियौ है सुपन प्रभु प्रि.४२७
दियौं मैं वृकासुर को प्रि.४३१
दिल्ली के बजार में प्रि.३४४
दिल्लीपति पातसाह प्रि.५१५
दिवदास वंश जसोधर सदन मू.१०९
दिव्य भोग आरती अधिक मू.९५
दीजै आज्ञा मोहिं सोई प्रि.८९
दीजै करामात जगख्यात प्रि.५१५
दीपक बराइ जोपै देखै प्रि.१६७
दीयौ धन घोरा कछू प्रि.२९६
दीरघ कमाऊ लघु प्रि.५३७
दुखी पिता माता देखि प्रि.२६०
दुरवासा ऋषि सीख प्रि.३९
दुर्लभ मानुष देह कौं लालमती मू.१९९
दुर्वासा प्रति स्यात दास मू.२०२
दुष्ट किये निर्जीव सब मू.५५
दुष्ट डारयो मारि गरे प्रि.९९
दुष्ट सब मारे प्रभु प्रि.५४१
दुष्ट सिरमौर भूप लखि प्रि.३९१
दुष्टनि दोष विचारि मृत्यु मू.११५
दुष्टनि समुझि कही कीनी प्रि.१५२
दूदा नारायणदास नाम मांडन मू.१३९
दूध जितौ होय सो प्रि.४२३
दूध बरताई लै मलाई प्रि.३६९
दूबरो जाहि दुनियाँ कहै मू.१६८
दूर ते कबीर देखि प्रि.२७६
दूर-दूर गांवनि में प्रि.२८०
दूषण और भूषण हूँ प्रि.३३५
दूसरौ अनुज जानौ खाय प्रि.५३२
दृढ हरिभक्ति कुठार आन मू.७५
दृष्टि सौं न देखै कही प्रि.६०७
देखत कौ तुलाधार दूर आसै मू.१५६
देखत विमुख जाय पाँय प्रि.२११
देखत सरूप सुधि तन प्रि.३१८
देखत सिंहासन ते कूदि प्रि.२८
देखत ही उडि जात प्रि.२१६
देखत ही ऋषि जल प्रि.३२
देखत ही देखत में पीड़ा प्रि.३१९
देखा-देखी शिष्य तिनहुँ मू.६५
देखि आये शाह दौरि प्रि.४३८
देखि उत्साह भूप प्रि.२५६
देखि कुंज-कुंज लाल प्रि.४७९
देखि कै प्रभाव फेरि प्रि.२७७
देखि तन त्यागे पति प्रि.२५७
देखि देखि वृन्दावन मन प्रि.३२५
देखि द्वार भीर पगदासी प्रि.१३६
देखि नई बात गात प्रि.२८९
देखि पति मेरौ और प्रि.५७४
देखि पति सासु आदि प्रि.२०४
देखि प्रीति रीति हम प्रि.५८३
देखि बिकलाई प्रभु प्रि.७०
देखि भई आखें दीन प्रि.२६७
देखि भई मतवारी प्रि.३४५
देखि भक्तिभाव चाव भयो प्रि.१७९
देखि रिझावर रीझि प्रि.३४४
देखि लीनी वेई काहू प्रि.१३६
देखि सो प्रसाद बड़ौ प्रि.३१६
देखि सो सचाई सुखदाई प्रि.१४३
देखिके मगन भयो लयो प्रि.१८९
देखिकै प्रसन्न भयौ प्रि.२९५
देखिकै लजानौं कहा कियौं प्रि.१९५
देखिकै विकलताई सदा प्रि.४२
देखिकै विभुति सुख प्रि.५४
देखियौ निहारिकै विचार प्रि.४८१
देखिवे कौं चाहै नीकै प्रि.५१५
देखी दिन तीनि फेरि प्रि.४६
देखी नृप प्रीति रीति प्रि.५९१
देखी पोथी बाँच नाम प्रि.५१२
देखे चहुँदिशि गाडी कहुँ प्रि.२४४
देखे नभ भूमि द्वार प्रि.११२
देखे भेषधारी दस बीस प्रि.६००
देखे रास मण्डल में प्रि.३७६
देखे सब भोग मैं न प्रि.५८९
देखे सेतबार जानी कृपा प्रि.२२८
देखै फिरि फिरि पाछैं प्रि.२५४
देखै महतारी मग बेटा प्रि.२२०
देखै हाँफै घोरो अहो प्रि.२३२
देखैं आइ नाहीं प्रभु प्रि.१८८
देखैं जो नुहार माला प्रि.२३७
देखैं नहिं मुख मेरो प्रि.२६८
देखैं राम कैसो कहि प्रि.५१६
देखो श्याम आयो मित्र प्रि.५५
देखौ बढवारि जाहि प्रि.६
देखौ साधुताई धरी शीश प्रि.२२२
देख्यो एक सर खग रह्यो प्रि.१०३
देख्यो जब कष्ट तन प्रि.३५१
देख्यो बादशाह भाव प्रि.२७९
देख्यो मुख चाहौं लाल प्रि.७०
देख्योई चहति तऊ कहति प्रि.५४६
देख्यौ मृदु हास कोटि प्रि.१३१
देख्यौ हूँ प्रभाव ऐपै प्रि.४७७
देख्यौं मैं विचारि हरिरूप प्रि.५४८
देत हुते चौका दोऊ प्रि.५३०
देबौ गुण लियौ नीके प्रि.३२०
देमा प्रगट सब दुनी रामाबाई मू.१७०
देय दमामौ पैंज विदित मू.१५६
देवधुनी तीर सो कुटीर प्रि.११५
देवधुनी सोत हो अठारै प्रि.१६३
देवल उलट्यो देखि सकुचि मू.४३
देवा हित सितकेश प्रतिज्ञा मू.५२
देवा हेम कल्यान गंगा मू.३९
देवाचारज द्वितीय महामहिमा मू.३५
देवानन्द नरहरियानन्द मू.१००
देवी अपमान ते न प्रि.६६
देवी के पुजायवे कौं प्रि.४७३
देवी कों प्रसन्न करैं प्रि.४०४
देवीको स्थान काहू प्रि.३३८
देवे की प्रतिज्ञा करो प्रि.९०
देवौ गिरिधारीलाल जौ प्रि.४७२
देवौ प्रभु सेवा माँगे प्रि.४१५
देवौ मोकौं तातौ करि प्रि.५३७
देसी सारँगपाणि हंस ता मू.१२८
दैकैं बहु भाँति सो प्रि.१५५
दोऊ तिया पति देखैं प्रि.२९१
दोऊ तुम भाई करौ प्रि.३१३
दोऊ मिलि सोवैं रितु प्रि.६०८
दोहा लिखि दीनौ अकबर प्रि.५०१
दौरयौ सुख पाइ चाइ प्रि.६६
दौरिकै निशंक लियो प्रि.६१
दौरे नर ताही समै प्रि.५९९
द्यौसा एक गाँव तहाँ प्रि.११७
द्रव्य तौ न चाहौं प्रि.३५३
द्रौपदी सती की बात प्रि.७१
द्वादश प्रसिद्ध भक्तराज प्रि.२०
द्वादश बरष माँझ भयो प्रि.१२७
द्वादश सुश्लोक लिखि दीजे प्रि.१४९
द्वादशी की आधी रात प्रि.२४३

द्वार पै रह्यौ न प्रि.४८
द्वार मैं न जान देत प्रि.२८३
द्वारका के नाथ जब प्रि.७१
द्वारका कौ संग सुनि प्रि.५३६
द्वारका देखि पालण्टवती मू.१४१
द्वारावतीनाथ देखौं प्रि.४८२
द्वारिका के ढिंग ही प्रि.२४२
द्विज कहै नाहीं कैसे प्रि.२३९
द्विज लखि गायनि में प्रि.३०८
द्विजन बुलाई कही यही प्रि.१४८
द्वै सुत दीजै मोहिं कवित मू.१०९
धन के जतन फिरे प्रि.२१२
धनको पठावै पिता ऐ प्रि.३२७
धनहू बताओ खोदि प्रि.३४७
धनाकौ दयाल ह्वै कै प्रि.३०८
धनु पद मांहि प्रि.१९
धनुष बान सौं प्रीति मू.८३
धन्य धना के भजन को मू.६२
धरनौ दे रहे कहे नृप प्रि.४६४
धरयौ पितु मातु नाम प्रि.२३
धरयौ पै न पीयैं अरयो प्रि.१३३
धरा धाम धन काज मरन मू.१४१
धरानन्द ध्रुवनन्द तृतिय मू.२१
धरि लई सीस देऊँ संग प्रि.१३५
धरी दोऊ मन्दिर में प्रि.१४८
धरीही पिटारी फूल माला प्रि.१२२
धरे सब जाय प्रभु सुकर प्रि.१६४
धरे हैं रुपैया ढेर प्रि.४३७
धर्मदास सुत शील सुठि मन मू.१७६
धर्मशील गुनसींव महा भागवत मू.१७४
धयौ जलपात्र एक प्रि.५६९
धयौ जानराय नाम जानि प्रि.५७०
धाम धन वाम सुत प्रि.४१
धाम पधराय सुख पायकै प्रि.५६४
धारी उर प्यारी प्रि.५
धारी उर माल भाल प्रि.४५९
धारौ उर और सिरमौर प्रि.४४५
धुनि तेरे कान परै प्रि.२४०
धूप दीप नैवेद्य बहुरि मू.११४
धूम परी गाँव झूमि प्रि.५४९
धृष्टी विजय जयन्त नीति मू.१९
धोवौ हाथ बैठौ आप प्रि.५३०
ध्यान चतुर्भुज चित धर्यौ मू.१६
ध्रुव उद्धव अम्बरीष मू.९
ध्रुव गज पुनि प्रह्लाद राम मू.२०२
नग अमोल इक ताहि मू.११३
नट्यौ सतबार जब कही प्रि.६०७
नतरु सुकृत भुजे बीज मू.२१०
नदी चढी रही भारी प्रि.१६५
नन्द गोप उपनन्द ध्रुव मू.२२
नन्द सुनन्द सुभद्र भद्र मू.८
नन्दकुंवर कृष्णदास कौं निज मू.१८०
नन्दसुवन की छाप कवित मू.१०२
नयौ मँगवाय तन छ्वाय प्रि.४८५
नरदेव उभै भाषा निपुन मू.१४०
नरपति कै दृढ नेम ताहि मू.५६
नरबाहन बाहन बरीस जापू मू.१०५
नरवरपुर ताकौ राजा प्रि.६०१
नरसिंह कौ अनुकरन होइ मू.४९
नरसिंह भल भगवान् दिवाकर मू.१५०
नरसी कही ही भलै प्रि.४४८
नरसी बरात मत जानौं प्रि.४५४
नरसी सौं कहें गहें प्रि.४५३
नरहड ग्राम निवास देश मू.१११
नरहरि गुरु परसाद पूत पोते मू.१६३
नरहरिदास जनक भीषम मू.७
नवधा दशधा प्रीति आन मू.१२०
नवधा प्रधान सेवा सुदृढ मू.४८
नवधा भजन प्रबोध अनन्य मू.१११
नवरस मुख्य सिंगार विविध मू.१२६
नवलकिशोर कभूँ नन्द प्रि.५४२
नवलकिशोर दृढव्रत अनन्य मू.१७६
नश्वर पति-रति त्यागि कृष्णपद मू.१६०
नहुश जजाति दिलीप मू.१२
नाक सकोचहिं विप्र तबहिं मू.३३
नाचत बजावत ये चलीं प्रि.४४४
नाचत सब कोउ आहि काहि मू.१४५
नाना भेंट आवैं हित प्रि.४८४
नाना भोग राग करैं प्रि.३७५
नाना विधि पाक धरैं प्रि.३२५
नानाविधि पाक सामा प्रि.५४६
नानाविधि पाक होत प्रि.५७४
नानाविधि रागभोग प्रि.५४५
नाभा जू कौ अभिलाष प्रि.६३३
नाभा जू बखान कियौ प्रि.५७५
नाम अजामिल साखि नाम मू.६८
नाम अधिक रघुनाथ तें मू.६८
नाम तिलोचन शिष्य सूर मू.४८
नाम दीपकुंवरि सो बड़ी प्रि.६२२
नाम धरि रास औ प्रि.३७६
नाम नरायन मिश्र वंश मू.१३४
नाम प्रीति नाम बैर नाम मू.६८
नाम महानिधि मन्त्र नाम मू.६८
नाम लेत निहपाप दुरित तिहिं मू.७२
नाम हो कल्यानसिंह जात प्रि.५२५
नामदेव प्रतिज्ञा निर्बही ज्यों मू.४३
नामदेव हारे हरिदेव कही प्रि.४०३
नामा की तो बात प्रि.१८०
नामा ज्यौं नँददास मुई मू.५४
नारायण आख्यान दृढ तहँ मू.२६
नारायणदास सुखरासि प्रि.६३३
नारायन बड़े महा अहो प्रि.४४७
नारि सों कह्यो है प्रि.१७१
नाहर जू पींजरा में प्रि.५५५
निकट निरन्तर रहत होत मू.८३
निकट बरेली गाँव तामें प्रि.२४८
निकसत द्वार जब देख्यौ प्रि.५९४
निकसत धाय चाय पग प्रि.११६
निकसत पूछैं अहो कहाँ प्रि.१८१
निकसी झमकि द्वार प्रि.२५०
निकसी पुरान बात करै प्रि.४९४
निकसे पदम आय पूछी प्रि.३११
निकसे बाजार ह्वै कै प्रि.२७६
निकसे विचारे कहूँ दीजै प्रि.४२९
निकस्यौ विपिन आनि प्रि.६१
नित सेवत सन्तनि सहित मू.१८७
नित ही लड़ावैं भाव प्रि.३९८
नितही विचारे पुनि प्रि.२५८
नितहीं चलत ऐपै चलन प्रि.२०५
नित्यान्त (कृष्ण) चैतन्य की मू.७२
निद्रावस सो भूप वदन ते मू.५७
निन्दकजन अनिराय कहा मू.११९
निपट अकेली देखि प्रि.४१७
निपट अधीन गाँव केतिक प्रि.३९१
निपट अधीन दीन भाषि प्रि.२४७
निपट अमोलपट हिये प्रि.३४०
निपट नरहरियानन्द कौ मू.६७
निपट निकट वास धौरहा प्रि.५२५
निपट बिचारी बुरी देत प्रि.१६०
निपट मगन किये नाना प्रि.६१०
निपट विकट भाव होत प्रि.३६४
निमि अरु नव योगेश्वरा मू.१३
निम्बादित्य आदित्य कुहर मू.२८
निम्बादित्य नाम जाते प्रि.१०६
निम्बादित्य सनकादिका मू.२९
निरअंकुश अति निडर रसिक मू.११५
निरखत हरकत ह्वदै प्रेम मू.७६
निरखि निहाल भयौ प्रि.४७९
निरगुन सगुन निरूप तिमिर मू.११६
निरमल कुल काँथड्या धन्य मू.१६०
निरवर्त्त भये संसार ते ते मेरे मू.१४७
निर्जन वन में जाय दुष्ट मू.५५
निभ्य अननि उदार रसिक मू.११८
निर्मत्सर निहकाम कृपा करुणा मू.१३८
निर्मल रति निहकाम अजा तें मू.१७३
निर्विलीक आसय उदार मू.१३२
निर्वेद अवधि कलि कृष्णदास मू.३८
निशि दिन ध्यान तजे प्रि.२५७
निष्ठा रिझवार रीति प्रि.६०८
निसि को सुपन माँझ प्रि.५२०
निसि दिन गान रस प्रि.३६६
निसिदिन प्रेम प्रवाह द्रवत मू.६४
निसिदिन यहै विचार दास मू.१६५
निसिदिन लग्यौ पग्यौ प्रि.१८९
निसिदिन सुन्यौ करै प्रि.५४४
निहकिञ्चन इक दास तासु मू.५३
निहिकिंचन भक्तनि भजैं हरि मू.१७५
नीके अन्हवाय पट प्रि.३४५
नीचे मान मन्दिर सो प्रि.४८६
नीठ नीठ नाम दियौ प्रि.३१२
नीठि-नीठि ल्याये हरि प्रि.६१५
नीर खीर विवरन परम मू.५९
नीर भरि घट सीस प्रि.४९१
नील मोरध्वज ताम्रध्वज मू.११
नीलाचल धाम तहाँ लीला प्रि.१९२
नीलाचल धाम तामें प्रि.१४८
नूपुर सो टूटि छूटि प्रि.३७१
नूपुरनि बाँधि नाचि प्रि.४५६
नृतक नारायणदास कौ प्रेमपुंज मू.१४५
नृत्य करत आमोद विपिन मू.१९४
नृत्य करत नहिं तन मू.११२
नृत्य करि गाई रीझि प्रि.६०५
नृत्य गान गुन निपुन मू.८८
नृत्य गान तान भावभरि प्रि.३४५
नृप अन्न त्यागि दियौ प्रि.५५२
नृप न प्रतीति करै प्रि.२२५
नृप समझाय राख्यौ देश प्रि.५५४
नृप सो मलेछ बोलि प्रि.१३४
नृपति जयसिंह जू सौं प्रि.६२२
नृपति द्वार ठाढे रहैं मू.९१
नृपति बुलाइ कही हिये प्रि.१५५
नृपति समाज मैं प्रि.३८६
नृपति सिखायौ जाय प्रि.४४६
नृपसुत भक्त बडो अबलौं प्रि.१२०
नृपहू सुनत अब लागि प्रि.४७
नेकु आप चलौ उह प्रि.५५९
नेकु ध्यान कियौ तब प्रि.५५८
नेकु मन आई सुखदाई प्रि.३५९
नेकु सावधान ह्वैकै प्रि.६०९
नेह परसपर अघट निबहि मू.२०१
नेह भरि भारी देह प्रि.४२५
नेह सरसाई लै दिखाई प्रि.३४३
नैननि नीर प्रवाह रहत मू.७४
नौका पठवाई द्वार लाव प्रि.१६८
नौगुण तोरि नूपुर गुह्यौ मू.९२

नौबत बजाई द्वार प्रि.५५३
न्हाइबे को मग झारि प्रि.३१
न्हाइवे की बाट निशि प्रि.३४
न्हात ही विदुर नारि प्रि.५१
पंचरस रस सोई प्रि.५
पंडित समाज बडे-बडे प्रि.१६४
पकि रहे आँब माँगे प्रि.२४९
पकि रह्यौ खेत सन्त प्रि.४९६
पक्व वृक्ष ज्यौं नाय मू.७८
पक्षपात नहिं वचन सबही मू.६०
पगनि घूँघरू बाँधि राम कौ मू.१२८
पट्टा दूना-दून पावौ प्रि.२२६
पट्टा युगलाख खात सेवा प्रि.२२४
पढे सब ग्रन्थ संग प्रि.५२४
पण्डा गोपीनाथ मुकुन्दा मू.१०१
पण्डित कला प्रवीन अधिक मू.८६
पण्डित प्रबल दिग बिजै प्रि.३२१
पण्ढरनाथ कृत अनुग ज्यों मू.४३
पति को निहोरो ताते प्रि.९३
पति को बुलाइ कही प्रि.४९०
पति को सुनाई भई प्रि.४८७
पति पर लोभ न कियौ टेक मू.१४२
पतित पावन नाम प्रि.२६६
पत्रावलम्ब पृथिवी करी व मू.३५
पद पढत भई परलोक गति मू.१७७
पद रचना गुरु मन्त्र मनौं मू.६४
पद लीनौ परसिद्ध प्रीति जामें मू.१४५
पद लै बनायौ भक्तिरूप प्रि.४९९
पदपंकज बाँछौ सदा मू.१०
पदपराग करुणा करौ जे मू.१४
पदम पदारथ राम दास मू.९६
पद्म अठारह यूथपाल राम मू.२०
पद्म संकु पन प्रगट ध्यान मू.२७
पद्मखण्ड पद्मा पद्धति मू.६९
पद्मनाभ गोपाल टेल टीला मू.३९
पद्मपुत्र ज्यौं रह्यौ लोभ की मू.१६४
पन्थ को छुटाय चहैं प्रि.२५३
पयद बकुल रसदान मू.२३
पर अर्थ परायन भक्त ये मू.९८
पर उपकार विचार सदा मू.१७६
पर उपकारक धीर कवित मू.१३०
पर दुख विदुख शुाघ्य वचन मू.१४०
परदा न सन्त सौं है प्रि.६०८
परम धरम कौ सेतु विदित मू.१३८
परम धरम दृढ करन देव मू.१४८
परम धरम नवधा प्रधान मू.१५५
परम धरम साधन सुदृढ मू.१५६
परम धर्म विस्तार हित प्रगट मू.१९०
परम धर्म श्रीमुख कथित मू.१७
परम पारषद समुझि जानि मू.१८९
परम प्रीति किये सुवश शील मू.१९३
परम भक्ति परताप धर्मध्वज मू.१६३
परम रसज्ञ अनन्य कृष्णलीला मू.८७
परमधर्म प्रति पोषकौं संन्यासी मू.१८१
परमधर्म प्रतिपाल सन्त मारग मू.१८४
परमधर्म प्रह्लाद सीस देन मू.१७९
परमहंस वंशनि में भयौ मू.१०७
परमहंस संहिता विदित टीका मू.४५
परमानन्द प्रसाद तें माधौ मू.४५
परमारथ सौं काज हिये मू.१६५
परयो द्विज दुखी निज प्रि.१९०
परयो नीर कूदि नेकु प्रि.३०
परयो बडो सोर दृग प्रि.१७०
परयो सोच भारी दुःख प्रि.१४१
परयो सोच भारी नृप प्रि.१४९
परयौ सोचभारी कहा प्रि.५९
परवत कन्दरा में दरसन प्रि.११९
परशुराम रघुवीर कृष्ण मू.५
परसि पिछाने लपटाने प्रि.९६
परसि प्रणाली सरस भई मू.६१
पराचीनबन्हि आदि कथा प्रि.७४
परिचर्या ब्रजराज कुंवर कें मू.१३१
परिचै प्रचुर प्रताप जानमनि मू.१८७
परिपाटी ध्वज विजै सदृश मू.८६
परे कूदि नीर कछु सुधि प्रि.१६६
पयौ कोऊ काम आय प्रि.६०१
पयौ बधू पाँय तेरी प्रि.२२१
पयौ सोच भारी गिरिधारी प्रि.३४६
पयौ अति मेह देह प्रि.६१४
पयौ सोच भारी कहा प्रि.५८५
पयौ सोच भारी तब प्रि.६०२
पयौ सोच भारी मेरी प्रि.४३०
पयौई अकाल बेटा-बेटी प्रि.५७३
पर्वत लोकालोक ओक मू.२४
पलक परै जो बीच कोटि मू.२६
पल्यो साधु सीथ सौं प्रि.२०८
पहिले जु खाय बनमांझ प्रि.४१४
पहिले वेद विभाग कथित मू.७०
पहुँचत भाष्यो जाइ प्रि.८८
पहुँची पुकार रामानन्दजू प्रि.२६९
पहुँची भवन सासु देवी प्रि.४७२
पहुँचे नृपति पास आदर प्रि.५१५
पहुँचे भवन आइ दई प्रि.२०३
पहुँचे भवन जाइ चहुँ प्रि.७९
पहुँचे वैकुण्ठ जाय प्रि.४०
पहुँचे हुजूर भूप खोलिकै प्रि.५००
पहुँच्यौ निकट जाय प्रि.४२५
पाँइ लपटाय अंग धूरि में प्रि.११४
पाँच दोय सत कोस ते मू.११३
पाँय परि गये लैकै प्रि.५६०
पाँय परि माँगि लई प्रि.५५४
पाँयनि को धारियो जू प्रि.७९
पाँयनि नूपुर बाँधि नृत्य मू.१२१
पाँव परछाल कही प्रि.४८८
पांय परि आँसू प्रि.१३
पाक को अबार भई प्रि.१०६
पाग मधि पाती छबिमाती प्रि.६३
पाछिले कवित्त माँझ दुहुँन प्रि.१९९
पाछे साष्टांग करी करी प्रि.३८८
पाछे सेन गयौ पंथ प्रि.३०९
पाछे हनुमान आये बोले प्रि.५१०
पाछें आये लोग शोक प्रि.५७९
पाण्डव विपति निवारि दियौ मू.२०२
पाण्डवन मध्य मुख्य प्रि.७५
पातर समेटि लई सीत प्रि.३७२
पातरि उठाय श्रीगुसाईं प्रि.३८६
पाती लैके चल्यो विप्र प्रि.४३
पात्र और अपात्र यों प्रि.४६५
पाथर लै दियो अति प्रि.३०६
पाद प्रछालन सुहथ राय मू.११४
पादप पीडहिं सींचते पावै मू.२०३
पादपद्म ता दिन प्रगट मू.३४
पानी सौं न काज प्रि.५६६
पायो पकवान वन मध्य प्रि.२३३
पायो लै प्रसाद स्वाद कहि प्रि.११३
पायो हम सब अब प्रि.२१८
पारथपीठ अचरज कौन सकल मू.१७९
पारषद मुख्य कहे प्रि.२५
पारस पषान करि जल प्रि.३६७
पारीष प्रसिद्ध कुल काँथड्या मू.१४३
पार्वती पूछें किये प्रि.२२
पालकी बिठाइ लिये प्रि.१५४
पावै आशै कौन हृदय प्रि.४६६
पावै जो प्रसाद तब जीभ प्रि.१०४
पावैं प्रभु जब तब प्रि.३९९
पावैं प्रभु सुख हम प्रि.२१३
पावैं भक्ति अनपायिनी जे मू.१९
पिंगल काव्य प्रमान विविध मू.१४०
पिता को सराध नेकु प्रि.१६५
पिता गृह त्यागि आइ प्रि.१७८
पिता घर आयो पति प्रि.८५
पिता सौं पठाई कहि प्रि.४३८
पितासों निशंक ह्वै कै प्रि.४३
पिप्पल द्रुमिल प्रसिद्ध मू.१३
पिप्पल निमि भरद्वाज मू.१२
पीतर पटतर विगत निकष मू.४७
पीपा प्रताप जग वासना मू.६१
पीपा भावानन्द रैदास धना मू.३६
पीयो सुख दीयो जब प्रि.१३३
पीवौ जल कही आबखाने प्रि.५९८
पुर ढिंग कूप तहाँ प्रि.५२३
पुर ढिंग चारो ओर प्रि.४६५
पुर प्रवेश रघुवीर भृत्य मू.२०१
पुर मथुरा ब्रजभूमि रमत मू.१४८
पुर मथुरा सौं प्रीति प्रीति गिरि मू.१९९
पुर में फिरत उभै प्रि.४४२
पुरुष विशेष पदकमल प्रि.१९
पुरुषोत्तम परसाद तें उभै मू.१४३
पुरुषोत्तम सौं साँच चतुर मू.९७
पूँछे ते कही है बालमीकि प्रि.८२
पूछि पूछि आये तहाँ प्रि.३६
पूछिकै पठाय दियौ वानै प्रि.२३२
पूछिबेकों फेरि गये करौ प्रि.३१४
पूछी अजू कहा कियौ प्रि.४०२
पूछी कही कोढी एक प्रि.३८५
पूछी चले कहाँ कही प्रि.२३६
पूछी तुम कौन काके प्रि.२५१
पूछी प्रभु भयो कहा प्रि.१९७
पूछी वा खवासिन सौं प्रि.५४७
पूछे ते बतायो खम्भ प्रि.९९
पूछे नृप बोले कासों कैसे प्रि.१२१
पूछे भक्त भूप ठौर प्रि.९८
पूछे भूप लोग कह्यौ प्रि.५५३
पूछैं आनि लोग कौने प्रि.१३८
पूछैं कहौ बात ए प्रि.२९२
पूछैं नृप कहौ अहो प्रि.४७०
पूछैं नृप नर कोऊ प्रि.१५६
पूछैं पिता-माता पट प्रि.४७१
पूछैं बार-बार सीस प्रि.१५७
पूछौ मत बात सुख प्रि.५४३
पूछ्यो भूप तियासौं जू प्रि.२०६
पूछ्यो सो जनायौ ढूंढि प्रि.३२५
पूछ्यो हरि पायबे कौ प्रि.२८३
पूनौं में प्रकास भयौ प्रि.४८९
पूरन इन्दु प्रमुदित उदधि मू.१२२
पूरन प्रगट महिमा अनन्त मू.१८३
पूरब जनम कोऊ मेरे प्रि.४५
पूरबजा ज्यौं बरनतै सब मू.२०३
पूरबजा ज्यौं रीति प्रीति मू.६९
पूरबमें ओकसो तिलोक प्रि.४०६
पृथीपति आनिकै मुहीम प्रि.५३९
पृथीराज कुल दीप भीम सुत मू.१७४
पृथीराज नृप कुलबधू भक्तभूप मू.१४२
पृथु पद्धति अनुसार देव मू.१२५
पृथु परीक्षित शेष सूत मू.१०

पृथ्वीपति आयौ वृन्दावन प्रि.५९३
पृथ्वीपति सम्पति लै प्रि.५००
पृथ्वीराज अंग के अँगोछा प्रि.४८५
पृथ्वीराज परचौ प्रगट मू.११६
पृथ्वीराज राजा चल्यौ प्रि.४८१
पैयत न पार तन हारि प्रि.१६६
पैहारी परसाद तें शिष्य मू.३९
पोथी की तो बात प्रि.१५२
पोथी को प्रताप स्वर्ग प्रि.१५१
पोथी तुम बाँचौ हिये प्रि.५११
पोथी लेखन पान अघट मू.९३
पौगण्ड बाल कैशोर गोप मू.७४
प्याइबे की आस करि प्रि.१३१
प्यार को विचारै न प्रि.४८९
प्रगट अंग में प्रेम नेम सौं मू.१९५
प्रगट अमित गुन प्रेमनिधि मू.१६७
प्रगट दिखायो रूप सुन्दर प्रि.२३७
प्रगट प्रभाव देखि जान्यो प्रि.१०६
प्रगट लै कियो रूप प्रि.३६१
प्रगट विभौ जहाँ घोष मू.७९
प्रगट्यौ सरूप निज प्रि.३०१
प्रचुर पयध लौं सुजस मू.११०
प्रचुर भयो तिहुँ लोक मू.४४
प्रतिबिम्बित दिवि दृष्टि मू.७३
प्रतिमाको फारि बिकरारि प्रि.४०४
प्रथम जनम माँझ बड़ौ प्रि.५३५
प्रथम निरखि नाम हरखि प्रि.५८२
प्रथम भवानी भक्त मुक्ति मू.६१
प्रबुध प्रेम की राशि मू.१३
प्रबोधानन्द रामभद्र जगदानन्द मू.१८१
प्रभु की टहल निज प्रि.५३०
प्रभु के भूषन देय महामन मू.१५२
प्रभु जू स्वप्न दियौ प्रि.४२२
प्रभु ने परीक्षा लई प्रि.२२३
प्रभु पधराये नाम लाल प्रि.६१५
प्रभु पहिराय कह्यौ गाय प्रि.४४६
प्रभु पै बचाय लीजै प्रि.२७९
प्रभु लै जिंवाय राँड प्रि.४६१
प्रभु सों सचाई जग प्रि.२६
प्रभु ही जनाई मन प्रि.१५०
प्रभुता पति की पधति प्रगट मू.१७७
प्रभू दास के काज रूप मू.६३
प्रभो तिहारी वस्तु वदन मू.११३
प्रसाद अवज्ञा जानिकै पाणि मू.५०
प्रसाद की अवज्ञा तैं प्रि.१९३
प्रसिद्ध प्रेम की राशि मू.११२
प्रसिध बाग सों प्रीति मू.४१
प्रह्लाद आदि भक्त गये प्रि.६०४
प्राचीनबर्हि सत्यव्रत मू.११
प्रात भये चलै नाहिं प्रि.३०२
प्रात भये भूखे हरि प्रि.६१६
प्रान पयानौ करत नेह रघुपति मू.१८९
प्राननि कौं आगे धरौ प्रि.५२९
प्रियदयाल परसराम भक्त मू.१०२
प्रिया अति गति लई प्रि.३७१
प्रीति की न रीति प्रि.१५९
प्रीति की सचाई यह प्रि.४९७
प्रीति रस रास सों प्रि.२६५
प्रीति रसरूप भई प्रि.४९
प्रीति हरिदासनसौं विविध प्रि.३८२
प्रेम की सचाई ताकी प्रि.५९२
प्रेम को विचार आपु प्रि.५२
प्रेम में न नेम हेम प्रि.५४९
प्रेम रसरास कृष्णदास प्रि.३४४
प्रेम ही की बात इहाँ प्रि.५१९
प्रेमकन्द मकरन्द सदा मू.२३
प्रेमकी जू बात क्यों हूँ प्रि.९६
प्रेमनिधि नाम करैं सेवा प्रि.५९४
प्रेमपुंज रसरासि सदा गद्गद मू.८५
प्रेमपुंज सुठि सील विनय मू.१२१
प्रेमसिंह सुत ताही काल प्रि.५५०
प्रेमी परम किशोर उदार मू.११८
प्रेमी भक्त प्रसिद्ध गान अति मू.१९४
प्रेरि दिये ह्रदै जाय प्रि.२६५
फट्यौ पट देखि नृप प्रि.१५०
फनीवंश गोपाल सुव रागा मू.१५९
फल की शोभा लाभ तरु मू.२०६
फाटि गई भूमि सब प्रि.१५७
फाटि जाय भूमि तौ प्रि.५२७
फिरत चौडोल चढे प्रि.३३३
फिरे दुख पाइ जाइ कही प्रि.१०३
फियौ आस पास भूमि प्रि.४१८
फूले देखौ कंज तब प्रि.१६३
फेंट ते निकासी ताल प्रि.१४३
फेर मारी लात अरे प्रि.५९८
फेरि कैसे आये सुनि प्रि.३१०
फेरि चाह भई दई प्रि.५३१
फेरि जिनि ऐसी करौ प्रि.३५९
फेरि नृप डौंडी सुनि प्रि.८४
फेरि मिलि माधै जू प्रि.३२१
फेरि सुधि आई देखि प्रि.६११
फेरिकै पठायो सुख प्रि.४४
फेरिकै बुलायौ करौ प्रि.३४८
फेरी नृप डौंडी यह प्रि.१५१
फेरी पुर डौंडी ताके प्रि.२२०
फैलि गई गाँव वाकौ प्रि.५०४
फोरैं कोट मारैं चोट प्रि.५१६
बंसी पहिराई द्विज भक्ति प्रि.३७०
बच्छ हरन पाछैं विदित सुनौ मू.५४
बछवन निवास विस्वास हरि मू.१९६
बजत मृदंग मुंहचंग प्रि.४३२
बड़ी ए गरज चले प्रि.५६७
बडी कृपा करी आज प्रि.८९
बडी तू अभागी बात प्रि.१८५
बडी ये लडाई लीन्ही प्रि.३८
बड़े अनुरागी ये तौ प्रि.३५७
बड़े आप धीर रहे ठाढे प्रि.३६०
बड़े आय कही चलौ प्रि.५३३
बड़े के अधीन रहै प्रि.५३२
बड़े गुरु सिद्ध जग प्रि.५८०
बड़े बड़भागी अनुरागी प्रि.६२८
बडे भक्तिमान निशिदिन प्रि.८
बडे सिद्ध जल प्रि.१२
बडेई असंग वे मतंग प्रि.३२
बड़ेई खिलारी वे रहे प्रि.२६४
बडेई दयाल सदा दीन प्रि.४१
बडेई दयाल सदा भक्त प्रि.२२८
बडेई प्रभाववान सकै प्रि.१५४
बड़ेई रैदास हरि दासनि प्रि.२६१
बड़ेई विरक्त अनुरक्त रूप प्रि.३८३
बड़े-बड़े दण्डी और प्रि.४४३
बड़ो गुरुनिष्ठ कछु प्रि.२५८
बडो निसकाम सेर प्रि.५३
बड़ोई अकाल पयौ जीव प्रि.३०५
बडोई प्रभाव देख्यो तैसे प्रि.२४७
बड़ोई समाज होते मानों प्रि.३५२
बड़ौ अपराध मानि साधु प्रि.३८७
बड़ौ त्रास भयौ नृप प्रि.४५६
बड़ौ भागवत विप्र प्रि.४६८
बड़ौ मूढ राजा मोजा प्रि.३००
बढत सुहाग याके पूजे प्रि.४७३
बढै दिन दिन चाव प्रि.५०
बदले की बेगारि मूंड वाके मू.६७
बद्रीनाथ उडीसे द्वारका सेवक मू.१०१
बद्रीपति दत्त कपिलदेव मू.५
बधिक बुलाय कही वेग प्रि.२१६
बधिकनि जानी जासों प्रि.२१८
बधू अति लाज भई प्रि.५०८
बन बन खेले बिन प्रि.४१२
बरखा सु रितु जित प्रि.५९४
बरजत आयौ भूप जायके प्रि.५९१
बरष हजार दश प्रि.२२
बरष हजार बीते भये प्रि.१०४
बरषा न भई सब प्रि.५६३
बरस पचास लगि विषै प्रि.५८९
बलिबन्ध नाम प्रभु बाँधे प्रि.२४५
बल्लभजू नाम लियो पृथु प्रि.१८७
बसत चित्तौर मांझ प्रि.२६६
बसत निवाई ग्राम स्याम प्रि.४९७
बस्यौ उर स्याम अभिराम प्रि.५८४
बहु सुख पाये पाये प्रि.४९२
बहुत काल तम निबिड उदै मू.१३७
बहुत काल बपु धारिकै मू.३६
बहुत ठौर परचै दियौ मू.१०८
बहुयौ माधवदास भजन बल मू.१९०
बहै दृग नीर कहै प्रि.५०४
बहै दृग नीर देखि प्रि.३९१
बाँचि आँच लागी मैं प्रि.६५
बाँदररानी विदित गंगा जमुना मू.१७०
बाँधिकै जंजीर गंगानीर प्रि.२७८
बाँधे जसुमति सुनि औरै प्रि.१९२
बाँबोली गोपाल गुननि गम्भीर मू.१५७
बांधि नीकी भांति पौढि प्रि.४१८
बांधौगढ बास हरि प्रि.३०९
बागमें समाज सन्त चले प्रि.३८७
बाढेल बाढ कीवी कटक मू.१४१
बात कवित बड चतुर चोख मू.१३३
बात सुनी रानी और प्रि.५०
बानी सुनि जानी चले प्रि.४०५
बाप महतारी मेरे कोऊ प्रि.१८१
बापी पधराय हाँकि जाय प्रि.२४३
बार न बाँकौ भयौ गरल मू.११५
बार बार कहैं नामदेव प्रि.१२९
बार बार पांव परै प्रि.३०७
बार बार पीवो कहूँ प्रि.१३२
बार-बार कहै कहा प्रि.५४३
बारमुखी लई संग मानौ प्रि.२७४
बाल वृद्ध नर नारि गोप मू.२२
बालक न होय यह प्रि.४३१
बालक निहारि जानी विष प्रि.२११
बालकृष्ण जसवीर धीर मू.८०
बालकृष्ण बडभरथ अच्युत मू.१०१
बालद लै धारे दिन प्रि.२७१
बालदशा बीठल्य पानि जाके मू.४३
बाल्मीकि मिथिलेश गये मू.११
बाल्मीकि वृद्धव्यास जगन मू.९९
बाहर निकासि मानो प्रि.१५३
बाहर भीतर विशद् लगी मू.१६८
बाहिरी टहल पात्र प्रि.४६
बितये बरस जब सरस प्रि.२८४
बिनस्यो ब्रह्मत्व कही श्रुति प्रि.१७९
बिना प्रभु आगें नृत्य प्रि.५६२
बिनु हरिभक्ति सब जगत प्रि.११७
बिनै बहु करी करी प्रि.३३६
बिनै व्यास मनो प्रगट ह्वै मू.७०

बिन्ध्याचल तिया सी न प्रि.८७
बिपिन पधारे आप जाय प्रि.३७६
बीकावत बानैत भक्तपन मू.१७९
बीच दिये रघुनाथ भक्त मू.५५
बीच दियो सो कहाँ राम मू.५५
बीछू कटवावौ कोटि साँप प्रि.६३४
बीठल टोंडे खेम पण्डा गूनौरै मू.१४९
बीठलदास हरिभक्ति के दुहुँ मू.१७७
बीत जात जाम तन प्रि.५८४
बीतत बरस मास आवै प्रि.५७६
बीति गई राति प्रात प्रि.१६९
बीते कैयो याम तब प्रि.२४०
बीते जाम चारि मरि प्रि.१४२
बीते दिन कोऊ नृप प्रि.६०३
बीते दिन तीन चार प्रि.३९३
बीते दिन तीन जानी प्रि.४१८
बीते दिन तीन धन प्रि.२९५
बीते दिन तीन प्रभु प्रि.५३८
बीते दिन तीन वा प्रि.५८७
बीते दिन तीनि अन्न प्रि.१८५
बीते दिन दोय निसि प्रि.४८२
बीते दिन बीस तीस प्रि.४६७
बीते दिन सात शिव प्रि.४३०
बीन लै बजाई गाई प्रि.१६९
बीन लै बजावै गावै प्रि.४८
बीनै तानौ बानौ हिये प्रि.२७०
बीरी चन्दन वसन कृष्ण को मू.१५२
बुद्ध कलक्की व्यास पृथु मू.५
बुद्धिके प्रमान उनमानि प्रि.३८३
बुधि प्रवेश भागौत ग्रन्थि मू.१११
बुरहानपुर ढिंग बाग प्रि.६१४
बूँदी बनियाँ राम मँडौते मू.१०६
बूड़त ही आगे भूमि प्रि.५३४
बूडिये विदित कन्हर कृपाल मू.१९१
बेई गुरु करौ जाय प्रि.४५९
बेचिकै बजार यों रुपैया प्रि.३४१
बेटी अति प्यारी प्रीति प्रि.४७२
बेटी एक क्वाँरी ब्याहि प्रि.४२७
बेटी कौ विवाह घर प्रि.६२५
बेटी चारि सन्तनि कौ प्रि.५७८
बेला भजन सुपक्व कषाय मू.९३
बैजयंती दाम भाववती प्रि.५
बैठी ढिग आइ केरा प्रि.५१
बैठी नृपसभा जहाँ प्रि.२७५
बैठे कृष्ण रुक्मिनी महल प्रि.२३६
बैठे जब भोजन कौ प्रि.५३४
बैठे ढिंग आय बोले प्रि.३३३
बैठे दोऊ जन कोऊ प्रि.१७६
बैठे निशि चौकी देत प्रि.३२
बैठे पिछवारे जाइ कीनी प्रि.१३७
बैठे भौन कौन देखि प्रि.४५७
बैठे मधुपुरी कील्ह मानसिंह प्रि.१२१
बैठे ये प्रसाद लेत लेत प्रि.३२२
बैठे रस भीजे दोऊ प्रि.४८९
बैठे वन मध्य जाइ प्रि.१७३
बैठे सुख पाइ फल प्रि.३६
बैठे हुते एकान्त आय मू.६६
बैठे हे गुफा में देखि प्रि.६१३
बैठे हैं कुटी में पीठ प्रि.३१६
बैठो याही ठौर करो प्रि.३९६
बैठ्यो लै इकान्त सुत प्रि.६५
बैठ्यौ कुण्ड तीर जाय प्रि.४११
बैर भाव जिन द्रोह किय मू.१९७
बोलि उठी तिया अरधंगी प्रि.९०
बोलि उठे ढूंढि हारे प्रि.४३७
बोलि उठे सबै तेरी प्रि.५८
बोलि उठ्यो एक एहि प्रि.२४४
बोलि उठ्यौ कोऊ यों प्रि.४२४
बोलि उठ्यौ विप्र एक प्रि.४४५
बोलि नीच जाति बात प्रि.६५
बोलि लियौ सन्त सुता प्रि.२२२
बोलिकै कुटुम्ब कही प्रि.५१४
बोलिकै पठाये महाजन प्रि.५६१
बोलिकै सुनाई अहो कहा प्रि.४१४
बोलिकै सुनाई साष पूजी प्रि.२४१
बोलिकै सुनावै इहां प्रि.३५६
बोलिबो जौ चाहौं तौ प्रि.२०२
बोली अकुलाय एक जीवे प्रि.२०९
बोली अकुलाय मन प्रि.४४
बोली कर जोरी मेरो प्रि.१४६
बोली कही साँच बिन प्रि.५८८
बोली घरबार पट सम्पति प्रि.६२७
बोली जू बिकायौ माथौ प्रि.४७३
बोली भक्तबधू अजू वे प्रि.१६०
बोली मुसुकाय वे टहलुवा प्रि.१८४
बोली मोसौं बोलौ जिन प्रि.४५८
बोली वह सांच वही प्रि.४०५
बोली सरस्वती मेरे ईस प्रि.३३६
बोले अकुलाय तोहि प्रि.५९
बोले आप चिन्ता जिनि प्रि.६१९
बोले आप बैठिये जू प्रि.५२६
बोले आप याकों प्रि.२५२
बोले आप लै पधारौ प्रि.५२९
बोले कृष्णदेव याको सुनो प्रि.७६
बोले जू निशंक जावौ प्रि.४६७
बोले द्विज बालकी सों प्रि.१४६
बोले नेकु रहौ मै प्रि.४६२
बोले पट खोलि दिये प्रि.४४८
बोले प्रभु कहीं यों प्रि.४२६
बोले प्रभु वेई आवैं प्रि.१०८
बोले बीच राम तऊ प्रि.२५३
बोले भरि भाय तेरौ प्रि.२४२
बोले मुसुकाय विप्र क्षिप्र प्रि.१४८
बोले रह्यौ नीर में प्रि.४८३
बोले रीझि श्याम प्रि.५२
बोले वर माँग अजू प्रि.४३०
बोले विष्णुपुरी पुरी काशी प्रि.१७७
बोलै यों सुहागवती मयौ प्रि.५१४
बोलो राधाबल्लभ औ लेवौ प्रि.४१९
बोलौ हरे कृष्ण कृष्ण प्रि.३९०
बोल्यो अकुलाय जाय प्रि.८२
बोल्यो अकुलाय मैं तौ प्रि.२२१
बोल्यो अब पाऊँ कहाँ प्रि.९६
बोल्यो करजोरि याको प्रि.११
बोल्यो घरदासी सो तूँ प्रि.१८३
बोल्यो छोटो विप्र छिप्र प्रि.२३९
बोल्यो नृप अजु मोहि प्रि.१६२
बोल्यो नृप सभा मध्य प्रि.३४८
बोल्यो बनिजारो दाम प्रि.२९७
बोल्यो भक्तराज तुम बडो प्रि.९२
बोल्यो विषै लागि कोटि प्रि.५५४
बोल्यो सुखपाय अजू साँवरो प्रि.२३२
बोल्यौ अकुलाय अजू प्रि.४२१
बोल्यौ अजू मेरौ काहू प्रि.५१९
बोल्यौ एक नाम साधु प्रि.३०२
बोल्यौ कोऊ जन धाम प्रि.५९०
बोल्यौ जूती बाँधौ कान प्रि.३२१
बोल्यौ नृपराज धन प्रि.५५७
बोल्यौ प्रभु भूखें रहे प्रि.६१६
बोल्यौ बड़ौ भ्राता अब प्रि.५५८
बोल्यौ मुरझाय मैं तौ प्रि.२२२
बोल्यौ याहि राखौ सब प्रि.५९७
बोहिथवीरा रामदास सुहेलैं मू.१६९
बौद्ध कुतर्की जैन और मू.४२
ब्याह करि आये भक्तिभाव प्रि.४५५
ब्याही ही विमुख घर प्रि.२०१
ब्रज बडे गोप पर्जन्य के मू.२१
ब्रज ही की लीला सब प्रि.३२२
ब्रजजन प्रान कान्ह बात प्रि.६३४
ब्रजबधू रीति कलियुग विषैं मू.७४
ब्रजभूमि उपासक भट्ट सो मू.८७
ब्रजभूमि रहस्य राधाकृष्ण मू.८९
ब्रजरज अति आराध्य वहै मू.८१
ब्रजराज सुवन संग सदन मू.२३
ब्रजवल्लभ वल्लभ सुवन मू.८८
ब्रजवास आस ब्रजनाथ मू.१६२
ब्रह्म विष्णु शिव लिंग मू.१७
ब्रह्मरन्ध्र करि गौन भये मू.४०
ब्रह्मा शिव कही यह प्रि.४०
ब्राह्मन कौ रूप धरि प्रि.२७४
भई आँखि राती लागी प्रि.२००
भई उतकण्ठा भारी आये प्रि.१७४
भई एकादशी अन्न माँगत प्रि.१४२
भई तब छाया श्याम प्रि.१४७
भई द्वार भीर नर प्रि.५६९
भई द्विजसभा कहि प्रि.५११
भई नभ बानी तुम प्रि.१८५
भई नभ बानी देह प्रि.२६८
भई नभ बानी रामानन्द प्रि.२६०
भई बढवार राग भोग प्रि.४७
भई बढवारि ताकौ प्रि.१३
भई भक्ति रासि बोले प्रि.२५५
भई यों अवार देखैं प्रि.१९६
भई यों प्रसिद्ध बात प्रि.३१७
भई रीझि भारी सब प्रि.४०७
भई लाज भारी पुनि प्रि.१६१
भई लाज भारी विषै प्रि.६१०
भई सभा भारी पूछ्यो प्रि.२३९
भई सुधि आपकौं जु प्रि.१६१
भईं तब आखैं दुखसागर प्रि.५१६
भए दिन तीन ए तो प्रि.३१६
भए शिष्य जान आप प्रि.३७८
भए शिष्य जाय आप प्रि.३०८
भए सिरमौर एक एक प्रि.३३२
भक्त आगमन सुनत सनमुख मू.११४
भक्त इष्ट सुन्यौ मेरे प्रि.४२१
भक्त उदित रवि देखि ह्रदै मू.१९६
भक्त कर जोरिकैं बचायौ प्रि.२२६
भक्त कृपा बांछी सदा मू.१११
भक्त चरणरज जाँचि विशद् मू.७८
भक्त जिते भू-लोक में कथे मू.२०४
भक्त निसकाम कभूँ प्रि.४२
भक्त नृप एक सुता प्रि.२०८
भक्त बरातीवृन्द मध्य दूलह मू.१६४
भक्त बूड़ि गयो यह प्रि.२८८
भक्त भक्ति भगवन्त गुरु मू.१
भक्त भजे की रीति प्रगट मू.६२
भक्त भलाई वदन नित मू.१७१
भक्तदाम जिन-जिन कथी मू.२१३
भक्तदाम संग्रह करै कथन मू.२११
भक्तदास इक भूप श्रवन मू.४९
भक्तन की अति भीर भक्ति मू.१३४
भक्तन की सेवा सो प्रि.१८२
भक्तन के हित सुत प्रि.२०५
भक्तन को अपराध करै मू.८५

भक्तन को उत्कर्ष जनम मू.८४
भक्तन सौं अनुराग दीन मू.८२
भक्तन हित सुत विष मू.५०
भक्तनाम माला अगर उर मू.२१४
भक्तनि की अँघ्रिरेनु वहै मू.१२३
भक्तनि की सुधि करी प्रि.३७०
भक्तनि के संग भगवान्‌ा प्रि.२३५
भक्तनि कौ आदर अधिक मू.११७
भक्तनि कौ बहु मान विमुख मू.१५२
भक्तनि कौ बहुमान दान मू.१५४
भक्तनि कौं सुख दैन फल्यौ मू.१६७
भक्तनि संग भगवाब नित मू.५३
भक्तनि सो यह भाय भजै गुरु मू.१५७
भक्तनि सौं अति प्रीति मू.१८६
भक्तनि सौं अति प्रीति भक्ति मू.१८४
भक्तनि सौं अति प्रेम मू.११२
भक्तनि सौं अति प्रेम भावना मू.१६६
भक्तनि सौं अति भाव निरन्तर मू.१५५
भक्तनि सौं कलिजु भलैं निबाई मू.१५३
भक्तनि हित भगवत् रची मू.१६५
भक्तपक्ष उद्दारता यह निर्वही मू.१८९
भक्तपाल दिग्गज भगत ए मू.१००
भक्तरत्न माला सुधन गोविन्द मू.१९२
भक्ति के अधीन सब प्रि.४९७
भक्ति के प्रसंग कौ प्रि.४६७
भक्ति को प्रताप ऋषि प्रि.३३
भक्ति को बढावै प्रि.१७
भक्ति कौ प्रभाव यामें प्रि.५७९
भक्ति छवि भार प्रि.५
भक्ति जो विभीषण प्रि.२८
भक्ति जोग जुत सुदृढ देह निज मू.१८७
भक्ति ज्ञान वैराग जोग मू.१९७
भक्ति तेज अति भाल मू.१११
भक्ति दान भय हरन भुज मू.६४
भक्ति निसान बजायकै काहू मू.११५
भक्ति भागवत विमुक जगत मू.१७३
भक्ति भार जूडै जुगल धर्म मू.१५७
भक्ति महारानी कौ प्रि.३
भक्ति रस रूप प्रि.९
भक्ति विमुख जो धर्म सो मू.६०
भक्ति विसतार कियौ प्रि.४९२
भक्ति विसवास जाके प्रि.६३३
भक्ति सुधा जल समुद्र भये मू.६९
भक्ति ही प्रचार पाछे प्रि.१२६
भक्तितरु पौधा ताहि प्रि.६
भक्तिरसबोधिनी सो टीका प्रि.६३२
भक्तिवश श्याम जैसैं प्रि.२०४
भक्तिसुधा कौ सिन्धु सदा मू.८७
भक्तेश भक्त भवतोष कर सन्त मू.१९३
भगवत कृपा प्रसाद परमगति मू.५९
भगवत धर्म उतंग आन मू.४७
भगवत् तेज प्रताप नमित मू.१३२
भगवत् धर्म प्रधान प्रसन्न मू.७१
भगवत् भक्त समान ठौर मू.१२५
भगवन्त भुक्त अवशिष्ट की मू.१५
भगवन्त रचे भारी भगत मू.१७८
भगवन्तमुदित उदार जस रस मू.१९८
भगवानदास उर भक्ति प्रि.६२०
भगवानदास श्रीसहित नित मू.१८८
भगवान् रीति अनुराग की मू.१२७
भजन जसोदानन्द सन्त संघट मू.८२
भजन भाव आरूढ गूढ गुन मू.१८८
भजन भाव परिपक्व हृदै मू.१२२
भजिवे को दोई सुघर मू.३
भज्यौ धन लैके कोऊ प्रि.४९४
भट्ट श्रीनारायन जू भये प्रि.३५६
भद्राश्वग्रीवहय भद्रस्रव मू.२५
भये इकठौरे माया कीने प्रि.१११
भये उभै शिष्य नामदेव प्रि.१८०
भये गुंजामाली गुंजाहार प्रि.४१५
भये चारि भाई करैं प्रि.२३०
भये द्विज पंच इकठौरे प्रि.६२३
भये पुत्र तीन तामें प्रि.१७९
भये बिन भोर बधू प्रि.२०६
भये भील संग भील प्रि.७४
भये शिष्य शाखा अभिलाषा प्रि.५७२
भये सब साधु व्याधि प्रि.५१४
भये सुत तीन बांट प्रि.३७३
भये सो अमीन यों प्रि.४९८
भये हैं जुड़ाये कोऊ प्रि.३४२
भयो एक ग्वाल साधुसेवा प्रि.२३३
भयो एक भूप ताके प्रि.२०५
भयो जू प्रगट गीत प्रि.१४७
भयो जू प्रगट बाल नाम प्रि.१२८
भयो जू विचार काशीपुरी प्रि.१६४
भयो जू सबारो फिरि प्रि.१३२
भयो तदाकार यों निहार प्रि.६०
भयो तन वृद्ध तऊँ प्रि.१६३
भयो दुःख भारी सुधी प्रि.२५७
भयो बोझ भारी किहूँ प्रि.३२९
भयो ब्रह्मभोज कोई प्रि.५८
भयो मुख स्वेत रानी प्रि.१६१
भयो शोक भारी हमें प्रि.२१५
भयोई खिसानौ राना प्रि.४७७
भयौ उपदेस भक्ति देस प्रि.६१९
भयौ कोप भार थार प्रि.४१४
भयौ गजराज भक्तराज प्रि.३९२
भयौ जब भोर पुर प्रि.४८४
भयौ जै-जैकार नृप प्रि.४४९
भयौ ज्वर नाड़ी छीन प्रि.५७८
भयौ दरसन तुम्हैं मन प्रि.३३६
भयौ दुखरासि कहाँ पैयै प्रि.५०७
भयौ हौ बिरक्त कोऊ प्रि.४२०
भरत दधीचि आदि भागवत प्रि.८६
भरत पुत्र भागौत सुमुख मू.११९
भरत प्रसंग ज्यौं कालिका मू.६७
भरतखण्ड भूधर सुमेर टीला मू.१५१
भरि अँकवारि मिले मन्दिर प्रि.२१५
भरो है भण्डार धन प्रि.२५१
भयौ ही हुंकारौ प्रभु प्रि.५३३
भल नरहरि भगवान् मू.१००
भलपन सबै विशेष ही आमेर मू.१४२
भलीभाँति निर्वही भगति सदा मू.१८६
भव निस्तारन हेतु देत मू.७६
भव प्रवाह निस्तार हित मू.९६
भवन प्रवेस कियौ मन्त्री प्रि.५५५
भवसागर के तरन कौ मू.४
भाँड भक्त कौ भेष हाँसि मू.५६
भाँड भेष गाढो गह्यौ दरस मू.५६
भाँवरैं परत मन साँवरे प्रि.४७१
भाई उभैं माथुर सुराना प्रि.३४८
भागवत गान रसखान सो प्रि.३७९
भागवत गावै भक्तभूप प्रि.४६६
भागवत संत रसवंत कोऊ प्रि.७६
भागवत-टीका करी श्रीधर प्रि.२३४
भागौत भलीविधि कथन कौ मू.१३४
भागौत सुधा बरषै वदन मू.१३८
भाज्यो दिशा दिशा प्रि.४०
भारतादि भागौत मथित मू.७०
भाव की बढनि दृग प्रि.५९२
भाव ही सौं जाने प्रि.५५६
भावन विरही भरत नफर मू.९८
भावना सचाई वही प्रि.५५६
भीजि गये साधु नेह प्रि.५४९
भीजि गयौ हियौ दास प्रि.३१०
भीज्यो अनुराग पुनि प्रि.३४१
भीतर बुलाये श्रीगुसाईं प्रि.४९९
भीलन को राजा गुह प्रि.९५
भीषमभट्ट अंगज उदार मू.८२
भुपति विमुख झूठ प्रि.४५६
भूख को जतावै बानी प्रि.३७२
भूख निसि भई भक्ति प्रि.३३८
भूखे को न देखि सकैं प्रि.९४
भूप को सलाम कियौ प्रि.५५०
भूप कौं खबरि भई प्रि.५५७
भूप मन आई यह प्रि.३००
भूप सुनि आगे आय प्रि.४६४
भूप सुनि आयौ उपदेस प्रि.४९५
भूप सुनि चौंक परयो प्रि.१३५
भूपके विवाह सुता जोरौ प्रि.४०६
भूपको सलाम कियो प्रि.४०७
भूपति सुनत बात अति प्रि.५५३
भूपबहु भेंट करी देह प्रि.३४९
भूमि पर सांष्टांग करी प्रि.५५७
भूमि परि विनै करी प्रि.६२१
भूयो जू विवाह उत्साह प्रि.४५
भेलै तुलसीदास भट ख्यात मू.१६९
भोग की न चाह ऐसे प्रि.५७
भोग जे लगाये मैं प्रि.४१२
भोग लै लगावैं नाना प्रि.४९४
भोगको लगावै प्रभु प्रि.२५९
भोजन करत मांझ पीपा प्रि.२९८
भोजन कराय दिन पाँच प्रि.५८१
भोजन कराये भरि प्रि.२५५
भोजन निवारि तिया आइ प्रि.७१
भोजन रास विलास कृष्ण मू.१५४
भोर आय पूछैं अजू प्रि.५१३
भोर जौ विचारै नहिं प्रि.५२०
भोर भये शोर पयौ प्रि.५८६
भोर भयें गाड़ी भैंसि प्रि.४२३
भोर ही पधारौ अब प्रि.८०
भोरही महोछौ कियौ जोई प्रि.४०८
भौन ते निकासि धाये प्रि.५५६
मंगल आदि विचारि मू.२
मंगल मुनि श्रीनाथ मू.३०
मंगलीक जम्बूफल फल प्रि.१७
मग अवलोकि उत परयो प्रि.१११
मग ठग मिले द्विज प्रि.२५३
मगन प्रेम पीयूष पयध मू.९५
मगह में जाय भक्ति प्रि.२८१
मणिमय ही साज-बाज प्रि.४५२
मण्डल ग्वाल अनेक श्याम मू.२२
मति उनमान कह्यौ लह्यौ प्रि.६३१
मति सुन्दर धीधांग श्रम मू.९७
मथुरा मध्य मलेच्छ वाद मू.७५
मथुराते कही चलौ बेनी प्रि.३५६
मथुरापुरी निवास आस पद मू.१८८
मदनगोपालजू कौ दरसन प्रि.५१८
मदनमोहन जू हैं इष्ट प्रि.५०२
मधुकण्ठौ मधुवर्त्त रसाल मू.२३
मधुकर शाह भूप भयो प्रि.४१७
मधुकरशाह नाम कियौ प्रि.४८८
मधुकरी माँगि सेवैं भगत मू.१४९
मधुपुरी महोच्छौ मंगलरूप मू.१५२
मधुमंगल सुबल सुबाहु मू.२२

मधुर बैन सुठि ठौर-ठौर मू.१४८
मधुर भाव सम्मिलित ललित मू.७६
मधुर वचन मन हरन सुखद मू.१७६
मधुर वचन मुँह लाय विविध मू.१५३
मध्यदीप नवखण्ड में भक्त मू.२५
मध्वाचारज मेघ भक्ति सर मू.२८
मन वच सर्वसु रूप भक्तपद मू.१७६
मन ही मतंग प्रि.१५
मनन सुनीर अन्हवाइ प्रि.३
मनुस्मृति अत्रेय वैष्णवी मू.१८
मन्त्री वर्य सुमन्त्र चतुर्जुग मू.१९
मन्दिर अघारि देखैं परो प्रि.२४३
मन्दिर उँजारौ भयौ हिये प्रि.३२०
मन्दिर करायौ प्रभुरूप प्रि.४८४
मन्दिर सरावगी कौं प्रतिमा प्रि.२१३
मन्दिरके द्वार रूप सुन्दर प्रि.३२७
मयानन्द महिमा अनन्त मू.१०५
मरम न जान्यो निशि प्रि.२५६
मरयो एक भाई वाकौ प्रि.१५९
मयौ लाज भार चाहै प्रि.२९९
महत् सभा में मान जगत मू.१७७
महदा मुकुन्द गयेश त्रिविक्रम मू.९९
महल महल माँझ प्रि.२८८
महा महोच्छौ मुदित नित्य मू.१४२
महा महोच्छौं मध्य सन्त मू.१२८
महा महोत्सव करत बहुत मू.८८
महा समुद्र भागौत तें मू.४७
महाजन सुनो सदाव्रती प्रि.२१९
महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजू प्रि.३७९
महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूकी प्रि.३९८
महाप्रभु कृष्णचैतन्य प्रि.१
महाप्रभु कृष्णचैतन्यजू की प्रि.३२८
महाप्रभु पारषद थानेश्वरी प्रि.३७८
महासती सत ऊपमा त्यौं मू.६६
महासमारत लोग भक्ति मू.१०८
महिमा अपार देखि भूप प्रि.८४
महिमा महा प्रवीन भक्तवित मू.१९०
महिमा महा प्रसाद की मू.६५
माँगत फिरत हुती जुवती प्रि.५२५
माँगि लीजै वर कही प्रि.५१०
माँगे बार बार विदा प्रि.१५५
माँगौ वर कोटि चोट प्रि.९२
माँग्यौ नेकु पानी ल्यावौ प्रि.५६५
माटी दूर करी सब प्रि.५६९
माडौठी जगदीसदास लछमन मू.१०६
माण्डव्य विश्वामित्र मू.१६
माता करै सोर कोऊ प्रि.२७१
माता कहै टेरि करि प्रि.१३०
माता दूध प्यावे याकों प्रि.२६०
माता मग चाहै बड़ी प्रि.४१३
माता मन्दालसा की बडी प्रि.९३
माता हरिभक्ति भूप कही प्रि.४४६
माधव दृढ महि ऊपरै मू.११२
माधव सुत सम्मत रसिक मू.१९८
माधौ मथुरा मध्य साधु मू.१३९
माधौ मधुसूदन सरस्वती मू.१८१
माधौदास द्विज निज प्रि.३१५
मानस पठायौ दिन आयौ प्रि.४५३
मानस वाचक काय राम मू.१६६
मानसिंह राजा ताकौ प्रि.५४२
मानसी विचार ही अहार प्रि.३८३
मानसी विचारें लाल प्रि.४८७
मानसी स्वरूप में प्रि.१०
मानसीमें पायो दूध भात प्रि.३२८
मानि अपराध साधु धक्का प्रि.४१०
मानि आनि प्रान लोभ प्रि.६२०
मानि प्रिय बात गहगह्यौ प्रि.३६५
मानि मत सार प्रभु प्रि.२१७
मानि राजात्रास दुखरासि प्रि.२२८
मानि लई बात नई प्रि.२६४
मानि लीन्हो बोल वे प्रि.६०
मानि साँच बात जाति प्रि.८२
मानिकै प्रताप चिन्तामनि प्रि.१७५
मानुस पठाये सुधि ल्याये प्रि.१२१
मानो एक तन भयो प्रि.५५
मानौ आगि आँचि लागी प्रि.३६०
मानौ जिनि संक काज प्रि.२९९
मामा रह्यो भीतर औ प्रि.२१४
मार मार करि कर खड्ग प्रि.१९१
मार मारकर खड्ग बाजि मू.४९
मारग जात अकेल गान मू.१२७
मारग में जाइ रहै प्रि.३५
मारबाड़ देस तैं प्रि.४२५
मारवार देश बीकानेर प्रि.५३८
मारिवौ कलंक हू न प्रि.५५५
मारी जांघ छुरी लखि प्रि.४१७
मारू मुदित कल्यान परस मू.१७८
मारौ याहि काल दुष्ट प्रि.१९१
मार्कण्डेय ब्रह्माण्ड कथा मू.१७
मालपुरै मंगल करन रास मू.१९४
माला मुद्रा देखि तासु की मू.१०८
मालाधारी दास मानि प्रि.४६५
मालाधारी साधु तनु प्रि.११०
मिलि गये वाही ठौर प्रि.३७७
मिलीं उभै सुता रंग प्रि.४४३
मिले भरि अँक लै प्रि.४५५
मिले मुतसद्दी शिष्य प्रि.३८९
मिले राम कृष्ण झिले प्रि.१०१
मिले श्रीगुसाँईं जू सौं प्रि.५२४
मिल्यो मग सिंह यहि प्रि.९०
मिल्यौ एक संग संग प्रि.३९५
मीन बिन्दु रामचन्द्र प्रि.१८
मुकुन्द चरण चिन्तवन भक्ति मू.१४२
मुख न दिखावै याहि प्रि.४५८
मुखहूँ न देखैं वाको प्रि.५०५
मुद्रा सत पाँच मोल प्रि.४९०
मुद्रिका उघारी औ निहारि प्रि.९३
मुनि मन माँझ क्यों प्रि.९७
मुरधरखण्ड निवास भूप मू.१०७
मुरली मधुर सुर राख्यो प्रि.१७५
मुरलीधर की छाप कवित मू.१२३
मुहरनि पात्र भरि लै प्रि.२५०
मुहरनि भांड़ो भूमि प्रि.२९४
मूठ लै चलाई भक्ति प्रि.५६०
मृगी पाछे परे करे प्रि.२२४
मृतक गऊ जिवाय परचौ मू.४३
मेरतें बसत भूप भक्ति प्रि.४८६
मेरतै प्रथम वास जैमल प्रि.२३१
मेरतौ जनम भूमि झूमि प्रि.४७१
मेरी सम सोनो लेहु प्रि.२४४
मेरे अश्रुपात क्यों न प्रि.५२८
मेरे धन राम कछु प्रि.२६२
मेरेऊ न संत बिनु प्रि.४१
मेरो एक भक्त आहि प्रि.८८
मेरौ है इको सौ वास प्रि.४३७
मैं जु दीनौ हाथ प्रि.६०६
मैं तो भये भोर प्रि.१६८
मैं तो हौं अधीन तीनि प्रि.४०
मैं तौ हौं अधीन तेरे प्रि.१८५
मैं हूँ जल त्यागि प्रि.४५८
मो चित्तवृत्ति नित मू.८
मों मतिसार अक्षर द्वै मू.२१३
मोको अति प्यारे साधु प्रि.४१
मोको परयो सोच यज्ञ प्रि.७८
मोपै तौ दियो न जाय प्रि.९२
मोसौं न पिछौंनि दिन प्रि.१३३
मोहन न्यौछावर मैं भयौ प्रि.३५४
म्हारो कहा जाय आय प्रि.४४७
यज्ञ रिषभ हयग्रीव मू.५
यज्ञपत्नि ब्रजनारि किये मू.१०
यथा लाभ सन्तोष कुँज मू.८९
यदुनन्दन रघुनाथ रामानन्द मू.१०३
यह अचरज भयौ एक खाँड मू.१५४
यह रीति करौलीधीश की मू.११४
यह सुख अनित्य विचारि मू.८९
यही अब दण्ड राज प्रि.२२९
यही एक पद मुख प्रि.१४७
यही नित करौं नहीं प्रि.४९२
यही बात परी कान प्रि.६२७
यहू दूर डारौ करौ प्रि.२८६
यहै वचन परमान दास मू.१०६
याकौ तातपर्य्य सन्त प्रि.५८०
याज्ञवल्क्य अंगिरा शनैश्चर मू.१८
याते नहीं खात वाकी प्रि.१११
यामुन मुनि रामानुज तिमिर मू.३०
याही के प्रभाव भाव प्रि.८४
याही विधि नाना भांति प्रि.३२६
युगल सरूप अवलोकि प्रि.३७७
ये तौ प्रभु पाय चुके प्रि.४००
ये तौ प्रभु रीझे तोपै प्रि.३९५
ये तौ सब गौर तनी प्रि.३३०
योगानन्द गयेश करमचन्द मू.३७
योगी यती तपी तासों प्रि.२६
योगेश्वर आदि रस स्वाद प्रि.७३
योगेश्वर श्रुतिदेव अंग मू.१०
रंगनाथ को सदन करन मू.५१
रंगीराय नाम ताकी प्रि.३५३
रक्तक पत्रक और पत्रि मू.२३
रघुकुल सदृश सुभाव श्रेष्ठ मू.६९
रघुनन्दन को दास प्रगट मू.८३
रघुनाथ गोपीनाथ रामभद्र मू.१०३
रघुवर यदुवर गाइ विमल मू.३७
रचिकै चिता को विप्र प्रि.१४३
रचिकै सिंहासन पै लै प्रि.२९
रची कविताई सुखदाई प्रि.२
रजत रुक्म की रेल सृष्टि मू.१५४
रजनी के शेष ऋषि प्रि.३१
रजनी के शेष पति प्रि.४६
रजनी के शेष में प्रि.२६८
रतन अपार सारसागर प्रि.२७
रत्नाकर संगीत रागमाला मू.१८०
रमनक मछ मनु दास मू.२५
रमा पद्धति रामानुज विष्णु मू.२९
रवकि उठाइ लई प्रि.३६
रसना निर्मल नाम मनहुँ मू.४१
रसरास उपासक भक्तराज मू.१५९
रसिक जैदेव नाम मेरोई प्रि.१४४
रसिक प्रवीन मग चलत प्रि.३७९
रसिक रँगीलौ भजनपुंज सुठि मू.१३३
रसिक रायमल गौर देवा मू.१५८
रसिक समाज में विराज प्रि.६३०
रसिकजनन जीवन हृदय मू.४६
रसिकन मन दुख जानि प्रि.३४७
रसिकमुरारि साधुसेवा प्रि.३८४
रसिकाई कविताई जाहि प्रि.६३०

रहतो गुलाम गयो धर्मराज प्रि.११७
रहनि कहनि रूप चहनि प्रि.३२८
रहि गई एक काँटो प्रि.८३
रहि गई एक भूले प्रि.४४१
रहिवै कौं दई ठौर प्रि.४४०
रही एक मांझ धयी प्रि.३५७
रही सभा सोचि आप प्रि.४८९
रहे कोऊ दिन आज्ञा प्रि.२८७
रहे कोऊ दिन पुनि प्रि.६१७
रहे चुपचाप सबै जानी प्रि.४९२
रहे दिन चार पै प्रि.४५१
रहे नन्दगांव रूप आये प्रि.३५९
रहे नैन मूँदि रघुनाथ प्रि.९५
रहे पुनि पावन पै प्रि.५६५
रहे विप्र दूषि सुनि प्रि.५७६
रहे समुझाय याहि कछु प्रि.१९९
रहे सुख पाय कृपा प्रि.२७२
रहे सुख लहे नाना प्रि.६२८
रहे सो बरस रस सागर प्रि.१७०
रहै एक नटी शक्तिरूप प्रि.६०४
रहै एक शाह भक्त प्रि.६१४
रहै जाके देश सो प्रि.६२
रहै तहाँ शाह किये प्रि.४४८
रहै भोग शेष और प्रि.३१९
रहैं काहू देस में प्रि.५२८
रहैं गुरुभाई दोऊ भाई प्रि.५८०
रहैं ढिंग गाँव तहाँ प्रि.४२४
रहैं भौगांव नांव नरबाहन प्रि.४१९
रहैं श्रीसनातन जू नन्दगाँव प्रि.३६२
रहौ अजू सेवा करौं प्रि.१७३
रहौ कौन ठौर सिरमौर प्रि.५२३
रहौ द्वार झायौ करौ प्रि.५७४
रहौ मैं खिरक मांझ प्रि.३६१
रह्यो कैसैं जाय अकुलाय प्रि.२०८
रह्यौ उतसाह उर दाह प्रि.६२८
रह्यौ जगत सौं ऐंड तुच्छ मू.१७७
रह्यौ बैठि जाय जूती प्रि.४९९
राँका पति बाँका तिया प्रि.४०१
रांपी एक सोनो कियो प्रि.२६२
राआ मुख भयो सेत प्रि.३४९
राखे हम हितु जानि प्रि.१५६
राखौ यह खग पगि प्रि.४७०
राग भोग नित विविध मू.७९
राग सुनि भक्तिनी को प्रि.३४४
राघौ रुचिर सुभाव असद् मू.१६८
राजसिंहासन बैठि ज्ञाति मू.५९
राजसी महन्त देखि प्रि.५२२
राजसूय जदुनाथ चरण धोय मू.२०२
राजा अति अर गही प्रि.१५८
राजा कौ औसेर भई प्रि.३०४
राजा कौ दीवान ताके प्रि.५८
राजा कौं सुपन दियौ प्रि.४९७
राजा चलि आयौ सब प्रि.४६३
राजा जिय शोच प्रि.२७५
राजा झूंठ मानि कह्यौ प्रि.४९५
राजा ढिंग आनि करि प्रि.८४
राजा भक्तराज डोम प्रि.२५५
राजा मग चाहि हारि प्रि.१२३
राजा मानसिंह माधौसिंह प्रि.५५८
राजा रिझवार करै देवे प्रि.६०४
राजा रीझि पाँव गहे प्रि.४६९
राजा लाज मानि मृदु प्रि.४२
राजा लैन आयौ ऐपै प्रि.३६८
राजा सरबसु दियौ जियौ प्रि.४६४
राजा हित ताप भयौ प्रि.४६४
राजाके जे लोग सु प्रि.३५०
राजैं गिरिधारीलाल प्रि.४७६
रात तें ज्यौं प्रात प्रि.५८९
राधाकृष्ण उपास्य रहसि सुख मू.१२६
राधाकृष्ण रस की प्रि.३५७
राधाकृष्ण लीला सौं प्रि.३७९
राधातर तीर द्रुम डार प्रि.३६३
राधावल्लभ भजन अनन्यता मू.१२३
राधावल्लभ भजन प्रगट परताप मू.१५६
राधावल्लभलाल नित्तप्रति ताहि मू.१५५
राधिका वल्लभलाल आज्ञा प्रि.३६६
राधिकावल्लभदास प्रगट प्रि.५२७
राना की मलीन मति प्रि.४८०
राना कै सगाई भई प्रि.४७१
राना देशपति लाजै प्रि.४७५
राना नै लगायौ चर प्रि.४७६
राना सुनि कोप कयौ प्रि.४७४
राना सों सनेह सदा प्रि.३५५
रानी पति पर रीझि बहुत मू.५७
राम उपासक छाप दृढ और मू.१६३
राम कलस मन रली मू.१२१
राम चरण अनुराग सुदृढ मू.१८२
राम चरण चिन्तवनि रहति मू.४०
राम चरण मकरन्द रहत मू.१८५
राम नाम मन्त्र यही प्रि.२६९
राम नाम लिखि सीस प्रि.३०
रामचरण मकरन्द रहति मनसा मू.१३६
रामचरन रसमत्त रहत मू.१२९
रामदास के सदन राय मू.५३
रामदास परताप तें खेम मू.८३
रामदास सुत सन्त अनन्य मू.१४३
रामनाम कहै बेर तीन प्रि.३११
राम-नाम विश्वास भक्त मू.१०७
रामबिन कामकौन फोरि प्रि.२७
राममिश्र रस रासि प्रगट मू.३०
रामानन्द जू कौ शिष्य प्रि.२५९
रामानुज पद्धति प्रताप अवनि मू.३५
रामायन कथा सो रसायन प्रि.५०९
रामायन नाटक रहसि युक्ति मू.१३०
रायसेन गढवास नृप प्रि.४५७
रावन जीत्यौ बालि बालि मू.२००
राष्ट्र विवर्धन निपुण मू.१९
रास मध्य निर्जान देह मू.१६६
रासके समाज में विराज प्रि.३७७
रिझये राधालाल भक्तपद रेनु मू.१८०
रिभु इक्ष्वाकरु ऐल गाधि मू.१२
रीझि गये सन्त प्रीति प्रि.२११
रीझि जगदेव सो यों प्रि.६०४
रीझी बडो द्विज निज प्रि.२३८
रीझे प्रभु रहे द्वार भये प्रि.१०२
रीझे सुनि वानी साँची प्रि.६२७
रीझ्यौ नृप देखि रीझि प्रि.६२०
रीति हूं उपासनाकी प्रि.३५८
रुक्का लिखि डारे दाम प्रि.५००
रुक्मांगद बाग शुभ गन्ध प्रि.८३
रुक्मांगद हरिचन्द भरत मू.११
रुक्मिनी लता बरनन अनूप मू.१४०
रुचिर शील घन नील लील मू.१९२
रूप उजियारी चन्द प्रि.४३२
रूप की निकाई भूप प्रि.४७९
रूप कौं निहारि मन प्रि.५७०
रूप गुण गान होत कान प्रि.३६०
रूप गुन भरि सह्योजात प्रि.९८
रैना पर गुण राम भजन मू.११८
रैनी बिन रंग कैसे प्रि.५२३
रोकत उतरि आई जहाँ प्रि.५४८
रोटी धरि आगे आंखि प्रि.३०६
लई उपजाय काल प्रि.३९
लई बात मानि मानो प्रि.४७
लई यही मानि फेरि प्रि.१३६
लई सो तराजू जासों प्रि.१४०
लकरीन बीनि करि प्रि.४०१
लकरीन मांझ डारि प्रि.२७८
लक्षन कला गँभीर धीर मू.१९५
लक्ष्मण लफरा लडू सन्त मू.९८
लक्ष्मीपति प्रीणन प्रवीन मू.८
लगन हूँ लिखि दियौ प्रि.४५१
लगी परोसी हौंस भवानी मू.६७
लगे जब तौलिबै कौं प्रि.२४५
लगे वाके पाछे काँछे प्रि.१७०
लगेई किनारे जाय चले प्रि.१६६
लग्यो शाक पत्र पात्र प्रि.७२
लग्यो सीत गात सुनो प्रि.३१८
लग्यौ देन आधो फारि प्रि.२७०
लघु दीरघ सुर शुद्ध वचन मू.१९२
लघु मथुरा मेरता भक्त मू.११७
लट्यौ लटेरा आन विधि परम मू.१७२
लड्डू नाम भक्त जाय प्रि.४०४
लपटानौ पाँयनि सौं प्रि.६२४
लरिकान संग पढौं बातैं प्रि.३३४
लरिवे कौं चलै आगै प्रि.६२१
लहँगा उतारि बेचि प्रि.२९१
लाखा छीतर उद्धव कपूर मू.९९
लाखा नाम भक्त वाकौ प्रि.४२२
लाखै अद्भुत रायमल खेम मू.१५८
लागी चटपटी भूप भक्ति प्रि.४८०
लागी चटपटी-अटपटी प्रि.५९५
लागी संग रानी दस प्रि.२८६
लागे जब बेग-बेग प्रि.३१८
लागे जब संग युग प्रि.२४०
लागे प्रान साथ सन्त प्रि.४७५
लाग्योई बढन गोंदा प्रि.६
लाज कौन काज जोपै प्रि.५८५
लाज दबि गयौ नृप प्रि.५१७
लाज दबि तिन दिये प्रि.४२४
लाजनि को मारयो राजा प्रि.१६२
लाल अति रंग भरे प्रि.६११
लाल लै लड़ाये सन्त प्रि.६१७
लाल हिय सोच पयौ प्रि.४११
लालनि लड़ावै गुन गायकै प्रि.४७४
लालविहारी जपत रहत मू.१८६
लालाचारज लक्षधा प्रचुर भई मू.३३
लाली नीरा लक्ष्मि जुगुल मू.१७०
लावै वन बेर लागी प्रि.३५
लिखिकै पठायौ देश प्रि.५३९
लिखिकौ पठाई बाई करैं प्रि.६२२
लिखी प्रभु चीठी आपु प्रि.१७७
लिख्यौ आयो साँच बाँचि प्रि.५३९
लिख्यौ दै पठाये वेगि प्रि.५५२
लिख्यौ पत्र माजी कौं प्रि.५५१
लिख्यौ लै दिवान नर प्रि.५५०
लिये जाय पांय लपटाय प्रि.३२४
लिये दाम काम कियौ प्रि.४४८
लिये संग कयौ जोई प्रि.५७३
लियो अनसन हाथ तजौं प्रि.१९३
लियो कैसें जाइ तुम्हें प्रि.१७६
लियो पहिचानि पूछ्यो प्रि.३०
लियौई निपट हठ बड़े प्रि.५०४
लीजियै छिनाइ यही वारि प्रि.२३७
लीजै बात मानि जल प्रि.१०४

लीला जै-जै जैति गाय मू.७०
लीला पद रस रीति मू.११०
लीला सुनिबै को हरियाने प्रि.३२६
लेत हौं परिच्छा मैं प्रि.२९०
लेवो जू पिछानि तहँ प्रि.२००
लेवो देश गाँव जाते प्रि.१३५
लेवो भूमि गाउण बलि प्रि.२१८
लेवो मोको संग करौ प्रि.३९६
लेवौ जू लिखाइ जोपै प्रि.२३९
लेवौ देश गाँव सदा प्रि.५९९
लेवौ मति नाम साधु प्रि.२२१
लै करि खडग ताहि प्रि.११९
लै कै आयो साधु मैं प्रि.३९५
लै कै उठि गये नये प्रि.२६३
लै गये रिसायकै फिराय प्रि.१९३
लै गये लिवाय नाना प्रि.४९६
लै गये हुजूर नृप बोल्यौ प्रि.५०१
लैकै गये दूर देखि प्रि.५९
लैकै मिष्टान आय सुमुख प्रि.४९६
लैकैं कहाँ धरैं सरबरहू प्रि.१४१
लैन कौं पठाये कही प्रि.५०१
लोकलाज कुल श्रृंखला तजि मू.११५
लोग जानैं बौरौ भयौ प्रि.२८३
लोचन उघारिकै निहारि प्रि.१०
लोमेश भृगु दालभ्य मू.१६
लौंडी आवै दैंन कछू प्रि.४१९
ल्याई एक डोला में प्रि.३५४
ल्याई सो लिवाइ जाति प्रि.१७८
ल्याये कर फूल ताके प्रि.१९५
ल्याये जा लिवाय कहै प्रि.८१
ल्याये बाँधि मारी बेंत प्रि.३१७
ल्याये वृन्दावन रासमंडल प्रि.४३१
ल्यायो एक काँटो लै प्रि.१४०
ल्यायौ कोऊ चोवा वाकौ प्रि.३६७
ल्यावो बेगि याही छिन प्रि.३४३
ल्यावो रे पकर वाके प्रि.२७७
ल्यावो रे पकरि ल्याये प्रि.४०६
ल्यावौ जू पकरि वाको प्रि.२६९
ल्यावौ जू बुलाइ एक प्रि.१३९
ल्यावौ जू बुलाय कह्यो प्रि.२४१
वंशीवट सौं प्रीति प्रीति मू.१९९
वचन प्रीति निर्वाह अर्थ मू.७३
वदन उच्चरित बेर सहस मू.१२६
वन में रहति नाम प्रि.३१
वन्दन प्रवीन चाह निपट प्रि.१०१
वन्दन सुफलकसुवन दास्य मू.१४
वर्णाश्रम अभिमान तजि पद मू.५९
वर्द्धमान गंगल गम्भीर उभै मू.८२
वल्लभ सुत बल भजन के मू.७९
वल्लभ हूँ संग सुर प्रि.५९३
वसन बढे कुन्ती बधू त्यौं मू.१५४
वस्तु है तिहारी प्रभु प्रि.४६२
वह गोकुल वह नन्दसदन मू.७९
वह दुख हियें रह्यौ प्रि.४६१
वही इन कही पति देख्यो प्रि.१०५
वही ऋतु आई सुधि प्रि.३४०
वही भगवंत संत प्रि.९
वहू बात साँच याकी प्रि.३१९
वहै भयौ दसरत्थ राम मू.४९
वहै हरि ध्यान रूपमाधुरी प्रि.५७
वाकी एक सुता संग प्रि.४६१
वाको हुतो दांव मोपै प्रि.४११
वानी भोलाराम सुहृद् मू.७८
वानी वन्दित विदुष सुजस मू.८१
वानी विमल उदार भक्ति मू.१२१
वानी सीतल सुखद सहज मू.१९५
वामन फरसा धरन सेतुबन्धन मू.९२
वामन मीन वाराह अग्नि मू.१७
वारमुखी के मुकुट कौं मू.५४
वास अटल वृन्दाविपिन मू.१९९
वास कै तिजारे माँझ प्रि.५५९
वाही ठौर लीजै मेरो प्रि.२६३
वाही हाथ दीजियै लै प्रि.४३६
वाहू को बुलावौ प्रि.२९१
विट्ठलदास माथुर मुकुट भयौ मू.८४
विट्ठलनाथ ब्रजराज ज्यौं लाल मू.७९
विट्ठलेश की भक्ति भयौ बेला मू.१३२
विट्ठलेश नन्दन सुभाव जग मू.१३१
विदा पै न भये चले प्रि.४२७
विदा ह्वै पधारे नभ प्रि.११३
विदित गान्धर्वी ब्याह कियौ मू.११९
विदित बटोही रूप भये मू.५३
विदित बात जग जानियै मू.६३
विदित बात संसार सन्त मू.७७
विदित बात संसार सब मू.७५
विदित बिलौंदा गाँव देश मू.१२८
विदित वृन्दावन वास सन्त मू.१६०
विद्यापति ब्रह्मदास बहोरन मू.१०२
विधवा को गर्भ ताकी प्रि.१२८
विधि औ निषेध छेद प्रि.३६४
विधि नारद शंकर मू.७
विधि निषेध नहिं दास मू.९०
विधि निषेध बल त्यागि पागि मू.१९८
विनती करत करजोरि प्रि.४०३
विनती करत नामदेव प्रि.४०१
विनती करत बेटी प्रि.४४१
विप्र कै गुसाईं साधु प्रि.६२६
विप्र दृगहीन सो अनाथ प्रि.४८५
विप्र सारसुत घर जनम मू.१९७
विप्र सो सुनावै सीता प्रि.१९०
विप्र हरिभक्ति करि प्रि.२५३
विप्र हू न छूए जाको प्रि.२५२
विफल उपाय बये तऊ प्रि.२७८
विमल बुद्धि गुन और मू.७३
विमलानन्द प्रबोध वंश मू.१२५
विमुख कौं लेत हरिदास प्रि.२३५
विमुख खिसाने भये गये प्रि.४४९
विमुख प्रसन्न भये तबतौ प्रि.४४७
विमुख विचारि तिया प्रि.५७३
विमुख समूह देखि संमुख प्रि.३१४
विमुख समूह लैकें किये प्रि.१२४
विमुख समूह संग माता प्रि.२७७
विमुखनि को दियो दण्ड मू.४२
विविध बड़ाई में समाई प्रि.४९१
विविध बिछौना सेज प्रि.४८६
विविध भक्त अनुरक्त व्यक्त मू.१९२
विविध वितान तान प्रि.२६४
विश्व के भरणहार धरे प्रि.७२
विश्व वास विश्वास दास मू.१९२
विषई कुटिल एक भेष प्रि.४७८
विषया भुजंग बलमीक प्रि.१८
विषया सुनाम अभिराम प्रि.६३
विषयी कुटिल चारि प्रि.३०३
विषयी बनिक एक देखि प्रि.२९८
विष्णु स्वामि बोहित्थ सिन्धु मू.२८
विष्णुदास कन्हर रंगा चाँदन मू.३९
विष्णुपदी भय मानि कमल मू.३४
विष्णुरात सम रीति बँधेरे मू.१६४
विष्णुस्वामि सम्प्रदाई बडेई प्रि.१७८
विष्णुस्वामि सम्प्रदाय दृढ मू.४८
विष्वक्सेन जय विजय मू.८
विष्वक्सेन प्रहलाद बलिर मू.१५
विष्वक्सेन मुनिवर्य्य सु मू.३०
वीठल सुत विमल्यौ फिरै मू.१५२
वृन्दावन आईं जीव प्रि.४७९
वृन्दावन की माधुरी इन मू.९४
वृन्दावन दृढवास जुगल मू.९३
वृन्दावन माधुरी अगाधकौ प्रि.३७५
वृन्दावन वास कौ हुलास प्रि.६१२
वृन्दावन व्रज भूमि जानत प्रि.३५८
वेई दें बताय श्रीकबीर प्रि.५८२
वेई सब सेवा करैं श्याम प्रि.१०९
वेई हरि उर धारि प्रि.३९५
वेगि जल ल्याई देखि प्रि.५७३
वेगि दै उतारि कर प्रि.२२७
वेगि दै बताय दीजै प्रि.२२०
वेगि लैकै आवौ मोकौं प्रि.४८०
वेद न पढावे कोऊ कहैं प्रि.१७९
वेश्या को प्रसंग सुनौ प्रि.२५०
वेसेहि सिंहास्न पै आनि प्रि.२६६
वैरागिन के वृन्द रहत मू.७७
वैसे ही बजाओ बीन प्रि.४९
वैसे ही सरूप कियौ प्रि.५१८
वैसेई सरूप कई गई प्रि.१८८
वोपदेव भागवत लुप्त मू.३०
वोहिथ रामगुपाल कुंवरवर मू.१४६
वोही सुत नारायन प्रि.२४
व्याख्या करि दई नई प्रि.३३५
व्याघ्र सिंघ गुंजै खरा कछु मू.१८३
व्यास सुवन पथ अनुसरैं मू.९०
व्रत को तो नाम यहि प्रि.८३
शंकर शुक सनकादि मू.१५
शंख चक्र आदि छाप प्रि.४८३
शंख चक्र स्वस्तीक मू.६
शक्ति भक्त सौं बोलि दिनहिं मू.६७
शांत दास्य सख्य प्रि.४
शाह कौ सरूप करि प्रि.४३७
शिव आसन कैलास भुजा मू.२००
शिव सहचरी रँग भरी प्रि.४३३
शिवजी की बात प्रि.२०
शिवसंहिता प्रणीत ज्ञान मू.३२
शिषपन साँचो करन कों मू.५८
शिष्यकी तौ योग्यताई प्रि.४००
शिष्यनि सों कह्यो कभूं प्रि.१२४
शील सुशील सुषेन मू.८
शुभदृष्टि वृष्टि मोपर करौ मू.२०
शेषावति नृप के पुरोहित प्रि.५८४
शोक करि आये धाम प्रि.५६८
शोभित तिलक भाल प्रि.८
शौच गये अरि संग मू.७१
शौच जल शेष पाय प्रि.५०९
श्याम दई कर सैन उलटि मू.२६
श्यामजू बिचारि दीनी प्रि.५६
श्यामताई माँझ सों प्रि.३३०
श्यामदास लघुलम्ब अननि मू.१७८
श्यामा जू की सखी नाम मू.१६२
श्रद्धा ई फुलेल प्रि.३
श्रवण परीक्षित सुमति मू.१४
श्रवण वियोग सुनि तनक प्रि.७०
श्रवणरसिक कहूँ सुने न प्रि.९७
श्रीअंग सदा सानिधि रहैं मू.१०१
श्रीअगर सुगुरु परताप तें मू.१६६
श्रीअग्र अनुग्रह तें भये शिष्य मू.१५०
श्रीअनन्तानन्द पद परसिकै मू.३७
श्रीकृष्णदास उपदेश परतत्त्व मू.११६

श्रीगिरिधर जू सरस शील मू.८०
श्रीगुरु शरणै आय भक्ति मारग मू.१७१
श्रीगुसाईं कर्णपूर पाछे प्रि.३६०
श्रीगुसाईं काशीश्वर आगे प्रि.३९८
श्रीगोपालभट्टजू के हिये प्रि.३७५
श्रीगोविन्दचन्द आय निसि प्रि.३६१
श्रीगोविन्दचन्द जू कौ भोर प्रि.५६५
श्रीगोविन्दचन्द रूपरासि प्रि.३८२
श्रीघनश्याम जु पगे प्रभू मू.८०
श्रीजुत खोजी श्याम धाम मू.१८८
श्रीदामोदर तीर्थ राम अर्चन मू.१८१
श्रीधर श्रीभागौत में परम मू.४५
श्रीनारायण प्रगट मनौ लोगनि मू.१८७
श्रीनारायण भट्ट प्रभु परम मू.८८
श्रीनारायण वदन निरंतर मू.२६
श्रीपति नारायन के प्रि.२५
श्रीप्रतापरुद्र गजपति कै प्रि.४०९
श्रीप्रबोधानन्द बड़े रसिक प्रि.६१२
श्रीभट पुनि हरिव्यास सन्त मू.१३७
श्रीभट्ट चरण रज परस तें मू.७७
श्रीभट्ट सुभट प्रगट्यौ अघट मू.७६
श्रीभागवत बखानिकै नीर क्षीर मू.१८४
श्रीभागौत बखानि अमृतमय मू.८२
श्रीमधुगोसाईं आये प्रि.३८०
श्रीमारग उपदेश कृत स्रवण मू.३४
श्रीमुख पूजा सन्त की मू.१०६
श्रीमुरारिदास रहे राजगुरु प्रि.५०३
श्रीमूरति सब वैष्णव (लघु) मू.२०५
श्रीयुत् नृप मनि जगत्सिंह मू.१९३
श्रीरंग के चेत धयौ प्रि.३०५
श्रीरघुनाथ जु महाराज मू.८०
श्रीराधाकृष्ण कुंजकेलि प्रि.६१२
श्रीरामदास रसरीति सौं मू.१९६
श्रीरामानन्द पद पाइ भयौ मू.६१
श्रीरामानन्द रघुनाथ ज्यों मू.३६
श्रीरामानुज उदार सुधानिधि मू.२८
श्रीरामानुज गुरु बंधु विदित मू.३२
श्रीरामानुज पद्धति प्रताप भट्ट मू.१८४
श्रीरूप-सनातन जीव भट्ट मू.१५९
श्रीवल्लभ गुरुदत्त भजन मू.८१
श्रीवृन्दावन वास कुंज क्रीडा मू.१५५
श्रीवृन्दावनचन्द स्याम-स्यामा मू.९५
श्रीसुमेरदेव पिता सूबे प्रि.१२१
श्रीस्वामी चतुरोनगन मगन मू.१४८
श्रीहरिप्रिय श्यामानन्दवर मू.९५
श्रुति स्मृति सम्मत पुरान मू.८६
श्रुतिधर्मा श्रुतिउदधि पराजित मू.३२
श्रुतिप्रज्ञा श्रुतिदेव ऋषभ मू.३२
श्रोता दुख पाय भाखैं प्रि.५२६
श्रोता श्रीभागवत रहसि ज्ञाता मू.१८८
श्वेतदीप में दास जे श्रवण मू.२६
श्वेतदीप वासी सदा रूप प्रि.१०३
षट्दर्शनी अभाव सर्वथा मू.५६
षट्शास्त्रनि अविरुद्ध वेद मू.४५
संग के पठाय दिये रहे प्रि.२०७
संग दै मशाल ताही प्रि.५९९
संग लै हजार शिष्य प्रि.१०८
संग लै हजार शिष्य प्रि.३३७
संग हुते बिप्र सुनि प्रि.२६६
संजय समीक उत्तानपाद मू.१२
संत उर आलवाल प्रि.६
संत कंज पोषन विमल मू.६४
संसार अपार के पार को मू.१२९
संसार सकल व्यापक भई मू.१११
संसार स्वाद सुख बांत मू.८९
संसार स्वाद सुख बांत करि मू.१६०
संसारी धर्महिं छाँडि झूठ मू.१७१
संस्कार सम तत्त्व हंस ज्यौं मू.१४३
सकल समाज मैं यौं प्रि.३७१
सकल सुकुल सम्बलित मू.११०
सक्रकोप सुठि चरित प्रसिध मू.१२४
सखा श्याम मन भावतौ मू.१६२
सखा सखी गोपाल काल लीला मू.१६१
सख्यत्वे पारत्थ समर्पन मू.१४
सगुन मनावैं एक देखिबोई प्रि.१०१
सघन विपिन ब्रह्मकुण्ड प्रि.५८७
सचिव सुवन सों जु प्रि.६६
सज्जन सुहृद् सुशील वचन मू.१३८
सठता सतावै शीत प्रि.१५
सतरूपा त्रयसुता सुनीति मू.१०
सत्य कह्यो तिहिं शक्ति सुदृढ मू.६१
सत्संग महा आनन्द में मू.१२३
सदन आनि सत्कार सदृश मू.११४
सदन बसत निर्वेद सारभुक मू.१६७
सदन माँहि वैराग्य विदेहिन मू.१३६
सदना कसाई ताकी नीकी प्रि.३९४
सदा भगवान् आप भक्त प्रि.५४१
सदा युक्त अनुरक्त भक्त मू.१४८
सदा साधुसेवा अनुराग प्रि.४०५
सदाचार अति चतुर विमल मू.१७४
सदाचार ऊदार नेम हरिदास मू.१६७
सदाचार की सींव विश्व मू.४२
सदाचार गुरु शिष्य त्याग मू.१६८
सदाचार ज्यों सन्त प्राप्त मू.४१
सदाचार मुनिवृत्ति इन्दिरा मू.१४३
सदाचार मुनिवृत्ति भजन मू.१८४
सदाचार श्रुति शास्त्र वचन मू.५९
सदाचार सन्तोष भूत सबको मू.१३३
सदाचार सन्तोष सुहृद् सुठि मू.१४४
सदृश गोपिका प्रेम प्रगट मू.११५
सद्ग्रन्थनि कौ सार सबै मू.९३
सनकादि दियो शाप प्रि.२५
सन्त आज्ञा पाइकै प्रि.२५२
सन्त एक जानिकै जताय प्रि.५२८
सन्त चरणामृत के माट प्रि.३८४
सन्त चरणामृतको ल्यावो प्रि.३८५
सन्त तन छूटेहूँ ते प्रि.६२३
सन्त दृग नये चले प्रि.६०९
सन्त देखि डरे सुख प्रि.२७५
सन्त निरखि मन मुदित उदित मू.१९७
सन्त पति बोले मैं प्रि.३२४
सन्त बधू गर्भ देखि उभै प्रि.१२०
सन्त महन्त अनन्त जन जस मू.१४८
सन्त सत पांचसात संग प्रि.३९३
सन्त सरोरुह खण्ड कों मू.४४
सन्त साखि जानैं कलिकाल प्रि.१९०
सन्त साखि जानैं सबै मू.४९
सन्त सिखण्डी खण्ड ह्रदै मू.१२४
सन्त सुख दैन बैठे प्रि.३६९
सन्त सुख मानि रहि प्रि.२१९
सन्तकौ सरूप धरि लै प्रि.४०८
सन्तदास सद्वृत्ति जगत् छोई मू.१९०
सन्तनि जिंवाय नाना प्रि.५७६
सन्तनि जिंवायवे की निज प्रि.५४८
सन्तनि जिंवावौ भावै प्रि.५७७
सन्तनि समाज में प्रि.४७८
सन्तनि सहाय काज प्रि.१५
सन्तसेय कारज किया तोषत मू.१७८
सन्तोषी सुठि शील असद् मू.१७५
सन्तोषी सुठि शील ह्रदै मू.१८४
सन्देह ग्रन्थि खण्डन निपुन मू.५९
सन्देह ग्रन्थि छेदन समर्थ मू.९३
सपथ दिवाई न प्रि.२५८
सप्तद्वीप में दास जे ते मेरे मू.२४
सब सन्तन निणन्य कियौ मू.३
सब समझावैं तब दण्ड प्रि.३६९
सब सुख साज रघुनाथ प्रि.२७
सबनि सुहाई जाय करी प्रि.५५५
सबभा मधि भूप कही प्रि.५५१
सबरी सों कह्यो तुम प्रि.३३
सबहीं हैं नित्त प्रि.१४
सबै जगत् की फाँसि तरकि मू.१६०
सबै विष भयौ दुख प्रि.५३५
सबै सुमंगल दास दृढ धर्म मू.१५८
सभाही की चाह अवगाह प्रि.२७
समुद्र पान श्रद्धा करै कहँ मू.२०४
सम्प्रदाय शिरोमणि सिन्धुजा मू.३०
सम्प्रदाय सिर छत्र द्वितीय मू.८६
सम्वत् प्रसिद्ध दस सात प्रि.६३३
सय्या भूषन वसन रचित मू.७९
सरद उज्यारी रास रच्यौ प्रि.३७१
सरनागत कौं सिविर दान मू.१७९
सरभ रु गवय गवाच्छ मू.२०
सरल ह्रदै सन्तोष जहाँ मू.८४
सरस उक्ति जुत जुक्ति मू.११०
सरस्वती ध्यान कियौ प्रि.३३५
सरिता कूकस गाँव सलिल मू.१८२
सर्वभूत समदृष्टि गुननि गम्भीर मू.१७१
सर्वभूत सिर नमित सूर मू.४०
सर्वसु महा प्रसाद प्रसिद्ध मू.९०
सर्वसु राधारमन भट्ट गोपाल मू.९४
सर्वसु सिर धरि राखिहौं मू.२०७
सर्वसु सीताराम और कछु मू.८३
सर्वसु हरिजन जानि ह्रदै मू.१९१
सवैया गीत श्लोक बेलि मू.१४०
सस्फुट त्योला शब्द लोहकर मू.१५१
सस्फुट वकता जगत् में मू.८५
सहज सुभाय कोऊ प्रि.३३७
सहजकी रीतिमें प्रतीतसों प्रि.३८२
सहस्र आस्य उपदेश करि मू.३१
सहे अति कष्ट अंग प्रि.२६२
साँच कहि दीजै नहीं प्रि.५२७
साँचो भाव जानि प्रि.२५८
साँवरो कुवर यह कौन प्रि.३२२
सांख्ययोग मति सुदृढ कियो मू.४०
सांगन सुत नैं साद राय मू.१४१
सांचो भक्तिभाव जानि प्रि.२७१
सांवरो किशोर आप पूछे प्रि.३६२
साक विपुल विस्तार प्रसिध मू.२४
साखि शब्द निर्मल कहा मू.१८३
साखी दै गोपाल अब प्रि.२३८
सागर संसार ताको प्रि.१८
सात सौ रुपैया गनि प्रि.४३६
साधन साध्य सत्रह पुरान मू.१७
साधु अपराध जहाँ होत प्रि.५८३
साधु एक गयौ गहि प्रि.३९३
साधुता न तजै कभूँ प्रि.१५८
सान्निध्य सदा हरिदासवर्य मू.८१
साम दाम बहु करैं मू.११३
सारंग छाप ताकी भई मू.७४
सारा सार विवेक परमहंसनि मू.१३३
सारासार विवेक बात तीनौं मू.१२०
सारी रामदास श्रीरंग अवधि मू.३७
सालंग है नाम मामा प्रि.४४३
सावधान सेवा करैं निर्दूषन मू.१५३

साषि देन कौ स्याम खुरदहा मू.५३
सासु समुझावै कछु हाथ प्रि.२०३
साहिब तिसाये जाय प्रि.५९९
सिंह पै खवावौ चाहौ प्रि.६३४
सिलपिल्ले के कहत कुँअरि मू.५०
सिलपिल्ले भक्ता उभै प्रि.१९८
सिष सपूत श्रीरंग को उदित मू.१७५
सीत लगत सकलात मू.७१
सीत सीत प्रति क्यों न प्रि.८२
सीतल परम सुशील वचन मू.१९६
सीता के वियोग प्रि.२०
सीता झाली सुमति सोभा मू.१०४
सीता ही सो रूप प्रि.२१
सीतापति को सुजस वदन मू.१६३
सीतापति कौ सुजस प्रथम मू.१०९
सीतापति पद नित मू.६
सीतापति राधासुवर भजन नेम मू.१७४
सीथ सों विमुख मैं प्रि.३८६
सीधौ लाय कोठे धयौ प्रि.५७७
सीस धरैं हाथ तन प्रि.२८१
सुकुल सुमोखन सुवन अच्युत मू.९२
सुखद चरित्र सब रसिक प्रि.३६४
सुखसागर की छाप राम मू.६४
सुठि सुनन्द पशुपाल निर्मल मू.२१
सुठि सुमिरन प्रहलाद मू.१४
सुत कलत्र धन धाम ताहि मू.१८२
सुत कलत्र सम्मत सबै मू.१०९
सुत की बढनि जोग प्रि.३१५
सुत को दिखाई देत भूत प्रि.११८
सुत दारा धन धाम मोह मू.१८९
सुत नाती पुनि सदृश मू.११२
सुत बधू विधवा सों प्रि.४१५
सुत रघुनाथजूकों स्वप्नमें प्रि.३७८
सुतबध हरिजन देखिकै मू.५१
सुता एक माली की प्रि.१५०
सुता कौ विवाह भयौ प्रि.३७०
सुता ससुरारि भयौ प्रि.४३८
सुता हुतीं दोय भोय प्रि.४४२
सुतासों कहत तुम बैठि प्रि.१४६
सुधा अंग भ्रूभंग गान उपमा मू.१८०
सुधा बोध मुख सुरधुनी मू.१३४
सुधि बुधि मेरी गई प्रि.४१२
सुनत वचन वाके दीन प्रि.५७४
सुनत विकल भई सुनिवे प्रि.५४२
सुनत ही आई देखि प्रि.४३९
सुनत ही तज्यो तन निज प्रि.१२५
सुनत ही नृपबधु निपट प्रि.१५९
सुनत ही पार्षद आये प्रि.२४
सुनत ही माथौ फोरि प्रि.४५०
सुनत ही रानी प्रेम प्रि.२५६
सुनत ही स्वर सुधि प्रि.५१
सुनत हीं आनि करि प्रि.१३७
सुनपथ में भगवान् सबै मू.१०६
सुनि अभिराम नाम धाम प्रि.५११
सुनि आंसू भरि आये प्रि.४२१
सुनि आये गुरुवर कही प्रि.३९०
सुनि उठि गये बधू प्रि.४५७
सुनि एक साधु आयौ प्रि.६२४
सुनि क्रोध गयो मोद प्रि.८९
सुनि चन्द्रहास चलि वेगि प्रि.६७
सुनि जरि बरि गये प्रि.२९६
सुनि जसवन्त जयसिंह प्रि.६२१
सुनि तजि दयो और प्रि.५१७
सुनि भरि आओ हियो प्रि.९१
सुनि लई यहि नेकु प्रि.१८४
सुनि विदा होन गई प्रि.४८०
सुनि संत सभा प्रि.७
सुनि सब चौंकि परे प्रि.७७
सुनि सीखि लियो यों प्रि.१०७
सुनि सुख भयो गयौ प्रि.१९१
सुनि सुख भयौ भारी प्रि.६२२
सुनि सोच परयो हियो प्रि.५३
सुनिकै कटोरा भरि गरल प्रि.४७५
सुनिकै दीवान दुख प्रि.४८१
सुनिकै प्रभाव हरिदासनि प्रि.२२
सुनिकै प्रसन्न भये प्रि.५०
सुनिकै प्रसन्न भये कहे प्रि.५०६
सुनी अचरज भरे नृपन प्रि.२७५
सुनी एक भूप भक्त प्रि.४६५
सुनी गुरु आवत अमावत प्रि.६२७
सुनी गुरुदेव अधिकारी प्रि.६२६
सुनी जगदेव रीति प्रीति प्रि.६०७
सुनी जब बात मानौ प्रि.५०८
सुनी न त्रिपुरदास बोल्यो प्रि.३४३
सुनी यह रीति एक प्रि.१५१
सुने हे अगर प्रि.७
सुनो एक बात सुत प्रि.९१
सुनौ एक और यों प्रि.५३९
सुनौ और परचै जो प्रि.१३९
सुनौ कलिकाल बात और प्रि.२२४
सुनौ चित्तलाई बात दूसरी प्रि.२०८
सुनौ नृपसुता बात भक्ति प्रि.२०१
सुनौ याकी बात मन प्रि.४००
सुनौ हरिचन्द कथा व्यथा प्रि.८६
सुन्दर शील सुभाव मधुर मू.१६७
सुन्दर शील सुभाव सदा मू.१३५
सुन्दर स्वरूप स्याम प्रि.५७०
सुन्यो भागवती को बचन प्रि.७२
सुमिरन साँचो कियो लियो प्रि.९९
सुमिरे सारँगपाणि रूप मू.६६
सुमेरदेव सुत जग विदित मू.४०
सुरगुरु आतातापि पराशर मू.१८
सुरगुरु शुक सनकादि व्यास मू.१३४
सुरथ सुधन्वा जू सों प्रि.८६
सुरथ सुधन्वा शिविर मू.११
सुरधुनी ओघ संसर्ग तैं मू.१०७
सुरसुरानन्द की घरनि कौ मू.६६
सुरसुरी सुवर पुनि उद्गले मू.६५
सूजा के दिवान भगवन्त प्रि.६२६
सूते नर परे जागि बहत्तरि मू.३१
सूधो मन सूधी प्रि.१९
सूर कवित सुनि कौन मू.७३
सूर धीर ऊदार दयापर मू.६९
सूरज कुम्भनदास विमानी मू.९८
सूरज ज्यों जल ग्रहै बहुरि मू.१३५
सूरज पुरुषां पृथू तिपुर मू.३९
सूरदास नाम नैंन कंज प्रि.४९८
सूरधीर ऊदार विनै भलपन मू.१७४
सूरध्वज द्विज निज महल प्रि.५०२
सूरवीर हनुमत् सदृश परम मू.८३
सृष्टि सराहै राम सुव मू.१२१
सेज पधराइ गुरु चरचा प्रि.५५
सेज सलिल ते काढि पहिल मू.४३
सेत मुख भयौ विषैभाव प्रि.४७८
सेवक बुलाय कही कौनकी प्रि.३४२
सेवत चरण सरोज राय मू.३८
सेवत हरि हरिदास द्रवत मू.१०९
सेवरा प्रबल वास केवरा प्रि.१२४
सेवरा हराये वादी आये प्रि.१२५
सेवहु करत डर लाग्यो प्रि.२६३
सेवा अधिकार पायौ प्रि.३९८
सेवा अनुराग अंग अंग प्रि.३८२
सेवा अनुराग और प्रि.५३८
सेवा करि सावधान प्रि.२३
सेवा करि सिद्धि साष्टांग प्रि.६०२
सेवा कै रिझाये याते प्रि.५६४
सेवा प्रभु करौं नेकु प्रि.८८
सेवा मनमोहनजू कूपमें प्रि.३७८
सेवा श्रीविहारीलाल गाई प्रि.६२५
सेवा सहज सनेह सदा आनन्द मू.१८६
सेवा सुमिरण सावधान चरण मू.४१
सेवा सों छुटाय दई प्रि.३६९
सेवासमय विचारिकै चारु मू.२३
सो तौ तैं लै कैद प्रि.५९८
सो धारी सिर शेष शेष मू.२००
सो प्रभु प्यारौ पुत्र ज्यौं मू.२११
सो सर्वसु उर साँच जतन मू.१५९
सोई नित्यानन्द प्रभु महँत प्रि.३२९
सोई बात भई वह बाज्यो प्रि.७५
सोई लै प्रकाश घर घर प्रि.१८७
सोई विसतार सुखसार प्रि.३६६
सोऊ ढिंग आइ रहौं प्रि.१९४
सोझा सींवा अधार धीर मू.९६
सोती शाष्य सन्तनि सभा मू.१६३
सोदर सोभूराम के सुनौं सन्त मू.१९०
सोभू ऊदाराम नाम डंगूर मू.९६
सोभूराम प्रसाद तें कृपादृष्टि मू.१९१
सोम भीम सोमनाथ विको मू.९९
सोमगिरि नाम अभिराम प्रि.१६९
सोयो निशिरोया देखि प्रि.२८२
सोयौ बादशाह निसि प्रि.५९८
सौंह को दिवाय दई प्रि.२८७
सौंही आये लैन हरिजन प्रि.५३४
सौच संग जायबे की प्रि.३२७
स्तन पान कियो जियो प्रि.२६०
स्याम कण्ठमाल टूटि प्रि.४४५
स्याम रंग रँगी पद प्रि.५२३
स्याम रहत सनमुख सदा मू.६३
स्यामसेन के वंश चीधर पीपोर मू.१४९
स्वर्णकार खरगू सुवन भक्त मू.१८०
स्वामी करि ख्यात ताकी प्रि.४१०
स्वामी के जु शिष्य प्रि.५५९
स्वामी चतुर्भुज जू के प्रि.४९३
स्वामी जू सौं नातौ प्रि.१५६
स्वामी रह्यो समाय दास मू.५८
स्वामी हरिदास जू के प्रि.३७७
स्वामी हरिदास रसरास प्रि.३६७
स्वामीजू लिवाय ल्याये प्रि.२९९
हँडिया सराय देखत दुनी मू.१४५
हंस पकरनैं काज बधिक मू.५१
हत्या करि विप्र एक प्रि.५११
हत्या कौं प्रसंग करैं प्रि.२४८
हनुमन्त जामवन्त सुग्रीव मू.९
हनूमान वंश ही प्रि.१२
हमहीं पठावैं काम करि प्रि.३८९
हमहूँ लै सेवा करैं प्रि.५०
हय गय भवन भण्डार विभौ मू.८९
हरभूलाला हरिदास बाहुबल मू.९९
हरि के जे वल्लभ प्रि.२६
हरि के सम्मत जे भगत मू.१०५
हरि को निहारैं उन प्रि.९४
हरि कौ हिय विस्वास नन्द मू.१४४
हरि गुरु दासनि प्रि.९
हरि गुरु हरिदासनि सौं मू.१२०
हरि गुरु हरिबल भाँति मू.१२२

हरि गोविन्द जै-जै गोविन्द	मू.८४	हरिजन को यश गावते	मू.२	हरीदास हरिभक्त भक्ति मन्दिर	मू.१२२	हिये हितरासि जग आस	प्रि.५३०	हूजिये कृपाल वही	प्रि.२८४
हरि नारायण नृपति पद्म	मू.१६९	हरिदास अयोध्या चक्रपानि	मू.९८	हरे हरे पाँव धरै	प्रि.४८	हियें में सरूप सेवा करि	प्रि.१८७	ह्वदै सरसाई जुपै	प्रि.२
हरि पकरायो हाथ बहुरि	मू.४६	हरिदास भलप्पन भजनबल	मू.१३६	हस्तक दीपक उदय मेटि	मू.१४४	हिरण्यकशिपु प्रह्लाद प्रगट	मू.८५	ह्वदै हरिगुन खानि सदा	मू.१६४
हरि पूजा प्रह्लाद धर्मध्वज	मू.११६	हरिदास मिश्र भगवान्	मू.१०३	हस्तामल श्रुति ज्ञान सबहि	मू.१३१	हीरनि खचित रासमंडल	प्रि.४३२	हृषीकेश भगवान् विपुल	मू.९४
हरि वल्लभ सब प्रार्थीं	मू.९	हरिदासन के दास दसा	मू.११८	हाकिम पकरि पूछै कहैं	प्रि.३९७	हुण्डी लिखि दई दाम	प्रि.४३८	हैं कहा कहौं बनाइ बात	मू.५०
हरि विश्वास हिय आनिकै	मू.१८६	हरिनाभ मिश्र दीनदास	मू.१४६	हाट पै उतारि दई	प्रि.२९९	हुण्डी सो हजार की	प्रि.४२८	हैंड़िया सराय मध्य	प्रि.५६१
हरि सुजस प्रचुर कर	मू.१०२	हरिपाल नाम विप्र धाम	प्रि.२३५	हाटक पट हित दान रीझि	मू.१९४	हुती एक बाई कृष्ण	प्रि.१९२	होत हो समाज सदा	प्रि.५०५
हरि सुजस प्रीति हरिदास	मू.२०१	हरिप्रसाद रस स्वाद के	मू.१५	हाथ पै प्रसाद दीनौं	प्रि.५३६	हुती एक बाई ताको	प्रि.१९६	होय करामात तोपै काहे	प्रि.१३४
हरि सुमिरण हरि ध्यान	मू.५७	हरिभक्ति भलाई गुन गम्भीर	मू.१७६	हारे लै बिडारे जाइ	प्रि.२४	हुती घर मांझ बांझ	प्रि.३०१	होयके खिसाए द्विज	प्रि.२८०
हरि हरि नाम अभिराम	प्रि.६८	हरिभक्ति सिन्धु बेला रचे	मू.३७	हित की सचाई यहै	प्रि.६०३	हुती छटी आँगुरी सो	प्रि.६०	ह्वै करि दयाल जा	प्रि.५६०
हरि हरिदासनि टहल कवित	मू.१७२	हरिभजन सींव स्वामी सरस	मू.१८७	हित जू की रीति कोऊ	प्रि.३६४	हुते एक ठौर नृप	प्रि.१५६	ह्वै करि निरास ऋषि	प्रि.४२
हरि ही के रूप गुन	प्रि.५३२	हरिभृत्य बसत जे जे जहाँ	मू.२४	हित ही की बातें	प्रि.५२	हुतो एक भाई बैरी	प्रि.२३१	ह्वै करि निशंक रानी	प्रि.५५०
हरि ही कें आगे नृत्य	प्रि.५६१	हरिराम हठीले भजनबल राणा	मू.८५	हिन्दु तुरक प्रमान रमैनी	मू.६०	हुतो एक भूप राम रूप	प्रि.१९०	ह्वै करि मगन काहू	प्रि.६११
हरिगुण गाय साखी संतन	प्रि.२०७	हरिव्यास तेज हरिभजन बल	मू.७७	हिये आइ लागे सब	प्रि.२००	हुतो एक साह तुलादान	प्रि.१३९	ह्वै कै तदाकार तन	प्रि.३४५
हरिगुन कथा अगाध भाल	मू.६४	हरीदास कपि प्रेम सबै नवधा	मू.१५१	हिये धरि लई भीर	प्रि.३३६	हुतो धन माल कन	प्रि.२६१		
हरिजन को गुण बरनते	मू.२०८	हरीदास बनिक सो काशी	प्रि.५७८	हिये में हुलास निज	प्रि.१३१	हुतो नृप एक ताके	प्रि.५८		
हरिजन को गुण बरनते	मू.२०९	हरीदास भक्तनि हित धनि	मू.१५६	हिये स्वरूपानन्द लाल जस	मू.१८७	हुतो बालमीकि एक	प्रि.७५		

* * * * * * * * *

Ankur Nagpal # +91-9871740762

4/9-10, Vijay Nagar, Double Storey, Delhi - 110009

Email: ankurnagpal108@gmail.com, Facebook: ankur.nagpal.108